# प्रवचन अंजन

प्रवचन अंजन

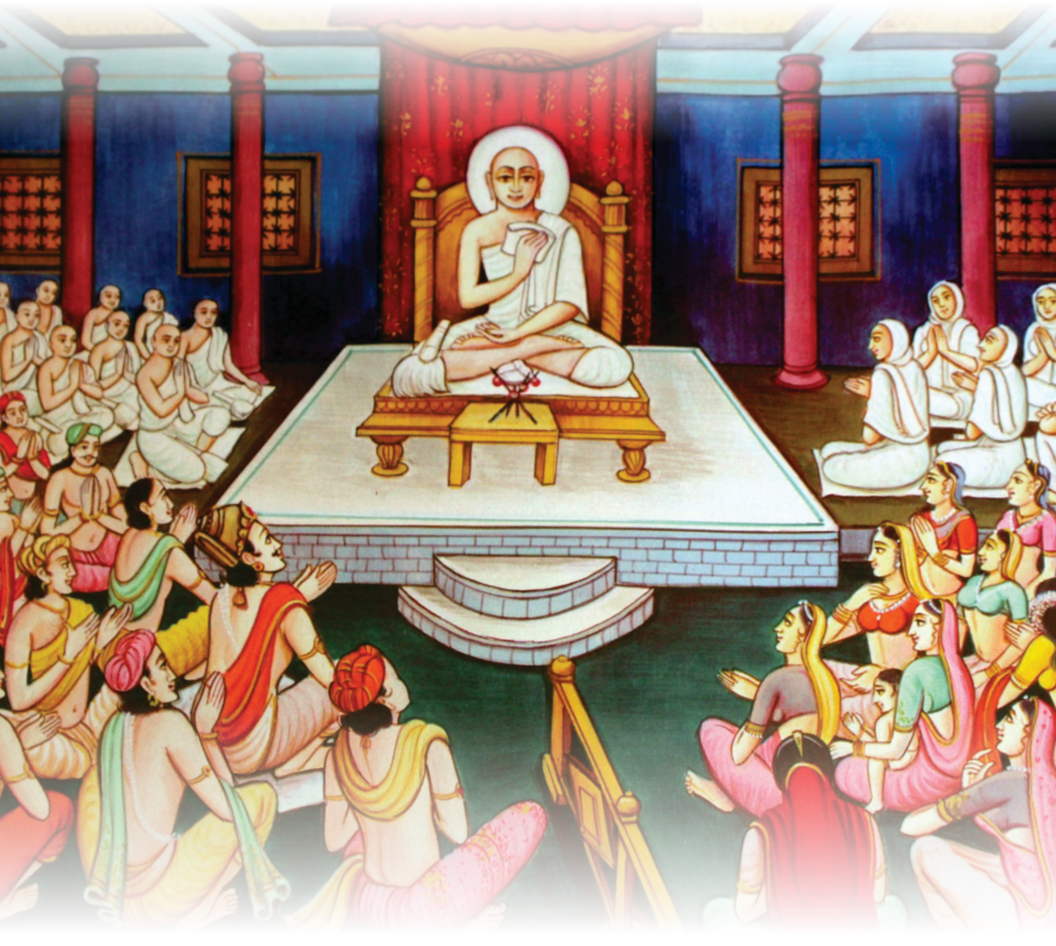

प्रवचन-लेखन
आचार्य विजय पूर्णचन्द्रसूरि

# प्रवचन अंजन पुस्तक प्रकाशन के लाभार्थी

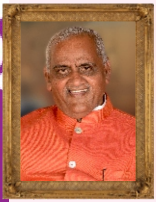

स्व. पालईबेन गेलाभाई वालजी गाला परिवार
गं.स्व. वेलुबेन रवजी गेलाभाई गाला
नीना मुकेश गाला ● श्वेता भावेश गाला
कंचन राजेश छेडा ● लीपीका नीकेश गडा
दीवीज-प्रीशा-काव्य-प्रचय-नमी-श्रेयस-श्रेयसी
गाम - लाकडीया (कच्छ), हाल - माटुंगा, मुंबई

मातुश्री पालईबेन गेलाभाई वालजी गाला
हस्ते : श्रीमती जवेरबेन धनजी गेलाभाई गाला
श्रीमती हेतलबेन राजेश धनजी गाला
धनराज, यशराज, गाला (हिराणी) परिवार
गाम - लाकडीया (कच्छ), हाल - माटुंगा, मुंबई

श्री रविलाल सुंदरजी भूरालाल कुबडीआ
पुत्र : ऋषभभाई पुत्रवधू : वर्षाबेन
पौत्री : प्रीशा कुबडीया परिवार
गाम - लाकडीया (कच्छ), हाल - मलाड, मुंबई
प्रेरणा : मुनिश्री पुनितचन्द्र विजयजी म.सा. (संसारी सुपुत्र)
पू. सा. श्री विशुद्धि प्रियाश्रीजी म.सा. (संसारी सुपुत्री)
पू. सा. श्री विशुद्धि क्रियाश्रीजी म.सा. (संसारी सुपुत्री)
पू. सा. श्री विशुद्धि कलाश्रीजी म.सा. (संसारी सुश्राविका)

मातुश्री मोंघीबेन नानजी रीटा,
श्रीमती भारतीबेन नरशी रीटा
गाम - लाकडीया

एक सद्‌गृहस्थ - दिल्ली

॥ श्री सिद्धाचल महातीर्थाधिपति आदिनाथाय नमः ॥

॥ ॐ ह्रीं अर्हं श्री शंखेश्वरा पार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्री गौतमस्वामीने नमः ॥

श्री पद्म-जीत-हीर-कनक-देवेन्द्र-कंचन-कलापूर्ण-कलाप्रभसूरि सद्‌गुरुभ्यो नमः

# प्रवचन अंजन

( समेतशिखर तीर्थ में दिये गये चातुर्मासिक प्रवचनो का आलेखन )

❀ दिव्य आशीर्वाद ❀

अध्यात्मयोगी

प. पू. आ. श्रीकलापूर्णसूरीश्वरजी म. सा.

❀ शुभ आशिष ❀

कच्छ वागड समुदाय गच्छनायक

प. पू. आ. श्री कलाप्रभसूरीश्वरजी म. सा.

❀ प्रवचन-लेखन ❀

प. पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

**पुस्तक : प्रवचन अंजन**

**प्रवचनकार एवं लेखक**
पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजयकलापूर्णसूरीश्वरजी म. सा.ना शिष्य
**पू. आचार्य श्रीपूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा.**

**प्रत : 2000** **मूल्य : 50** **आवृत्ति :** प्रथम

**प्रकाशन :** वि.सं. **2075**, इ.स. **: 2019**

**आलंबन**
समेतशिखर तीर्थे पू. आ. श्री पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. आदि साधु-साध्वी वृन्द की निश्रा में वि.सं. २०७२, इ.स. २०१६के सामूहिक ७०० आराधको के चातुर्मास की अनुमोदना निमित्ते

**प्राप्तिस्थान**
रविभाई कुबडीआ
रजवाडी वेर, **112,** मलाड शोपिंग सेन्टर,
**S.V.** रोड, मलाड (वेस्ट) , मुंबइ-**400064**
**Mo. 98701 29180, 98214 08909**

सुरेशभाई के. शाह
कान्तिलाल लहेरचंद एन्ड सन्स
**20/A,** मार्केट यार्ड, ऊंझा, (उ.गु.)
**Mo. 9898202208**

महावीर उपकरण भंडार तथा शंखेश्वर उपकरण भंडार
सुभाष चोक, गोपीपुरा, सुरत

**प्रकाशक**
पूराबेन जेन धर्मशाळा, श्री जिनशासन सेवा केन्द्र,
कलापूर्ण स्मृति मंदिर के पास, शंखेश्वर तीर्थ, जि. पाटण, गुजरात.

**डीझाइन**
वीतराग ग्राफिक्स, अहमदाबाद. **Mo. 8980007872**

**बादल के रंगो से इन्द्रधनुष का सर्जन होता है,**
**गुरु के संग से धर्मधनुष का सर्जन होता है,**

***मेघराज पानी बरसाते है... गुरुराज वाणी बरसाते है...***

२० तीर्थंकर भगवंतो की निर्वाणस्थली समेतशिखर तीर्थ में

**( वि.सं. २०७२, इ.स. २०१६ )**

हुए भव्यातिभव्य चातुर्मास

विविध अनुष्ठानों के अद्भूत आयोजन सह ७०० आराधकों की समुह आराधना की अंतर से बार बार अनुमोदना

**चातुर्मास पावन सान्निध्य-साम्राज्य**

प्रभावक प्रवचनकार, सूरिमंत्र समाराधक, सुप्रसन्नमूर्ति, विद्वद्वर्य

**प. पू. आ. श्री पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा**

**प्रवचनकार**

**प. पू. मुनिश्री पूर्णरक्षित विजयजी म.सा.**

प. पू. मुनिश्री मुक्तिनिलय विजयजी म.सा.

प. पू. मुनिश्री प्रशमलब्धि विजयजी म.सा.

प. पू. मुनिश्री प्रियदर्शन विजयजी म.सा.

प. पू. मुनिश्री पावनमन्त्र विजयजी म.सा.

प. पू. मुनिश्री पुनितचंद्र विजयजी म.सा.

एवं

प. पू. मुनिश्री जयदर्शन विजयजी म.सा. ''नेमिप्रेमी''

**श्रमणीवृंद**

पू. सा. श्री दीप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.

पू. सा. श्री अर्हंदर्शनाश्रीजी म.सा.

पू. सा. श्री देवेन्द्रयशाश्रीजी म.सा.

पू. सा. श्री दिव्यांजनाश्रीजी म.सा.

पू. सा. श्री अर्हंप्रियाश्रीजी म.सा.

पू. सा. श्री इन्द्रवंदिताश्रीजी म.सा.

पू. सा. श्री इन्द्रनिधिश्रीजी म.सा.

एवं अन्य समुदायगत साध्वीवृंद का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ था।

## अनुक्रमणिका


| क्रम | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. | आमुख | ५ |
| २. | पू. आचार्यदेव श्री पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा की गुण गरिमा संक्षिप्त जीवनधारा | ६ |
| ३. | समेतशिखरजी में हुए भव्य चातुर्मास के प्रतिभाव | ९ |
| ४. | मानवीय जीवन को नंदनवन समान बनाये और सम्यग्दृष्टि का पदार्पण करें | १२ |
| ५. | आत्मा का **X-Ray** | १७ |
| ६. | आत्मा की **Medicines =** औषधि | ४२ |
| ७. | आत्मा का **Precautions =** सावधानी | ६४ |
| ८. | आत्मा की **Health =** स्वास्थ्य | १०६ |
| ९. | आत्मा के **Ornaments =** आभूषण | १३१ |


**सुरत कतारगाम चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे**

# प्रवचन अंजन

**पुस्तक का विमोचन**

**पावन निश्रा**

**प्रवचन प्रभावक प.पू.आ.श्री पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**

**प्रशान्तमूर्ति प.पू.आ.श्री कीर्तिरत्नसूरीश्वरजी म.सा.**

**सूरिमंत्र समाराधक प.पू.आ.श्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**

**आदि साधु वृंद-१५**

**प.पू.सा.श्री भव्यदर्शिताश्रीजी म.सा. आदि-६ एवं**

**प.पू.सा.श्री विशुद्धिप्रियाश्रीजी म.सा. आदि-३**

**शुभदिन :-**
11-07-2019
अषाढ सुद-10,
गुरुवार
वि.सं.2075,

**-:चातुर्मास स्थल**
श्री आदिनाथ तपा. श्वे. मू.पू. जैन संघ
नीतिसूरि आराधना भवन
डोली कोम्प्लेक्ष के सामने, कतारगाम,
सुरत-395004 (गुजरात) संपर्क : 9821408911

# आमुख

वीतराग परमात्मा की वीरवाणी का श्रवण करने से अनंत कर्म नष्ट होते है, उसी प्रकार वीरवाणी का वांचन-मनन करने से भी कर्म क्षय की प्रक्रिया शुरु हो जाती है।

तीर्थंकर परमात्मा प्ररुपित वाणी अनेक शब्दों के द्वारा बहते हुए जन जन का मन का स्पर्श करती है और यह भाविक आत्मा धर्मकरणी और आगमवाणी रसपान के माध्यम से प्रभुभक्ति में तल्लीन बनता है।

परमपूज्य अध्यात्मयोगी आचार्य भगवंत श्री **कलापूर्णसूरीश्वरजी** महाराजा के शिष्य आचार्य श्री **पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी** महाराजा उत्तम कोटी के प्रभावक प्रवचनकार है। परमात्मा की पावन वाणी को उन्होंने शब्दालंकार से सजाकर प्रभु संदेश अनेक लोगों तक पहुँचाने का भगीरथ कार्य अनेक पुस्तको के चिंतनीय-मननीय आलेखन द्वारा किया है।

पूज्यश्री द्वारा लेखित-संपादित पुस्तको की श्रृंखला में एक पुष्प "**प्रवचन अंजन**" सम्मिलित होने जा रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक में पूज्यश्री ने प्रवचन स्वरुप अनेक चिंतनीय मननीय लेखों का आलेखन किया है, जिनके वांचन से जीवन में सद्‌गुणों का प्रागट्य होगा और जीवन नंदनवन के समान सुवासित हो कर महान बनने की राह पर चलेगा और साथ ही परमात्मा के प्रति अहोभाव में अभिवृद्धि अवश्य होगी।

पुस्तक प्रकाशन में तन-मन-धन से लाभ ग्रहण करनेवाले दाताश्री लाकडीया निवासी हाल मुंबई - गं.स्व. वेलुबेन रवजी गेलाभाई गाला, श्रीमती जवेरबेन धनजी गेलाभाई गाला, श्री रविलाल सुंदरजी भूरालाल कुबडीया, मातुश्री मोंघीबेन नानजी रीटा तथा एक सद्‌गृहस्थ - दिल्ली और पुस्तक को उत्तम प्रकार से प्रीन्ट करनेवाले वीतराग ग्राफिक्स - अहमदाबाद एवं अन्य नामी-अनामी सहयोगीओं का आभार।

प्रातः स्मरणीय, शासन प्रभावक, करुणामूर्ति और अत्यंत सरल स्वभावी गुरुदेव श्री प.पू.आ.भ. श्री पूर्णचंद्रसूरीश्वरजी और अन्य गुरु भगवंतो के साथ समेतशिखरजी मध्ये चातुर्मास के दौरान उनकी पावन प्रेरणा और आशीर्वचन से उनके ही सत्संग के माध्यम से उनके प्रवचनों की यह "**प्रवचन अंजन**" नामक पुस्तक प्रकाशित करते हुए हम अत्यंत पुण्य, आनंद व उत्साह का अनुभव कर रहे है।

**- प्रकाशक**

# पू. आचार्यदेव श्री पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा की गुण गरिमा

## ***संक्षिप्त जीवनधारा***

धर्मभूमि भारत में अनेक धर्मदर्शन के मध्य जैन शासन के रत्नाकर में चारित्र और पावित्र्य के प्रतीक स्वरुप अनेक संयमरत्न रत्नदीपक बनकर प्रकाश फैला रहे है।

कच्छ की भूमि में भूज नगर में विक्रम सं. २०१६ आषाढ सुद-७ इ.स. १९६०, १ जुलाई के दिन धर्मनिष्ठ श्रावक जगजीवन माणेकचंद वसा के गृह धर्मपरायण चंदनबहन की कुक्षी से पुत्र रत्न का जन्म हुआ। पुत्र का नाम प्रकाशकुमार रखा गया। धार्मिक ज्ञान और व्यावहारिक अभ्यास करते हुए बाल्यकाल से ही बालक को अध्ययन का उत्तम लाभ प्राप्त हुआ। पूज्यश्री की प्रतिभा का दर्शन अलौकीक ही रहा।

पूर्व जन्म के कोई प्रबल संस्कार की वजह से बालक को छोटी उम्र से ही दीक्षा के भाव दृढ बनते गये। संयमजीवन की उच्चतम साधना हेतु मन सदा उत्सुक रहता। साथ ही धर्मनिष्ठ माता चंदनबहन की प्रेरणा भी सतत प्राप्त हो रही थी। प्रकाशकुमार की दो मौसी, उनका परीवार और चाचा की बेटी ने भी दीक्षा ग्रहण की है।

सं. २०२६ में उत्तर गुजरात के पाटण नगर में ९ वर्ष के सुकोमल बालक प्रकाशकुमारको उनके मातापिताने पू. गुरुदेव श्री पन्यास कलापूर्णविजयजी म.सा. के चरणों में वोहराने स्वरुप भाव से समर्पित किया था। दो वर्ष मुमुक्षु अवस्था में बीताकर छोटी उम्र में ही हजारो गाथा कंठस्थ करने लगे। गुरुदेव के साथ विहार में भी रहते हुए बालक प्रकाशकुमार का जीवन धन्य बनने लगा।

११ वर्ष की बाल्यावस्था में ही ११ सामुहीक दीक्षा में प्रकाशकुमार की दीक्षा वि.सं. २०२८ में माघ सुद-१४ के दिन भूज नगर में शासन प्रभावना से संपन्न हुई। नूतन मुनि का नाम मुनिश्री पूर्णचन्द्रविजयजी घोषित हुआ। दीक्षा और बडी दीक्षा आ. विजय देवेन्द्रसूरिजी व पंन्यास श्री कलापूर्णविजयजी के द्वारा हुई। वि.सं. २०५६, माघ सुद-६ के दिन गणीपदवी वांकी तीर्थ में पू. आ. भ. श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में हुई। पंन्यास पदवी वि. सं. २०५९, वैशाख सुद ७ के दिन महाराष्ट्र के शाहपुर भुवनभानु मानसमंदिर में विशाल अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव के

साथ श्रमण सार्थाधिपति गीतार्थ मूर्धन्य प. पू. आ. श्री जयघोषसूरीश्वरजी महाराजा और कच्छ वागड समुदायनायक आ. श्री कलाप्रभसूरीश्वरजी महाराजा आदि की शुभनिश्रा में हुई । कच्छ वागड के मनोहर कटारीया तीर्थ में आचार्य श्री कलाप्रभसूरीश्वरजी महाराजा के पवित्र करकमलो से वि.सं. २०६८, कार्तिक वद-१२ के शुभ दिन छः आचार्य पदवी के साथ उनकी भी आचार्य पदवी हुई ।

पूज्यश्री के जीवन पर नजर करने से एक बात स्पष्ट दृश्यमान होती है कि पूज्यश्री जमाने की दूषित हवा से अत्यंत अलिप्त रहे है । सच्चे साधु जीवन के तमाम गुण पूज्यश्री में पाये जाते है । जिनशासन को ज्वलंत रखने हेतु निस्पृही संत ही ज्यादा कार्यशील रह पाये है ।

गुरुदेव पू. आ. श्री कलापूर्णसूरिजी की निश्रा में रहकर धार्मिक अभ्यास, तत्त्वचिंतन, अनुप्रेक्षा, साहित्य सर्जन आदि क्षेत्र में और तप, त्याग व विविध अनुष्ठान में आगे बढते रहे ।

विहारयात्रा भी कच्छ, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, तामिलनाडु, कर्णाटक, छत्तीसगढ, ओरिस्सा, बिहार, झारखंड, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली आदि प्रदेशो में विचरण करते हुए विविध चातुर्मास में उत्तम प्रवचनमाला और शासन प्रभावना के कार्य में सतत वृद्धि करते रहे ।

प्रसन्न और मधुर व्यक्तित्व की वजह से सर्वप्रीतिपात्र बने । बाल्य और किशोर वय में ही आपने ३५ हजार गाथा कंठस्थ की, वहीं संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी आदि भाषाओं पर आपश्री का वर्चस्व रहा । व्याकरण, काव्य, कोश, न्याय और आगमिक ग्रंथों का उत्तम अभ्यास, वांचन और अनेक पुस्तको का लेखन, संपादन किया । विशेष प्रभु भक्ति और परोपकारी कार्यो की रुचि होने से गुरु भगवंतो के साथ रहकर सातों क्षेत्र में सतत प्रेरणा प्रदान करते रहे । अनेक प्रतिष्ठा, महोत्सव, छःरी पालित संघ, धर्मप्रभावक कार्यो में सतत निमित्त बने है ।

अद्भूत श्रुतभक्ति और प्रभावसंपन्न चिंतनपूर्ण लेखनकला से अनेक आत्माओं के मन में उत्तम स्थान बनाया है । अनेको को धर्म मार्ग में जोडा है । पूज्यश्री में गुणानुराग का विशिष्ट गुण पाया जाता है । अत्यंत नम्र, उदार और सुप्रसन्न व्यक्तित्व, शांत स्वभाव आदि सद्गुणों से विभूषित पूज्य आचार्य

पूर्णचंद्रसूरीश्वरजी महाराजा परोपकार की श्रेणी में सदा आगे रहे है।

पूज्यश्री ने १५ चातुर्मास पू. गुरुदेव आ.भ. श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी के साथ किये, करीब २५ चातुर्मास स्वतंत्र रहकर प्रवचन आदि जिम्मेदारीयों को उत्तम प्रकार से वहन करते हुए किये। प्रतिष्ठा, उपधान, छःरी पालित संघ आदि अनुष्ठानों में पूज्यश्री की निश्रा से उत्तम शासन प्रभावना हुई। शंखेश्वर, समेतशिखर तीर्थ, सिद्धाचल तीर्थ आदि चातुर्मास में विराट आयोजन और विविध शासनप्रभावना हेतु पूज्यश्री का मार्गदर्शन सतत सर्वजनों को प्राप्त हुआ है।

पूज्यश्री के पाँच शिष्यरत्न है। पू. मुनिश्री पूर्णरक्षित विजयजी म.सा., पू. मुनिश्री प्रशमलब्धि विजयजी म.सा., पू. मुनिश्री प्रियदर्शन विजयजी म.सा., पू. मुनिश्री पावनमन्त्र विजयजी म.सा., पू. मुनिश्री पुनितचंद्र विजयजी म.सा. एवं तीन मुनिश्री साथ में आराधना करते हैं।

पूज्यश्री को पुस्तक प्रकाशन में विशेष रुचि होने से उनके द्वारा लिखित-संपादित प्रेरणादायी करीब ४० पुस्तक प्रकाशित हो चुके है। ४६ वर्ष से ज्यादा पूज्यश्री का दीक्षापर्याय है। चतुर्विध संघ में पूज्यश्री का विशेष मार्गदर्शन-प्रेरणा-मदद ली जाती है।

पूज्य आचार्य श्री पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. सूरिमंत्र समाराधक है। जिन्होंने पिछले तीन चातुर्मास के दौरान प्रथम पिठीका नागपुर-वर्धमाननगर चातुर्मास में २१ दिन तक की और समेतशिखर तीर्थ चातुर्मास में पर्युषण के पश्चात् दूसरी पिठीका १४ दिन, तीसरी पिठीका २५ दिन और चौथी पिठीका ८ दिन - कुल ४७ दिन तक निरंतर पिठीका साधना की। पाँचवी पिठीका दिल्ली चातुर्मास में १६ दिन तक की। इस प्रकार कुल ८४ दिन की संपूर्ण मौनपूर्वक एकांतवास में विशिष्ट जप-ध्यान और तपश्चर्यापूर्वक साधना की है।

अनेक गुणगण से अलंकृत शोभायमान पूज्यश्री के चरणो में भावसभर वंदन हो!

**22-06-2019**
**शनिवार**
**अहमदाबाद**

**लि.**
**शाह राजेश तातेड**
**जैन विधिकार एवं एन्कर**

# *समेतशिखरजी में हुए भव्य चातुर्मास के प्रतिभाव*

**– सुरेशभाई के. शाह ( उंझा ), ट्रस्टी श्री – उंझा जैन महाजन**

जीवन किताब की पाटी बिलकुल कोरी थी और नागपुर से हमारे समधि ''शर्मिष्ठाबहन नटवरलाल मेहता परिवार'' का संदेश आया कि मुख्य आयोजक के स्वरुप में गुरुदेव ने लाभ प्रदान किया है। भव्य चातुर्मास का आयोजन हो रहा है अतः आपश्री आराधना करने अवश्य पधारें। इस सुवर्ण अवसर को नहीं छोडना चाहिये यह सोचकर ''समेतशिखर चातुर्मास'' में हमने धर्मपत्नी के साथ आराधना करने जाना है यह निश्चय किया।

पत्रिका में **समता साधक, ३५००० गाथा कंठस्थकारी, सुमधुर प्रवचनकार परम पूज्य आचार्यदेव श्री पूर्णचंद्रसूरीश्वरजी महाराजा और पू. मुनि श्री पूर्णरक्षितविजयजी म.सा.** आदि साधु-साध्वी वृंद की निश्रा है, यह पढते ही वाइब्रेशन की शुरुआत हो गई। निर्णय अटल था अतः समेतशिखरजी की ओर प्रयाण किया। वहाँ पहुँचते ही देखा कि आराधकों की भारी भीड थी। भव्य चातुर्मास की भव्य तैयारीयाँ हो चुकी थी। चातुर्मासिक समिति भी अपना कार्य करने लगी थी। गुरु महाराजश्री आदि ठाणां का भव्यातिभव्य प्रवेश हुआ। परम पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा ४०० आराधकों की तैयारी और उस प्रकार ही आयोजन, अतः **गुरुदेव आचार्य श्री पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा** का नाम समग्र कच्छ प्रदेश, मुंबई, सुरत, अहमदाबाद, मद्रास में गुँज रहा था। गुरुदेव का नाम सुनकर ही उनके विश्वास-भरोसे की मजबूताई से ७०० आराधक आ पहुँचे। आराधक नाच उठे, झूम उठे। सभी आराधकों का ''भव्य चातुर्मास'' में जुडने का दृढ निर्धार था। परम पूज्य गुरुदेवश्री की आज्ञा, आदेश को सरआँखो पर चढाने की आतुरता देखी। पूज्य गुरुदेवश्री ने आयोजको को तमाम आराधको हेतु व्यवस्था करने का आदेश दिया और देखते ही देखते दूध में शक्कर मिल जाती है इस प्रकार तमाम आराधको हेतु व्यवस्था हो भी गई। तमाम आराधको के मुख पर परम संतोष का अनुभव देखकर वंदन करने का मन हो जाये वह अद्भूत माहौल बन गया।

आराधको के साथ भव्य चातुर्मास की शुरुआत हुई तब से पूर्णाहुति तक तमाम आराधको का उत्साह, आनंद और गुणवैभव को अंतरमन से वंदन

करते है और इस कार्य के लिये प्रेरक गुरुदेव रहे अतः उनके भी हम ऋणी है।

परम पूज्य गुरुदेवश्री ने एक मिनिट का समय ना मिलने पर भी आराधक सतत अनहद आनंद और प्रफुल्लित मन के साथ आराधना का आस्वादन करते रहे इसलिए प्रातः ४.०० बजे से रात्रि के १०.०० बजे तक अविरत धारा की भाँति कार्यक्रमो की धारा जारी रखी। गुरुदेवश्री की आश यही थी कि चातुर्मास के लिये आये हो तो...

**ख्वाहिश ऐसी करो की आसमान को छु सको**
**धर्म ऐसा करो की भगवान को पा सको**
**यु तो जीने के लिये पल कम है**
**लेकीन ऐसा ''चातुर्मास'' करो की हरपल जिंदगी पा सको**

पूज्य गुरुदेवश्री की निश्रा में चातुर्मास के दौरान उनके भक्तवर्ग में रही सुषुप्त शक्तिओं को बाहर निकालकर प्रतिभावान व्यक्तिओं द्वारा सुदृढ वहीवट व्यवस्था शक्ति में उत्तम निखार प्रगट हुआ। आराधकों की शक्तिओं को बाहर ला कर तपश्चर्या की निरंतर धारा, आराधकों का हकारात्मक अभिगम धैर्य की बदौलत भव्य चातुर्मास ओजस्वी बना। सतत गुरुदेव की सक्रियता, रस, कर्मठता और निष्ठा पर सफलता अवलंबित थी। प.पू. गुरुदेव के शिष्य आदि सर्वे ठाणां की निश्रा का सुपरपावर जनरेटर कार्य पर लगने से उर्जा हाउस ''चातुर्मास'' की आकाशगंगा जाज्वल्यमान हो गई।

गुरुदेवश्री के वचन को ग्रहण करने हेतु आराधक सतत तत्पर रहते थे। बात चाहे तपश्चर्या की हो, दान की, आराधना की, प्रतिमा बनाने की, पूजन पढाने की, रत्नकुक्षी माता-पिता के बहुमान की, श्रावक के बारह व्रत की या फिर पुद्गल वोसिराने की, तमाम आराधना में आराधको ने संपत्ति का भंडार भर जाये इस प्रकार लाभ लिया।

जिनशासन कितना महान है ! आत्मखोज की अविरतयात्रा करनेवाले संयमधर्मी **प.पू. आचार्यदेव श्री पूर्णचंद्रसूरिजी** महाराजा एवं मुनिराज श्रीपूर्णरक्षित विजयजी म.सा. आदि की निश्रा का यह चातुर्मास आराधको के अंतरचक्षु खुल जाये, दुनिया छोटी लगे, गुणप्राप्ति की कामना बढ जाये इस प्रकार अलौकीक रहा।

सेवा-समर्पण के माहौल में गुणवान और शीलवान पुण्यात्माओं की भक्ति या अनुमोदना अतिदुर्लभ है। पुण्यात्माओं की भक्ति और सम्यक्स्वरुप हमारे जीवन को तेजोमय बनाती है परंतु चातुर्मास में भावनाभक्ति, रसोईभक्ति आदि के साथ समेतशिखरजी यात्रा में आनेवाले यात्रिको के लिये भी प्रेरक भक्ति थी।

चातुर्मास विशिष्ट है। इस भगीरथ कार्य के लिये तन-मन-धन से जिन्होंने सेवा की उन सभी को मेरे वंदन। शुरुआत से अंत तक जैन ओजस्वी दीपकसम "**श्री कनकभाई कुबडीया**" जिन्होंने आराधना में जुडकर आराधक भावों से चातुर्मास में चार चाँद लगा दिये, जिनकी मीठी मधुरी वाणी के साथ सर्वजनों को प्रेरणा देनेवाले आदेश, कार्यपद्धति तारीफ के काबिल है।

परम पूज्य गुरुदेव की निश्रा में मैत्रीभाव की लहर के समान, खुल्ले हृदय से, धर्म की प्रेरणा, तपश्चर्या की आराधना, तमाम बातों में आफत को अवसर में और उत्तम क्षण को धर्म के अवसर में उपयोग करने की उष्मा प्राप्त होती है। गुरुदेव ने पुण्योपार्जन हो इस प्रकार आराधको को आराधना में जोड दिया।

चातुर्मास के अतित में देखकर अनराधार आनंद की प्राप्ति करते रहना तो मनपसंद साधना है। ७०० आराधकों के साथ "भव्य चातुर्मास" झारखंड की भूमि में "२० तीर्थंकरो की निर्वाणस्थली समेतशिखरजी" में करना कठीन है। परंतु गुरुदेव **आचार्य श्री पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा** आदि ठाणा की शक्तियों का पूर्ण परिचय हुआ। सतत स्मरण में रहने लायक चातुर्मास को सिद्ध करने हेतु पूज्यश्री का जीवन-कवन भी हमारे लिये उपयोगी और उपकारी बना। पू. गुरुदेव के **प्रवचन अंजन** पुस्तक के माध्यम से समेतशिखर चातुर्मास की जिनवाणी का प्रचार-प्रसार हो और स्व-पर का कल्याण हो यही मेरी कल्याणकामना...

# *प्रवचन अंजन*

## मानवीय जीवन को नंदनवन समान बनाये और सम्यग्दृष्टि का पदार्पण करें

वर्तमानकालीन विलासी और उपभोक्तावाद के विषम काल के माहौल में धार्मिक शुभ संस्कारों की आवश्यकता अधिक है । संसार के अनेक प्रलोभन या भौतिक आकर्षण और आधुनिक व्यापक विकृतिओं में मनुष्य लालायित होता जा रहा है, डुबता जा रहा है । इस दौर में शुभ संस्कारों का अनुकरण कम हो जाता है और मानवजीवन में गलत आदतें, दुर्व्यसन, रागादि भाव एवं आसूरी भावनाओं का वर्चस्व बढ जाता है । जिसके द्वारा हो रहे निरंतर आंतरिक आक्रमण में धार्मिकचेतना, दिव्यचेतना, मानवीयचेतना और संस्कारचेतना के स्पंदन हत-प्रहत होते है ।

आर्यपुरुषो ने कहा है कि मानवीय जीवन उत्क्रांति हेतु है...अपक्रांति हेतु नहीं, आराधना के लिए है...विराधना हेतु नहीं, दिव्यता के लिए है...पशुता हेतु नहीं, आसूरी ताकत बढाने हेतु नहीं अपितु सात्विक बल बढाने हेतु है, अस्ताचल की तरफ नहीं बल्कि उदयाचल की तरफ गतिमान होने हेतु है और कुसंस्कार, कुकार्य हेतु नहीं बल्कि सुसंस्कार, सत्कार्य हेतु है ! असार संसार में यही तो सार है, रहस्य है, परमार्थ है, नवनीत है और सफलता है... जैसे कि

**सोनेरी आ जीवननी कींमत घडीपल जाय छे,**<br>
**दिन उगीने आथमे, आयुष्य घटतुं जाय छे,**<br>
**जे जे दिसे छे जगतमां, क्षणमां बधुंये क्षय थशे,**<br>
**आंखो मींचाता आखरे, बधुं माटी मांही जशे ।**

**चतुर नर चेतजे बाजी हजी छे हाथ मां,**<br>
**पुण्य केरा पुंज रुप भाथुं ग्रही ले साथमां,**<br>
**असार आ संसारमां रमता बधाए स्वार्थमां,**<br>
**आ दिव्य जीवन मेळवी तुं गाळजे परमार्थमां ।**

**कर्तव्यना स्वीकारमां, भीति कदी करवी नहीं,**<br>
**पापी तथा सहवासमां नीति कदी तजवी नहीं,**<br>
**निंदा करे खोटा जनो, तेथी कदी डरवुं नहीं,**<br>
**धारेल सत्य विचारथी पाछा कदी फरवुं नहीं ।**

यह है सात्विक मनुष्य की संस्कारधारा से युक्त चिंतनशीलता... अनित्य संसार की अनुप्रेक्षा... स्वार्थ त्याग और परमार्थ आसेवन की भावना, असार से सारग्रहण की वृत्ति और सात्विकता, जवांमर्दी और खुमारी की ज्वलंत मनोमय स्थिति..

मानव चाहे तो इस जीवन से बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है, अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकता है किन्तु यहाँ सफलता के बदले निष्फलता प्राप्त हुई तो काफी कुछ गँवाना भी पडता है और भारी नुकसान भी झेलना पडता है।

कहा है कि –

**जीवता जो आवडे तो जाहोजलाली जिंदगी**
**जीवता जो ना आवडे तो पायमाली जिंदगी**
**आवडे तो शोध एमांथी तने मळशे घणुं...**
**छे घणा जन्मोथी आ तो गोठवी छे जिंदगी...**

जिन्होंने जिंदगी का गहन अभ्यास किया है और जीवन को जिन्होंने सहजता से स्वीकारा है उनके जीवन में विसंवादिता नहीं बल्कि संवादिता है, एकांतवाद (आग्रहवाद) नहीं बल्कि अनेकांतवाद है, संघर्ष नहीं बल्कि समाधान है, क्रूरता और कठोरता नहीं बल्कि करुणा व कोमलता है। अतः उनका जीवन लोकोत्तर मंगलमय बन जाता है। वह आत्मा स्वयं पर कठोर होने के बावजूद अन्यों के लिए कोमल होते है। उनकी प्रसन्न कृपापूर्ण दृष्टि, पीयूषवर्षिणी वाणी, आध्यात्मिकता की प्रकर्षता अत्यंत चित्ताकर्षक और प्रसन्नताप्रदायक बन जाती है।

कहा है कि –

**वज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि।**
**लोकोत्तराणां चेतांसि, को नु विज्ञातुमर्हति॥**

लोकोत्तर महापुरुषो के चित्त वज्र से भी कठोर और कुसुम से भी कोमल होते है जिसको जानने हेतु कौन समर्थ बन सकता है? ज्ञानसार में भी कहा है कि –

**यस्य दृष्टिः कृपावृष्टिः, गिरः शमसुधाकिरः।**
**तस्मै नमः शुभज्ञानध्यानमग्नाय योगिने॥**

जिनकी दृष्टि कृपा की वृष्टि है, जिनकी वाणी समता स्वरुप अमृत की वर्षा करती है, वह पवित्र ज्ञान और ध्यान में निमग्न बने हुए योगी पुरुष को मेरे नमस्कार हो...!!

हमें भी हमारा जीवन इस प्रकार उच्च मंगलमय और प्रशस्त बनाने हेतु प्राप्त हुआ है। शुभ का सर्जन और अशुभ का विसर्जन हो इस हेतु जीवन प्राप्त हुआ है। जीवनामृत का आस्वादन करने हेतु श्रेष्ठ अवसर प्राप्त हुआ है।

**जिंदगी अमृत है मेरे राजा**
**इसे ढोलो कम, पीओ ज्यादा...**

जीवन प्रशिक्षण है, ट्रेनिंग है, कला है, अभ्यास है, मंथन है, जिसके द्वारा शुभाचरण की प्रगति और अनुभूति होती है।

**Life is a great School for the development of Character.**

जीवन चारित्र विकास हेतु विशाल पाठशाला है। उच्च विचारों से ही उच्च आचरण का उत्पादन होता है। उत्तम विचार के बगैर उत्तम जीवन भी संभव नहीं है। अत: हमें जीवन महान बनाने हेतु, सुसंस्कारी बनाने हेतु श्रेष्ठ संस्कारपोषक विचारों का संग्रह मन में करना आवश्यक है।

**Strong Characters are produced by strong thinking. Good deed are the outcome of good thoughts. No man live a Noble life without thinking nobly.**

सुसंस्कारपोषक सत्साहित्य हेतु सद्विचार अत्यंत आवश्यक है। समाज का स्तर उत्तम बनाने हेतु यह कार्य भी एक सर्वोत्तम उपाय है। जिसके फल स्वरुप मानव जीवन दुर्वासित स्थान स्वरुप नहीं बल्कि नंदनवन की भाँति सुवासित और सुरभीमय बने।

ऐसे शुभ आशय से प्रेरीत होकर **समेतशीखर तीर्थ चातुर्मास के प्रवचनो के माध्यम से** यह "**प्रवचन अंजन**" पुस्तक का सर्जन-लेखन हुआ है।

प्रस्तुत पुस्तक में समेतशिखर चातुर्मास में उपदेश भावना और धर्मरत्न प्रकरण आदि ग्रंथ में प्रकाशित उपदेश वैविध्य और श्रावक के २१

गुण एवं अन्य सद्‌गुणों की श्रेणी के माध्यम से प्रवचन किये गये थे, जो विभिन्न विषयों से सजाकर आलेखित किये गये है । यहाँ प्रदान किये गये उत्तम विचारों को मनोमय भूमिका में नवपल्लवित करने का प्रयास करें, यही विचार किसी दिन आचार में भी परिवर्तित होंगे । स्वाध्याय के पाँच प्रकार में अनुप्रेक्षा अर्थात् चिंतनात्मक विचारों का श्रेष्ठ स्थान है । विचारों की दृढता और आचार की चुस्तता से मानवीय जीवन सुसंस्कारों की सुरम्य रौशनी से सुविकसित और सुप्रकाशित बनता है । जिससे विकृत, अज्ञान, राग-द्वेष, मोह-माया के अंधकार की निशा स्वयं अदृश्य हो जाती है और सम्यग्ज्ञानामृत प्रवचन अंजन से सद्‌गुरु सम्यक् दृष्टि को जागृत करते है । जिससे अंतर आत्मा में रहे परम निधान का प्रागट्य होता है ।

श्रीमद् आनंदघनजी योगीराज फरमाते है :-

"**प्रवचन अंजन जो सद्‌गुरु करे देखे प्रगट निधान**"

पूज्यपाद गुरुदेव करुणामूर्ति, भक्तिरसनिमग्न, अध्यात्मयोगी आचार्यदेव श्रीमद्विजय **कलापूर्णसूरीश्वरजी** महाराजा की असीम कृपा से गच्छनायक व शासनप्रभावक प.पू. आचार्यदेव **श्रीकलाप्रभसूरीश्वरजी** व प.पू. आचार्यदेव **श्रीकल्पतरुसूरीश्वरजी** आदि महात्माओं के शुभाशिष से समेतशिखर चातुर्मास में दो वर्ष पूर्व हुए प्रवचनों के माध्यम से यह पुस्तक सर्जित हुआ है ।

समेतशिखर चातुर्मास वास्तव में हमारे जीवन के यादगार लम्हें साबित हुए । मैंने बाल्यावस्था में ही चारित्र ग्रहण किया था अतः समेतशिखर आदि तीर्थों की यात्रा नहीं हुई । वह यात्रा का स्वप्न नागपुर चातुर्मास के पश्चात् लंबी विहारयात्रा के अंत में शिखरजी की यात्रा हुई । एवं चातुर्मास में ७०० आराधक गण, अनेकविध कार्यक्रम, प्रतिदिन प्रवचन, विशिष्ट तपश्रेणि एवं पर्युषण महापर्व भव्यता से संपन्न हुआ । कुल ९ महीने स्थिरता रही, चातुर्मास के साथ साथ सूरिमंत्र साधना-४९ दिन, छःरि पालित संघ आदि अनुष्ठान भी हुए एवं चातुर्मास के पश्चात् झारखंड, बिहार, उत्तरप्रदेश के लगभग कल्याणक तीर्थों की यात्रा-स्पर्शना का लाभ भी प्राप्त हुआ, जिनका वर्णन व लीस्ट विशाल है । पश्चात् दिल्ली चातुर्मास भव्यता से हुआ । पश्चात् हरद्वार-ऋषिकेश, उत्तराखंड, राजस्थान एवं जयपुर, अजमेर, ब्यावर, पाली आदि शहर एवं

विविध तीर्थयात्रा, जीरावला से गुजरात-अहमदाबाद में विविध कार्यक्रम हुए। पश्चात् शंखेश्वर यात्रा करके पालीताणा आये। अब श्री सिद्धाचल तीर्थ में समुह चातुर्मास ८०० आराधकों के साथ मेवाडभवन आदि धर्मशाला में अति भव्यता से संपन्न हुआ। **मुनिराज श्रीपुनितचन्द्र विजयजी** ने भी ये सभी प्रवचनों के अवतरण एवं संपादन में संपूर्ण समर्पित - अनुमोदनीय प्रयास किया है। अहमदाबाद में ही पुस्तक **वीतराग ग्राफिक्स, अहमदाबाद राजेशभाई** के द्वारा प्रीन्टींग कार्य हुआ है जो विशेष अनुमोदनीय है। पू. गुरुदेव के चरणकमल में मेरे अनंतशः प्रणिपात हो...

अंत में, जिनाज्ञा विरुद्ध मुझ से कोई भी प्रवचन या आलेखन हुआ हो तो अंतःकरणपूर्वक मिच्छामि दुक्कडम्।

**वि.सं. २०७५**
**वैशाख सुद-३**
**अक्षय तृतीया**

**गुरुपादपद्मरेणु**
**आचार्य विजयपूर्णचंद्रसूरि**
जम्बूद्वीप जैन धर्मशाला, पालीताणा
शाश्वत परिवार आयोजित समर वेकेशन ९९ यात्रा

## श्री सम्मेतशिखर तीर्थ में ऐतिहासिक चातुर्मास के पश्चात् कल्याणक भूमि की दीर्घ विहारयात्रा

शासन प्रभावक प.पू. आ. श्री पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. एवं प.पू. मुनिराज श्री पूर्णरक्षितविजयजी म.सा. आदि 14 श्रमण-श्रमणी वृन्द की निश्रा में सम्मेतशिखर तीर्थे 700 आराधकों का ऐतिहासिक यादगार चातुर्मास सम्पन्न करके कठीनतम 2200 की.मी. की सुदीर्घ विहारयात्रा में अनेक कल्याणक भूमि की स्पर्शना करते हुए जिनशासन की प्रभावना पूर्वक प्रवचन के माध्यम से जैन-अजैन प्रजा एवं विद्यार्थीयों के जीवन में संस्कृति-संस्कार को उजागर किया।

## भारत की राजधानी (दिल्ली) से तीर्थों की राजधानी शत्रुंजय तीर्थ एक यादगार विहारयात्रा

प.पू. आचार्य श्री पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. आदि 14 साधु-साध्वीजी दिल्ली से विहार करके मेरठ, हस्तिनापुर तीर्थ, हरिद्वार, ऋषिकेश (उत्तराखंड), गाजीयाबाद, गुड़गांव, राजस्थान में जयपुर, वरखेड़ा तीर्थ, अजमेर, ब्यावर, सोजत, पाली, मांडवला, केशवणा, जालोर, आहोर, शिवगंज, सिरोही, बामणवाड़ा, नांदिया, लोटाणा, दियाणा, पावापुरी, भेरुतारक, देलवाड़ा, माऊण्ट आबु, जीरावला, बरमाण, मंडार आदि अनेक तीर्थों की यात्रा दर्शन एवं अनेक शहर-नगर गाँव में शासन प्रभावना, प्रवचन आदि लाभ देते हुए पाँच वर्ष के पश्चात् गुजरात में पदार्पण किया एवं पश्चात पांथावाडा, पालनपुर, मगरवाड़ा, सुलतान तीर्थ, ऊंझा, महेसाणा, पानसर, आदि तीर्थ यात्रा करते हुए अहमदाबाद पधारे, जहाँ विभिन्न संघों में 1 मास स्थिरता में दीक्षाएँ एवं महोत्सव आदि कार्यक्रम में निश्रा प्रदान करके शंखेश्वर तीर्थ में पधारे। वहाँ भी विशेष स्थिरता करके पू. गुरुदेव आदि विशाल समुदाय के साथ पालीताणा-सिद्धाचल तीर्थ 2700 कि.मी. विहारयात्रा करके चातुर्मास हेतु पधार रहे हैं।

# चातुर्मास का भव्यातिभव्य प्रवेश

## एकाग्रता पूर्वक प्रवचन श्रवण करते आराधक

## चातुर्मास के मुख्य लाभार्थी
## मातुश्री शर्मिष्ठाबेन नटवरलाल महेता परिवार
## ऊंझावाला हाल - नागपुर

## भक्तों की भावधारा में वृद्धि करते कनकभाई

आ. पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी द्वारा
शाश्वत गिरिराज शत्रुंजय की भावयात्रा

पू. प्रियदर्शन विजयजी द्वारा गढ गिरनार की भावयात्रा

समेतशिखर तप के साधक
पू. पावनमंत्र विजयजी

पर्युषण पर्व के बाद आ. पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी द्वारा
सूरिमंत्र की दुसरी, तीसरी, चोथी पीठिका की साधना

१०-१० मासक्षमण के तपस्वीओं का सुवर्ण चेन से बहुमान
करनेवाले एवं तपस्वी मुनिराज की डोली उठाते किरणभाई

मासक्षमण की भीष्म तपस्या के तपस्वी
पू. प्रशमलब्धि विजयजी का पारणा

नव दिवसीय परमात्मभक्ति महोत्सव में तल्लीन बनानेवाले
निकुंजभाई तपोवनी, अहमदाबाद

नवलखा नवकारमंत्र की महिमा समझानेवाले
पू. जयदर्शन विजयजी

सदैव सुबह सिद्धचक्र की
साधना करानेवाले
पू. पूर्णरक्षित विजयजी

पर्युषण पर्व के आठों दिन
अनुकंपादान के प्रेरणादाता
पू. मुक्तिनीलय विजयजी

प्रभुजी के पाठशाला गमन के लाभार्थी भरतभाई महेता, सिकंद्राबाद (मासक्षमण के तपस्वी)

गिरडीह से शिखरजी पौषधधारी छ'रीपालित संघयात्रा

छ'रीपालित संघ का बालयात्री तत्त्व

समेतशिखर तप के बिआसणा करते आराधक

गुरुदेव के श्रीमुख से
१२ व्रत ग्रहण
करते आराधक

अद्भूत मातृवंदना कराते हुए
कमलेशभाई

सुमधुर संगीतकार तथा नृत्यकार मोहनभाई

श्राविका तथा ३-३ युवान संतानों को जिन्होंने
जिनशासन को समर्पित किया है ऐसे
सुश्रावक रवीभाई सुंदरजी कुबडीया,
गाम - लाकडीया, हाल - मलाड (मुंबई)

पू. मुनिराज श्री पुनितचंद्र विजयजी (संसारी सुपुत्र)
पू. सा. श्री विशुद्धि प्रियाश्रीजी (संसारी सुपुत्री)
पू. सा. श्री विशुद्धि क्रियाश्रीजी (संसारी सुपुत्री)
पू. सा. श्री विशुद्धि कलाश्रीजी (संसारी सुश्राविका)

आराधकोने अर्पण किए हुये अलंकारों से चांदी के
प्रतिमाजी प्रगट होते ही आनंद से झूम उठे आराधक

# आत्मा का X-Ray

''शुभ कार्य जीवन को सजाते है,
अशुभ कार्य जीवन को जलाते है''

(१) प्रवृत्ति

(२) प्रेरणा

(३) पक्षपात

(४) प्रोत्साहन

(५) प्रशंसा

कोई भी मनुष्य स्वजीवन में कुछ ना कुछ कार्य तो अवश्य करेगा ही, व्यर्थ बैठनेवाला तो नहीं है। वह कार्य, यदि शुभ हो तो हमारे जीवन को सुशोभित कर देता है। जिससे हमारा जीवन तो बदलता है अपितु अन्य अनेक जीवो के लिये भी आशीर्वाद समान बनता है। यदि वह कार्य अशुभ हो तो हमारे जीवन को जला भी सकता है। एक वृक्ष से माचिस की हजारों तीली बन सकती है किन्तु एक ही तीली हजारो वृक्ष को जलाकर राख करने में समर्थ है। वैसे ही एक अशुभ कार्य भी हमारे जीवन को पतन की खाई में फैंक देने हेतु समर्थ है। तो, इन पाँच कार्यो को जानकर अशुभ से पुनः लौटने की और शुभ में आगे बढने की कोशिश करते है।

## (१) प्रवृत्ति

***शुभ प्रवृत्ति हमारे जीवन को धन्य बनाती है,***
***अशुभ प्रवृत्ति हमारे जीवन को कंगाल बनाती है।***

मानव को जीवन में कोई ना कोई प्रवृत्ति को करनी ही पडती है। प्रवृत्ति के बिना मानव जीवनयापन नहीं कर सकता। योग्य-अयोग्य प्रवृत्ति का भेद हमे स्वयं जानना ही पडेगा। शुभ प्रवृत्ति आत्मा को परमात्मा बना देती है, महामानव बना देती है, जीव को शिव बना देती है, इन्सान को भगवान बना देती है। शुभ प्रवृत्ति हमारे जीवन को धन्य कर देती है।

अशुभ प्रवृत्ति जीवन को कंगाल बना देती है, मानव को दानव बना देती है, नर को वानर बना देती है, पावन को पतित बना देती है, इन्सान को शैतान बना देती है। हमें कैसा जीवन बनाना है, धन्य या कंगाल ?

परमात्मा ने मोक्षप्राप्ति के विभिन्न मार्ग बताकर हम पर अनंत करुणा की वर्षा की है। दान, शील, तप, भाव, वैयावच्च, स्वाध्याय, परमात्मभक्ति, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि अनेक मार्ग बताये है। इन तमाम मार्ग से आपको सुलभ, पसंद हो वह मार्ग चुनकर उसमें आगे बढो और आत्मकल्याण करो। अनेक आत्माओं ने इन मार्ग पर चलकर जीवन को धन्य बनाया है।

जंगल में रहनेवाला हाथी ! कहीं अग्नि को देखा और जातिस्मरण ज्ञान होते ही अपने पूर्वभव को देखा। पूर्वभव में भी वह हाथी था। किसी दिन जंगल में दावानल फैल गया और उसमें हाथी की मृत्यु हो गई। अब पुनः इस भव में यही घटना हो रही थी तब हाथी ने दावानल से बचने हेतु

एक विशाल मैदान को घास-वृक्ष रहित बना दिया, जिससे आग वहाँ तक ना पहुँचे ।

अनेक दिन बीत गये और एक दिन पुनः भयानक दावानल फैल गया । जंगल के तमाम पशु स्वजीवरक्षा हेतु उस मैदान में आ गये । अनेक दिन से हाथी वहाँ मेहनत कर रहा था, फिर भी तमाम पशुओं को उसने उदारता गुण को दिखाते हुए स्थान प्रदान किया ।

हाथी जैसा महाकाय प्राणी भी हमें शिक्षा देता है कि-

**Love to all living beings**

तमाम जीवों को प्रेम करो ।

संपूर्ण मैदान पशुओ से भर गया । तभी हाथी को खाज पैदा होती है, उस खाज को मिटाने हेतु अपना पैर उपर करता है तभी वहाँ एक खरगौश, मुंबई की लोकल ट्रेन की भाँति भीड में फँसा हुआ होने से रिक्त स्थान देखकर हाथी के पैर की जगह बैठ जाता है । पैर नीचे रखते समय हाथी की दृष्टि उस खरगौश पर जाती है और सोचता है कि "यदि मैंने अपना पैर नीचे रख दिया तो यह खरगौश मर जायेगा ।" हाथी का मन इस प्रकार दुष्कर्म करने को तैयार नहीं होता और तभी हाथी अपना पैर हवा में ही स्थिर रखने का निर्णय लेता है ।

१ घंटा... ८ घंटे... १० घंटे... १ दिन... २ दिन... ढाई दिन होने के पश्चात् जंगल की अग्नि शांत हुई । सर्व पशु पुनः अपने स्थान पर लौटे । संपूर्ण मैदान खाली हो गया । वहीं हाथी अपना पैर नीचे रखने जा ही रहा था कि वहीं शरीर में रक्त जम जाने की वजह से नीचे गिर गया और शीघ्र ही अपने प्राण गँवा बैठा । मृत्यु के पश्चात् राजा श्रेणिक का पुत्र **मेघकुमार** बना । मात्र एक खरगौश की जीवदया करने पर भी तिर्यंच गति से सीधा राजपुत्र के स्वरुप में जन्म हुआ ।

प्रभुवीर की देशना सुनकर वैराग्य हुआ, प्रभु के हाथों से ही चारित्र ग्रहण किया । दीक्षा के प्रथम दिवस ही दरवाजे के पास संथारा करने का अवसर प्राप्त हुआ । पूर्णरात्रि महात्मा पारिष्ठापनिकासमिति विषयक आवागमन करते रहे, अतः उनके पैरों की रज मेघकुमार मुनि के संथारे पर फैलने लगी । पूर्ण रात्रि निद्रा ना हुई । मन में दीक्षा त्याग के विचार तक आ गये और मेघमुनि प्रभु महावीर के समीप यह विचार ले कर गये । वहीं परमात्मा ने

पूर्वभव याद करवाया । मेघमुनि पुनः संयम में स्थिर हुए और उत्कृष्ट संयमजीवन का पालन करके सर्वार्थसिद्ध विमान में पहुँचे । वहाँ से मानवभव प्राप्त करके केवली बनकर मोक्ष जायेंगे ।

मात्र एक छोटी सी शुभ प्रवृत्ति से भी स्वजीवन को धन्य बना दिया । यदि तिर्यंच का जीव भी इस प्रकार शुभ प्रवृत्ति कर पाता है तो हम मानव क्यों नहीं कर सकते ?

**'शुभ प्रवृत्ति जीवन को बाग बनाती है,**
**अशुभ प्रवृत्ति जीवन में आग लगाती है।'**

दो पागल व्यक्ति नाँव में जा रहे थे और अचानक ही नाँव में छिद्र हुआ । पहला पागल दूसरे को पूछने लगा कि अब क्या करें ? दूसरा कहता है कि इसमें सोचना क्या है ? एक और छिद्र बना लेते है ! जिससे एक छिद्र से पानी अंदर आयेगा तो दूसरे छिद्र से बाहर भी चला जायेगा । किन्तु वास्तविकता कुछ और है, इसीलिए दूसरा छिद्र बनाने से वह नाँव तुरंत समंदर में डुब गई ।

एक ही छिद्र यदि नैया को डुबोने हेतु काफी है तो एक ही पाप हमारे जीवन को भवसागर में डुबोने में समर्थ है । परंतु हमारी जीवन की नाँव में तो पाप के हजारो छिद्र है । सोचो, क्या हाल होगा हमारा ?

नाँव को बचाने का उपाय है कि नये छिद्र उत्पन्न ना हो इसका ध्यान रखा जाये और पुराने छिद्र का पूरण किया जाये । बस यही बात जीवन में भी अपनानी है । जीवन की नाँव में नये पापरुपी छिद्र उत्पन्न ना हो इसका ध्यान रखना है और पुराने पापरुपी छिद्र को बंद करते रहना है ।

पाप तो सर्प से ज्यादा भयावह है । सर्पदंश से तो एक ही भव में मौत प्राप्त होगी जबकि पापदंश से तो अनेक भव में मृत्यु प्राप्त होती है । सर्प दिखते ही हम उससे दूर भागते है वैसे ही पाप की प्रवृत्तिओं से भी दूर भागना है ।

पाप से दूर रहने हेतु सर्वप्रथम पापी निमित्तो से दूर रहेना पडेगा, क्योंकि हमारी आत्मा निमित्तवासी है । पानी को जिस पात्र में रखा जाये उसी पात्र का आकार धारण कर लेता है वैसे ही आत्मा को जैसे निमित्त प्राप्त होंगे वैसा आकार वह धारण कर लेगा ।

अनेक आत्माओं ने अनुभव किया होगा कि जिनालय-उपाश्रय आदि

शुभ स्थान में जाने से भावधारा उत्कृष्ट बन जाती है, किन्तु जैसे ही उन शुभ निमित्तो का त्याग हुआ और घर, दुकान, टी.वी. के सन्मुख गये कि तुरंत ही भावधारा बदल जाती है । अतः सर्वप्रथम पाप के निमित्तो का त्याग करना जरुरी है ।

आत्मा अनादिकाल से अशुभ प्रवृत्तिओं के कुसंस्कार से लिपटा हुआ है, यही कारण है कि जैसे की कोई छोटा सा निमित्त भी मिलेगा तब आत्मा तुरंत वह कार्य करने हेतु तत्पर हो जाता है ।

बचपन में साँप-सीढी का खेल तो कई बार खेला होगा । उसमें सीढी अर्थात् शुभ प्रवृत्ति जो आपको ९ नंबर से सीधा ९० नंबर तक भी पहुँचा सकती है और साँप अर्थात् अशुभ प्रवृत्ति जो आपको ९५ नंबर से सीधा ५ नंबर तक भी पहुँचा सकती है ।

मनुष्य को पहाड चढने के वक्त ही परिश्रम करना पडता है, पर्वत से नीचे उतरना तो आसान कार्य है । साइकिल को ढलान पर चढाने के समय ही मेहनत करनी पडती है, ढलान से तो अपने आप ही उतर जाती है । वैसे ही आत्मा को शुभ प्रवृत्ति में जोडने के वक्त ही मेहनत करनी पडती है, अशुभ प्रवृत्तिओं में तो आसानी से जुड जाती है । किन्तु अगर आपकी नजर उस पाप के परिणाम की तरफ होगी तो उस पाप की प्रवृत्तिओं से आप आसानी से बच सकते हो । पाप करना तो आसान है किन्तु पाप के परिणाम भुगतना अत्यंत कठीन है, तभी तो कहा है कि,

**हँसते-हँसते बाँधे गये कर्म रोते हुए भी नहीं छोड सकेंगे**

हम हँसते-हँसते पापबंध तो कर लेते है किन्तु जब उनका उदय होगा तब आँख से अश्रुधारा बहने लगेगी । इस भव में दुनिया की यात्रा तो अनेक बार की होगी पर अब समय है कि अंतरमन से आत्मा को देखकर चारगति के अतीत की अंतरयात्रा भी हो !

**कोई जन्मे करम मैं हसी ने कर्या, आंसुडा आज मारा नयनमां भर्या**
**जाण न्होती मने आ परीणाम नी, तो करत नहीं संगत बुरा कामनी...**

**कर्मो करेला मुजने नडे छे...**
**हैयुं हिबका भरीने रडे छे**

नरकगति में प्रतिक्षण परमाधामी के द्वारा छेदन, भेदन आदि दुःख

को नारकी जीव झेल रहा है । किसीको तलवार आदि से काटा जाता है तो किसीको स्वयं का ही माँस काटकर खिलाया जाता है । किसीको उपर उछालकर त्रिशूल में लटका दिया जाता है तो किसीको अत्यंत गर्म रेत पर चलाया जाता है । इस प्रकार वह जीव प्रतिक्षण चिल्लाते है, आँखो से सतत अश्रुधारा बहाते है पर वहाँ से बच निकलने का कोई भी उपाय नहीं है । नरकगति में कम से कम आयुष्य भी १०००० वर्ष का है ।

इस लोक में मानवी जब ऐसे भयावह दुःख झेलता है तो सहनशक्ति ना होने पर आत्महत्या भी कर लेता है पर नरक में यह भी मुमकीन नहीं है, वहाँ जीव आत्महत्या कर सके ऐसी व्यवस्था ही नहीं है । ना रह पाता है, ना सह पाता है ऐसी भयावह वेदना पूर्वभव के पापकृत्य की बदौलत ही भुगत रहा है ।

तिर्यंच भव में भी अनेक दुःख है । ना रहने का ठीकाना, ना खाने का । आहार हेतु भी निरंतर संघर्ष जारी रहता है । घोडे-गाय-ऊंट आदि के भव में शक्ति से भी ज्यादा भार ग्रहण करना पडता है, अश्रुपात करते हुए भी भारी वजन ले कर ढलान आदि चढने पडते है, मत्स्य-बकरी-गाय आदि के भव में न जाने कितनी बार किसीके हाथों कटकर किसीके मुख का निवाला बनना पडा है ।

कातिल ठंड में भी कहीं कोने में रहना पडता है तो कभी तेज गर्मी में भी उसी गर्मी से तप्त पानी पीना पडता है । पक्षीओं के भव में भी पिंजरे में पूर्ण जीवन बिताना पडता है तो वहीं उत्तरायण जैसे दिनों में कौन जाने कब कौन से मांजे का भोग बनकर जीवन गँवाना पडता है, आँखे गँवानी पडती है, घायल बनकर गिरना पडता है । कभी सर्कस में खेल बताना पडता है तो कभी चीडीयाघर में प्रदर्शन हेतु रहना पडता है ।

उपकार मानना है परमात्मा का कि मनुष्य भव में भी कोई अनार्य देश में, अँधे, बहरे, गूँगे, अपंग, विकलांग के स्वरुप में जन्म नहीं मिला बल्कि आर्यदेश में, जैनकुल में, श्रावक कुल में जन्म प्राप्त हुआ है । यदि पूर्वभव में हमने कोई भारी पाप किये होते तो कोई नरक, तिर्यंच या अनार्य देश में जन्म प्राप्त होता किन्तु पूर्वभव की शुभप्रवृत्तिओं के द्वारा पुण्योपार्जन किया तभी हमें उत्तम कुल में जन्म प्राप्त हुआ है ।

प्रचंड पुण्य का बलिदान देकर हमने यह मानवभव पाया है । अब

इसका उपयोग सत्कार्य हेतु, शुभप्रवृत्ति हेतु ही करना श्रेयस्कर है क्योंकि अशुभ प्रवृत्तिओं ने तो हमारे जीवन में आग लगाकर अनेक भव में भ्रमण करवाया है।

अब इस उत्तम भव में शुभ प्रवृत्तिओं के द्वारा जीवन को बाग बनाकर सजाना है। इस भव में अब विश्वासघात, चोरी, हिंसा, इर्ष्या, अहंकार जैसे तमाम पापो का त्याग करना है। क्योंकि हमारे कर्म हमें ही भुगतने है, अन्य कोई भी इसमें भागीदार नहीं बन सकता तो क्यों अशुभ कार्य द्वारा जीवन को बरबाद करना ?

**कलावती** ने पूर्वभव में तोते पर अपूर्व स्नेह होने के कारण वह तोता उडकर कहीं चला ना जाये इसलिए उसके पंख ही कटवाकर पिंजरे में कैद कर लिया था। वह कर्म इस भव में भुगतना पडा, उसके हाथों की कलाईयाँ काटी गई। कर्म किसी को नहीं छोडता। अतः कोई भी प्रवृत्ति करने से पूर्व सो बार विचार करना चाहिये, जिससे भविष्य में पछताना ना पडे।

**'अशुभ प्रवृत्ति इन्सान को शैतान बना सकती है,**
**शुभ प्रवृत्ति इन्सान को भगवान बना सकती है'**

## (२) प्रेरणा

***शुभ प्रेरणा जीवन में आशीर्वादरुप बनती है,***
***अशुभ प्रेरणा जीवन में अभिशापरुप बनती है,***

मानव को बाल्यकाल से ही विभिन्न प्रेरणा मिलती रहती है, वह प्रेरणा शुभ-अशुभ दोनों प्रकार की होती है। जैसेकि गुरुदेव के प्रवचन में सतत शुभकार्य की प्रेरणा मिलती रहेगी कि दीक्षा ग्रहण करने योग्य है, उपधान-संघ-श्रावक के १२ व्रत-साधर्मिक भक्ति-जीवदया-दुःखीजनों का उद्धार-तीर्थयात्रा-शासन प्रभावना-अट्ठम आदि तप-स्वाध्याय-जिनवाणी श्रवण इत्यादि शुभकार्य करने योग्य है। इस प्रकार धर्मस्थानकों से सतत शुभकार्य करने की ही प्रेरणा मिलती है।

और संसार में ज्यादातर अशुभकार्य की ही प्रेरणा प्राप्त होती है। जैसेकि व्यापार में अनीति तो करनी ही पडती है अन्यथा घर-संसार कैसे चल सकता है, कोई कुछ बोले तो सिंह की भाँति गर्जना करके उसे चूप कर दो परंतु बकरी के जैसे नहीं जीना, पाउंभाजी-पानीपुरी-होटल-रात्रिभोजन-

अभक्ष्य-जमीनकंद-सिनेमा-हर रविवार घुमने चले जाना-५०,००० का मोबाईल-मोडर्न अंग प्रदर्शन करनेवाले जिन्स आदि तमाम इच्छाएँ इस जीवन में ही पूर्ण करनी चाहिये इस प्रकार की अशुभ प्रेरणा देनेवाले व्यक्ति भी होते है ।

हमें कौन सी प्रेरणा ग्रहण करनी है यह हमारे ही हाथ में है । शुभ प्रेरणा जीवन में आशीर्वादरुप बनकर जीवन का विकास करनेवाली, माता-पिता-परिवार-समाज का नाम रौशन करनेवाली बनती है और अशुभ प्रेरणा जीवन में अभिशापरुप बनकर जीवन का नाश करनेवाली, माता-पिता-परिवार-समाज का नामोनिशान मिटानेवाली बनती है ।

**याद करो वज्रस्वामीजी को !** धनावह सेठ की कन्या वज्रस्वामी के गुण सुनकर मोहित हो गई । उसने मन में तय किया कि विवाह करुँगी तो मात्र वज्रस्वामी से ही, अन्य किसीके साथ नहीं । पिता को यह ज्ञात हुआ । पिता ने बहुत समझाया किन्तु वह कन्या अपनी स्त्रीहठ छोडने को तैयार ना हुई ।

आखिरकार पिता ने भी बेटी की बात मान ली और प्रवचन पूर्ण होने के पश्चात् वज्रस्वामी के पास गये और सुवर्ण का थाल उनके चरणों में रखा । गुरुदेव ने पूछा कि "यह क्या है ? हम सुवर्ण नहीं रखते, सुवर्ण को छूते तक नहीं । तो यहाँ क्यों ले कर पधारें ?" सेठ ने कहा कि "यह भेंट आप मेरी कन्या से विवाह करो इसलिए लाया हुँ । उसने हठ रखी है कि आपके सिवाय अन्य किसी के साथ विवाह नहीं करेगी ।"

वज्रस्वामी ने कहा कि "आप कन्या को ले कर यहाँ पधारें ।" यह सुनकर सेठ तो अत्यंत प्रसन्न हो कर अपने घर गये और कन्या को ले कर लौट आये । गुरुदेव ने कन्या को संसार की असारता का उपदेश देते हुए कहा कि "ऐसे संबंध तो अनंत बार अनेक जीव से किये है । अरे ! देवलोक में भी अप्सरा के समान देवीओं के साथ अनेक बार विषयसेवन किया है, फिर भी जीव को संतोष नहीं हुआ, तो इस भव में जीव को संतोष कैसे होगा ?"

"यह विषयसुख तो किंपाक फल के समान है । जैसे किंपाक फल खाते समय मधुर लगता है किन्तु कुछ क्षण में ही उसका जहर अपना कार्य शुरु कर देता है और मृत्यु की शरण में भेज देता है वैसे विषयसुख शुरुआत में अच्छे लगते है किन्तु जब इस विषयसेवन के द्वारा उत्पन्न हुए पापों का

उदय होता है तब कटु परिणाम भुगतने पडते है। इस विषयसुखो को छोडकर आत्मसुखो का अनुभव करने का प्रयत्न करो और इस अनुभव के लिये संयम ही श्रेष्ठ उपाय है।" इस प्रकार वैराग्यसभर वाणी सुनकर वह कन्या भी रागी से वैरागी बन गई और वैरागी से वीतरागी बनने हेतु प्रभु वीर के संयमपंथ पर आगे बढी।

इस प्रकार वज्रस्वामी ने धनावह सेठ की कन्या द्वारा दी गई अशुभ प्रेरणा का अस्वीकार किया, जीवन को बरबाद होते हुए बचा लिया।

और उस कन्या ने वज्रस्वामी की शुभ प्रेरणा का स्वीकार करके जीवन को आबाद बनाया।

**'शुभ प्रेरणा जीवन को नंदनवन बनाती है,**
**अशुभ प्रेरणा जीवन को वैरान रेगीस्तान बनाती है,'**

जीवन में शुभ प्रेरणाओं को अपनाने का यथाशक्ति प्रयास करना चाहिये और अशुभ प्रेरणाओं को जीवन से निकालने का प्रयत्न करना चाहिये, क्योंकि शुभ प्रेरणा जीवन को कभी खराब नहीं बनने देती और अशुभ प्रेरणा जीवन को कभी अच्छा नहीं बनने देती।

किसी समय हम एक अनाथ आश्रम की मुलाकात हेतु गये। जीवन में कभी अनाथ आश्रम नहीं देखा था। प्रवेश करते ही देखा कि छोटी उम्र के करीब २०० बालक-बालिका वहाँ उपस्थित थे। नमस्कार करके सब बैठ गये। उन्हें अनेक शुभ प्रेरणा भी दी, जीवन में कभी निराश नहीं होने की बात समझाई। वहाँ के शिक्षक से भी मुलाकात हुई, पश्चात् किसी कमरे में हमें ले कर गये।

कभी ना देखे हो ऐसे दृश्य वहाँ देखे। मात्र २ महीने से ले कर २ वर्ष तक के करीब १५ से २० बालक मौजुद थे।

इस विषय में गहन चिंतन करने पर यह भी ज्ञात हुआ कि संसार में कोई युवक विवाह की लालच दे कर युवती के साथ जातीय संबंध बाँधने की अशुभ प्रेरणा करता है और युवती उसके झूठे, मात्र शारीरिक प्रेम में पागल बनकर यह अशुभ प्रेरणा स्वीकार लेती है और विवाह के पूर्व ही इस प्रकार के संबंध बाँध लेती है।

**भूख न देखे बासी भात,**

**निंद न देखे टूटी खाट,**
**प्यास न देखे धोबी घाट,**
**इश्क न देखे जात-कजात**

उस युवान को कन्या के साथ प्रेम करने से कोई भी मतलब नहीं है, वह तो मात्र शिकार की खौज में ही भटकता है। अंत में युवती आत्महत्या जैसा महापाप कर लेती है या विवाह के पूर्व जन्मे बालक को इस प्रकार अनाथ आश्रम में रख देती है।

अरे ! आश्चर्य तो तब होता है जब विवाह के शुरुआती वर्षो में घुमने और मनोरंजन के शोख पूर्ण करने की इच्छा में यह बालक विघ्नरुप बनेगा यह सोचकर पति की अशुभ प्रेरणा ग्रहण करके माँ जैसी माँ भी मासूम बालक को मौत के घाट उतारने से पीछे नहीं हटती और उसी पाप का उदय होने पर बालक की इच्छा होने के बावजुद वंध्या स्त्री के स्वरुप में जन्म प्राप्त होता है और तब आँख में आँसु के अलावा कुछ नहीं होता।

अतः जीवन में कभी भी किसी की भी अशुभ प्रेरणा को ग्रहण ना करें क्योंकि अशुभ प्रेरणा जीवन को वैरान रेगीस्तान बनाकर रख देगी, जबकि शुभ प्रेरणा जीवन को नंदनवन बनाती है। अतः सतत सत्प्रेरणा का स्वीकार करना चाहिये। यहाँ तक बात हुई कि कैसी प्रेरणा का स्वीकार करना चाहिये, अब बात करेंगे कि अन्य को कैसी प्रेरणा प्रदान करें ?

सत्य कहना, आप अपने घर में पुत्र-पुत्री को किस प्रकार की प्रेरणा देते है ? दीक्षा की या विवाह की ? आपके घर की बात रहने दो, यह बताओ कि पडोशी या रिश्तेदारो में किसी के पुत्र को दीक्षा की भावना हो तब भी आप उसे टोकते है ना ? ''बेटा ! सोच समझकर दीक्षा लेना। चार दिन की चांदनी है फिर है अंधेरी रात। लोहे के चने चबाने जैसी कठीन है दीक्षा, तलवार की धार पर चलने समान है दीक्षा।'' इस प्रकार के शब्द आपके मुख से प्रगट होते है ना ?

वह पुत्र जब विवाह की तैयारी कर रहा हो तब कहते हो कि ''बेटा ! विवाह करने योग्य नहीं है। हम तो फँस चूके है किन्तु तुं मत फँस। हर घर में रामायण-महाभारत विवाह के पश्चात् ही होती है, सम्हलजा''

अब तक संसार के कार्य करने हेतु अन्यों को हमने अनेक प्रेरणा दी है। अब यह निरर्थक पाप नहीं करने इसलिए आज से ही तय करना है कि

अब से मुझे सत्कार्य में पीछेहट नहीं करनी और गलत कार्य की प्रेरणा भी नहीं करनी।

शायद जीवन में कोई ऐसी स्थिति आ जाये कि हम स्वयं जिनालय-उपाश्रय ना जा सके किन्तु हमारे संपर्क में आनेवाले किसी भी आत्मा को रोकना नहीं है, कभी विरोध नहीं करना है उल्टा उन तमाम आत्माओं को जिनालय-उपाश्रय जाने की प्रेरणा करते रहना है।

**'शुभ प्रेरणा जीवन में हरियाली फैलाती है,**
**अशुभ प्रेरणा जीवन में तबाही फैलाती है।'**

## (३) प्रोत्साहन

***सत्कार्य का प्रोत्साहन सद्‌गुणों का पोषण करता है और दुर्गुणों का शोषण करता है,***
***दुष्कार्य का प्रोत्साहन दुर्गुणों का पोषण करता है और सद्‌गुणों का शोषण करता है।***

अनादि काल से जीव पापी प्रवृत्ति ही करता रहा है। अकाम निर्जरा करते करते अब मानवभव-जैन धर्म तक पहुँचा है। यहाँ सद्‌गुरु भगवंत की प्रेरणा प्राप्त होते ही उसके जीवन में सत्कार्य की शुरुआत हो जाती है।

कार्य की शुरुआत तो हो गई किन्तु उस कार्य को पूर्णता तक पहुँचाने में और जीव के आत्मविश्वास की निरंतर वृद्धि हेतु उसे सतत प्रोत्साहन भी देना पडता है। प्रोत्साहन की बदौलत जीव को सत्कार्य करने हेतु उत्साह और भावों की अभिवृद्धि होती रहती है। वह कार्य पूर्ण होने के पश्चात् नया सत्कार्य करने की भावना पैदा होती है।

**Cricket Match** में जो टीम विजयी बनती है उसे **'Cup'** प्रदान किया जाता है। खेल के दौरान श्रेष्ठ प्रदर्शन करनेवाले खिलाडी को **'Man of the Match'** घोषित किया जाता है। विद्यालय में भी अच्छे गुण प्राप्त करनेवाले विद्यार्थी, संगीतकला, नृत्यकला, चित्रकला, वक्तृत्वकला इत्यादि में जिसका प्रदर्शन बेहतरीन रहता है उनको मंच पर बहुमान प्रदान करके जाहिर सम्मान किया जाता है, जिससे उस विद्यार्थी को प्रोत्साहन प्राप्त होता है। भौतिक क्षेत्र में प्रगति करने हेतु इस प्रकार प्रोत्साहन दिया जाता है।

धार्मिक क्षेत्र में भी प्रगति प्राप्ति हेतु प्रोत्साहन दिया जाता है। जैसे

कि मासक्षमण, सिद्धितप, श्रेणीतप आदि तपस्या करनेवाले भव्यात्माओं का संघ समक्ष बहुमान किया जाता है, जिससे उनका तप के प्रति उत्साह बढता है और अन्य आत्माओं को भी तप मार्ग से जुडने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

**समेतशिखर चातुर्मास के दौरान एक अद्भूत कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसके अंतर्गत ७०० आराधकों द्वारा से जिन आराधको ने अपनी संतान जिनशासन को सौंप दी थी उन तमाम आराधकों का माता-पिता का बहुमान किया गया।**

किसीने अपनी ५-५ संतान शासन को सौंप दी थी, तो किसीने अपनी एकलौती संतान शासन को सौंप दी थी। ऐसे अनेक माता-पिता के बहुमान द्वारा उनके उत्साह की वृद्धि करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इस प्रसंग के फलस्वरुप अनेक भव्यात्माओं को उत्तम प्रेरणा प्राप्त हुई थी।

संघ में भी कोई बालक-बालिका प्रतिक्रमण में अतिचार, अजितशांति, हालरडुं, २७ भव का स्तवन, मोटीशांति इत्यादि सूत्र बोलते है तब उनका प्रोत्साहन करना ही चाहिये। जिसके फल स्वरुप नये सूत्र करने का मन होता है। यदि इस प्रकार सूत्र अभ्यास का बहुमान नहीं किया गया तो बालक भी वह अभ्यास छोड देगा।

अनेक पाठशालाओं में उत्तम प्रोत्साहन दिया जाता है। २५ वर्ष पूर्व जब हम चेन्नई में आराधना भवन में चातुर्मास थे तब चेन्नई की पाठशाला में घोषित किया गया था कि जो भी बालक संपूर्ण अतिचार कंठस्थ करेगा उसका सुवर्णचेन से बहुमान किया जायेगा।

समेतशिखर में भी चातुर्मास के दौरान जिन आराधको ने मासक्षमण तप किया, उन तमाम आत्माओं का सुवर्णचेन से बहुमान किया गया था।

## 'सत्कार्य का प्रोत्साहन सद्गुणों को मजबूत बनाता है, दुष्कार्य का प्रोत्साहन दुर्गुणों को मजबूत बनाता है'

एक व्यक्ति चोरी करते हुए पकडा गया। कोर्ट केस हुआ। उसके द्वारा अनेक गुनाह हुए थे। केस में अंतिम निर्णय लिया गया की उसे फाँसी की सजा दी जाये। फाँसी पर चढने के पूर्व उसको अंतिम इच्छा पूछी गई, तब उसने उसकी माता से मिलने की इच्छा जताई।

उसकी माता को बुलाया गया। माता के करीब आते ही चोर ने

उसकी नाक को काट लिया, नाक से त्वरीत खून बहने लगा । सब ने उसे ऐसा करने का कारण पूछा, तब वह बोला कि...

''आज मैं इस दशा तक पहुँचा हुँ, उसका कारण मेरी माता ही है । क्योंकि बचपन में एक बार मैं स्नान करके बाहर निकला और पडोशी के रखे हुए तिल के संग्रह पर गिर गया । मेरा शरीर भीगा हुआ होने से वह तिल मेरे शरीर पर लग गये । गृह जाने के पश्चात् माता ने सारे तिल निकालकर रख लिये । फिर यह हमारा दैनिक क्रम ही बन गया । मुझे मेरी माता ने उसी वक्त थप्पड मारकर ऐसी छोटी-छोटी चोरी करने से रोका होता, ऐसे कार्य हेतु मुझे प्रोत्साहन ना दिया होता, तो मैं जीवन में कभी चोरी ही ना करता । परंतु ऐसे गलत कार्यो के लिये मेरी माता की तरफ से प्रोत्साहन मिलता रहा और परिणामस्वरुप छोटी-छोटी चोरी से आगे बढकर आज मैं बडा चोर बन गया ।''

हम विहार करते हुए समेतशिखरजी पहुँचे । मार्ग में एक गाँव देखा जहाँ किसी भाई ने बताया कि, उस गाँव में सगा बाप ही अपने बेटे को बीडी पीना सिखाता है और अवसर होने पर शराब भी पिलाता है । लगभग गाँव का एक भी बच्चा ऐसा नहीं होगा जिसने बीडी ना पी हो । वहाँ के बालक स्कूल में भी बाथरुम में जा कर बीडी पी लेते है ।

९ से ११ वर्ष के बालकों को गलत कार्य हेतु जो प्रोत्साहन मिलता है वही आगे जा कर उनके जीवन में व्यसन बन जाता है । आप भी ध्यान रखे कि आपके परिवार में कभी किसीको गलत कार्य करने हेतु प्रोत्साहन ना मिल जाये ।

बिलकुल चौविहार के समय ही दुकान पर ग्राहक आ जाये और पुत्र आपको फोन करके पुछे कि ''पिताजी ! क्या करुँ ? चौविहार जाने दुँ या दुकान पर आये ग्राहक को जाने दुँ ?'' सच बताना, आप कौन से कार्य के लिए प्रोत्साहन देंगे । यही कहोगे ना कि,

''बेटा ! चौविहार तो कुछ देर से भी हो जायेंगे, कल भी हो जायेंगे किन्तु ग्राहक रोज नहीं आनेवाले । ग्राहक तो भगवान समान है और भगवान को जाने नहीं देते, उनका तो सहर्ष स्वागत करते है ।'' इस प्रकार चौविहार को छोडकर भी ग्राहक को प्रोत्साहन देनेवाले लोग इस दुनिया में है ।

तो, कुछ सत्त्वशाली श्रावक भी होते है जो चौविहार को ही प्रोत्साहन देते हुए कहेंगे कि ''बेटा ! चौविहार का त्याग तो हो ही नहीं सकता । ग्राहक

तो देरी से भी आ जायेगा, उसे समझा सकते है । अतः तुं चिंतामुक्त हो कर पहले चौविहार कर ले । ग्राहक जाता है तो जाने दे किन्तु जीवन में कभी भी चौविहार का त्याग करने की सोचना भी मत ।''

इस प्रकार प्रोत्साहन देने से वह पुत्र कभी देशाटन पर गया हो और चौविहार के समय भोजन प्राप्ति ना हो तब भी मात्र पानी पी कर भी चौविहार कर लेगा । कैसे हुआ यह ? आपके द्वारा आपके पुत्र को बाल्यकाल से ही चौविहार का प्रोत्साहन यह कार्य करवाता है ।

**याद करो गुजरात के मंत्रीश्वर बाहड को !** शत्रुंजय के जिर्णोद्धार हेतु विशाल सभा का आयोजन किया । अनेक करोडपति सेठ दान की गंगा बहाने तत्पर थे, वहीं मैले, पुराने वस्त्र पहनकर भीमा कुंडलीया सभा में प्रवेश करने हेतु मेहनत कर रहा है । उसके वस्त्र देखकर सब ने कहा कि ''भाई ! यहाँ कोई प्रभावना नहीं हो रही बल्कि जिर्णोद्धार हेतु राशि जमा हो रही है अतः तुं यहीं खडा रह, अंदर नहीं आ सकता ।''

भीमा के पास जीवन की तमाम संपत्ति जमा करते हुए भी मात्र ७ द्रम्म जमा हुई थी फिर भी वह ७ द्रम्म उसने मंत्रीश्वर बाहड को जिर्णोद्धार के लिये प्रदान कर दी । तब बाहड मंत्री ने उसकी अवगणना नहीं की थी कि ''यह क्या ले कर आ गये हो ? यहाँ करोडो की बोलीयाँ चल रही है और तुं मात्र ७ द्रम्म देने आ गया । चला जा यहाँ से ।''

बाहडमंत्री ने भीमा कुंडलीया को जबरदस्त प्रोत्साहन देते हुए सर्वप्रथम उसका नाम लिखा और उपस्थित सभा को समझाया कि ''हम सब हमारी १०० प्रतिशत संपत्ति से ५ या २५ प्रतिशत संपत्ति दान में दे रहे है, जबकि यह भीमा कुंडलीया अपने जीवन की संपूर्ण १०० प्रतिशत संपत्ति प्रदान कर रहा है । इसलिए उसका नाम दाताओं की यादी में सर्वप्रथम लिखा जायेगा ।''

ऐसे छोटे इन्सान हमारे संपर्क में भी कई बार आते है और हम उनका अपमान कर देते है, अपशब्द कहते है, क्रोध करते है तब उस इन्सान को हमारे प्रति, जिनधर्म के प्रति द्वेष पैदा होता है, जिसमें निमित्त हम ही बनते है ।

अतः कभी भी किसी भी व्यक्ति को सत्कार्य करने हेतु प्रोत्साहन देना चाहिये, उसका हृदयभग्न हो जाये ऐसा कार्य जीवन में कभी भी नहीं

करना चाहिये । व्यक्ति संपत्ति से नहीं बल्कि उसके सद्‌गुणों के द्वारा महान बनता है ।

कई बार तो यह भी होता है कि किसी व्यक्ति द्वारा किये गये सत्कार्य के प्रोत्साहन की बात तो दूर बल्कि उसको बदनाम करने की कोशिश की जाती है । कभी ऐसा भी होता है कि कोई व्यक्ति बडी उम्र में धर्म प्राप्त कर रहा हो और मुश्किल से प्रतिक्रमण में पहली बार ही वंदित्तु या शांति सूत्र बोल रहा हो और बीच में कोई भूल हो जाये, रुक जाये; उस समय अन्य तमाम लोग चिल्लाना शुरु कर देते है, भूलों की बारीश बरसाते है । ऐसा करने पर वह व्यक्ति इतना डर जाता है कि जो कंठस्थ रहता है वह भी भूल जाता है और प्रतिक्रमण के पश्चात् भी उसे ताने सुनने पडते है ।

एक छोटा बालक पहली बार ही अतिचार बोल रहा था और उपरोक्त घटना बनने से गभरा गया । किसीने उसकी भूल गिनी तो कुल ९० भूल थी किन्तु शिक्षक ने उसे प्रोत्साहन देते हुए कहा कि "बेटा ! बहुत ही सुंदर अतिचार बोले हो तुम । कुछ भूल थी पर चिंता की बात नहीं है, अगली बार और मेहनत करके बोलना ।" बालक ने भी खूब मेहनत की और पुनः अतिचार बोलने पर मात्र तीन भूल ही हुई ।

हमें भी यही सिखना है कि, कभी किसीका आत्मविश्वास ना तोडे बल्कि उसे सत्कार्य में जोडते रहे । यदि शिक्षक भी बालक का आत्मविश्वास तोड देते तो वह बालक दौबारा अतिचार बोलने का आदेश ही ना माँग पाता । अरे ! प्रतिक्रमण करना ही छोड देता और धर्म से विमुख हो जाता ।

इस प्रकार अनेक नुकसान हमारे द्वारा हो रहे है; सामनेवाले को तो नुकसान हो ही रहा है पर साथ में हमें भी नुकसान हो ही रहा है, क्योंकि कोई जीव आराधना करना ही बंद कर दे तो इस बात में निमित्त हम बन गये । अतः कभी भी गलती से भी ऐसी भूल ना हो जाये इस बात का खास ध्यान रखना है । सत्कार्य करने हेतु अन्यों को प्रोत्साहन देना शुरु कर दो, दुष्कार्य करने हेतु प्रोत्साहन देना बंद कर दो ।

**'सत्कार्य का प्रोत्साहन सत्कार्य में आगे बढाये,**
**दुष्कार्य का प्रोत्साहन दुष्कार्य में आगे बढाये ।'**

# (४) पक्षपात

***'पाप का पक्षपात अर्थात् जीव का अधोगमन***
***पुण्य का पक्षपात अर्थात् जीव का उर्ध्वगमन'***

पापों की प्रवृत्ति, पापों की प्रेरणा, पापों का प्रोत्साहन प्रदान करने की वृत्तिओं को तिलांजली देनी है। धर्म की प्रवृत्ति, धर्म की प्रेरणा, धार्मिक प्रोत्साहन प्रदान करना है। कोई भी स्थान, कोई भी समय, कोई भी संयोग हो पर हमारा मन सतत धर्ममय होना चाहिये।

शारीरिक प्रतिकुलता की वजह से शायद तप ना हो सके पर तप का पक्षपात तो हो सकता है ना ? तप करने योग्य है, तप करना ही चाहिये, इस प्रकार मन को सतत तप की तरफ रखना। इसका नाम है पक्षपात।

व्यापार-नौकरी आदि प्रतिकुलता की वजह से शायद प्रतिदिन अष्टप्रकारी पूजा ना हो पाये किन्तु पूजा का पक्षपात तो हो सकता है ना ? आप यहीं पर मात खा बैठे। धर्म की प्रवृत्ति, प्रेरणा, प्रोत्साहन तो गँवाया अपितु धर्म का पक्षपात भी गँवा दिया !

रात्रिभोजन करते हो और बोलते हो कि, पहले के जमाने में अंधकार की वजह से जीवोत्पत्ति होती थी पर अब तो **Electric light** आदि के कारण रात्रि को खाते समय कोई दिक्कत नहीं होती। पाप तो किया पर पाप का पक्षपात भी किया, परिणाम स्वरुप संसारभ्रमण चालु ही रहता है।

याद है **विनयरत्न म.सा.** ! राजा का खून करने हेतु विकल्प सोच रहे थे। अन्य कोई मार्ग ना मिलने पर अंत में चारित्र ग्रहण किया। गुरु का इस प्रकार उत्कृष्ट विनय किया की गुरु ने उनका नाम ही विनयरत्न रख दिया। गुरु जहाँ भी जाते थे उनको साथ ले जाते थे। इस प्रकार १२ वर्ष बीत गये। राजा को मारने हेतु छूरी भी साथ में छुपा रखी थी।

१२ वर्ष तक साथ में छूरी रखी फिर भी किसीको पता नहीं चलने दिया। १२ वर्ष के बाद गुरु भगवंत उसी राजा को पौषध आराधना करवाने पधारें, वहाँ उनके शिष्य के सिवाय अन्य किसीका प्रवेश निषेध था। गुरु उनके विनय से प्रसन्न थे अतः विनयरत्न को अपने साथ ले कर गये। राजदरबार में गये, राजा ने पौषध की आराधना की। रात्रि को तीनों ने प्रतिक्रमण किया और कुछ समय पश्चात् संथारा ग्रहण किया।

राजा और गुरु भगवंत तो निद्राधीन हो गये पर विनयरत्न को तो नींद नहीं आ रही थी, क्योंकि १२ वर्ष से मन में दबी हुई अशुभ भावना को फलीभूत करने का मौका आज मिल गया था । रात्रि को उठकर राजा की तरफ आगे बढे, अब तक सब की नजर से छुपाई हुई छूरी बाहर निकाली और राजा के गले पर हमला कर दिया । राजा की मृत्यु हो गई और विनयरत्न वहाँ से भाग गया, गायब हो गया ।

कुछ समय बाद खून की धारा धीरे धीरे गुरु भगवंत के संथारे की ओर पहुँची । गर्म खून के स्पर्श होते ही गुरु भगवंत उठ गये । संथारा भी खून की वजह से भीग गया था । गुरु भगवंत ने देखा की विनयरत्न गायब है और राजा का मस्तिष्क भी धड से अलग हो चुका है । स्थिति को समझ गये ।

मन में सोचा कि यदि ''मैं जीवित रहा तो राजा की हत्या का कलंक लग जायेगा और शासन की हिलना होगी, जैनधर्म की लघुता होगी । यह मेरे लिये शोभास्पद नहीं है ।'' जैनशासन की आशातना ना हो इसलिए वह छूरी ले कर खुद के गले पर फैर दी और देहत्याग कर दिया ।

१२ वर्ष तक संयम पालन करनेवाले विनयरत्न मुनि के भीतर में पाप का पक्षपात था, जो निमित्त मिलते ही बाहर प्रगट हो गया । १२-१२ वर्ष तक प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन, गोचरी, गुरुभक्ति आदि अनेक कार्य किये पर सर्वथा पथ्थर पर पानी ! क्योंकि भीतर में तो पाप का पक्षपात था ।

याद करो **कालसौरीक कसाई को !** श्रेणीक महाराजा ने नरक मे न जाने हेतु प्रश्न पूछा तो प्रभु ने मार्ग बताया कि ''प्रतिदिन ५०० पाडे को मारनेवाले कालसौरीक कसाई को एक दिन भी तुं रोक सके तो नरक में जाने से बच सकता है ।''

श्रेणीकराजा कालसौरीक के पास गये । ''जितना चाहे उतना धन ग्रहण कर ले किन्तु यह हिंसा रोक दे ।'' कालसौरीक नहीं माना तो एक जलरहित कुंए में उतार दिया तो वहाँ भी कालसौरीक मिट्टी के ५०० पाडे बनाकर उनको काट रहा हो इस प्रकार तोडने लगा, मूलतः भीतर में पाप का, हिंसा का पक्षपात ही था ।

**'पाप का पक्षपात मोह में फँसा देता है,**
**पुण्य का पक्षपात मोक्षप्राप्ति करवाता है'**

हमें ही हमारे जीवन का **Checking** करना है कि "कहीं मेरे जीवन में तो पाप का पक्षपात नहीं है ना ?"

**तप करने में आनंद है या तप के पश्चात् पारणां करने में आनंद है ?**

**सूखी रोटी वाले आयंबिल में आनंद है या गर्म ढोकला-ढोसा वाले आयंबिल में आनंद है ?**

**दाल-चावल-सब्जी-रोटी वाले एकासने में आनंद है या बंगाली, पंजाबी भोजनवाले एकासने में आनंद है ?**

**न्याय-नीति से प्राप्त १० रुपये की कमाई में आनंद है या अन्याय-अनीति से प्राप्त १००० रुपये की कमाई में आनंद है ?**

**समय प्राप्त हो तब गाथा करने में आनंद है या व्यर्थ की बातों में आनंद है ? सामायिक में आनंद है या शोपिंग करने में आनंद है ?**

**प्रवचनश्रवण में आनंद है या फिल्मी गीतों के श्रवण में आनंद है ?**

**नवकारवाली गिनते हुए नींद आ जाती है और नवरात्रि में रास खैलते वक्त नींद गायब हो जाती है !**

**प्रतिक्रमण में २० लोगस्स का काउसग्ग करते समय पैरों में दर्द होता है और बाहर निकलकर खडे-खडे किसीकी निंदा करते समय कोई थकान नहीं लगती !**

**धर्मक्षेत्र में ५००० रुपये खर्च करते समय भी ५०० बार सोचना पडता है और होटल में ५०,००० का खर्चा करने हेतु भी तैयार हो जाते हो !**

**घर में कार्य करते समय हाथ-पैर दुखते है और थकान का अनुभव होता है और वजन बढ जाने से डोक्टर प्रतिदिन ३-४ की.मी. चलने को कहे तो बिना तकलीफ के चल देते हो !**

**रात्रिभोजनत्याग की बात यदि गुरु भगवंत कहे तो अनसुना कर देते हो और शरीर में infection की वजह से डोक्टर रात्रि को भोजन करने का ना कहे तो तुरंत मान जाते हो !**

**बाहर के अभक्ष्य पदार्थ न खाने की बात जब गुरु भगवंत कहे तब मन नहीं मानता पर जब शरीर में रोग पैदा होते है तब डोक्टर की**

**बात मन मारकर भी माननी ही पडती है !**

**किसी को पैसे देने का वक्त हो तब ठीक से जवाब नहीं देते किन्तु किसी से पैसे लेने का वक्त हो तब सर पर चढ जाते हो !**

**कार्य करने का अवसर हो तब दूर देशावर चले जाते हो और जब हार पहनने की बात हो तो स्टेज पर तुरंत हाजिर हो जाते हो !**

**पूजा की लाईन में कोई बीच में घुस जाता है तो चिल्लाते हो और कभी मौका मिलने पर स्वयं लाईन में घुस जाते हो तो खुश हो जाते हो !**

**हमारे आगेवाला जब भावों से परमात्मा की पूजा कर रहा हो तो पीछे से चिल्लाते रहते हो कि दूसरो को भी मौका दो और जब आप स्वयं भावों से पूजा कर रहे हो तब कोई और जल्दी से पूजा करने को कहे तो उसे भी चूप करते हो कि ''भाई ! कुछ शांति तो रखो । दिन में एक बार ही तो पूजा करनी है तो भाव से करें ना !''**

**चैत्यवंदन के समय गलती से किसीका पैर स्वस्तिक किया हो उस पाट को लग जाये तो चिल्लाते हो कि ''भाई ! देखकर चला करो । इतना बडा पाट भी नहीं दिखता तो कीडे-मकोडे जैसे जीवों की रक्षा कैसे करोगे ?'' और गलती से आपका ही पैर कहीं लग जाये और सामनेवाला वही बातें दोहरायें तो कहोगे कि ''इतना गुस्सा क्यों करते हो, इन्सान हुँ तो भूल तो हो जाती है ।''**

अब तक हमने मात्र पाप का ही पक्ष लिया है किन्तु अब धर्म का पक्ष लेना है । जब तक शरीर में शक्ति है तब तक धर्मप्रवृत्ति ही करनी है । प्राय: किसी कारणवश पापप्रवृत्ति करनी भी पडे तब भी पक्ष तो धर्म का ही स्वीकारना है । **मोक्ष का लक्ष्य और धर्म का पक्ष रखने पर किसी के बस की बात नहीं जो आपको संसार में भ्रमित कर सके ।**

जो जीव धर्म के पक्ष में हो पर कर्मवश पाप करता हो तब भी आँख में आँसु के साथ करेगा । वह परमात्मा से बातें करेगा कि **''हे भगवंत ! यह संसार बसाया यही भूल कर दी जिसके कारण अब दिन-रात पाप ही करने पडते है, प्रतिदिन छ: काय जीवों की विराधना करनी पडती है !** पूर्वकृत पापों से तो छुटकारा मिलता नहीं और नये पाप बंधते जा रहे है । हे प्रभु ! मेरी मुक्ति कब होगी ? आप ही राह बतायें...''

कुछ आत्मा तो ऐसे अहंकार में जीते है कि पाप करने के पश्चात् भी

उस पाप का स्वीकार करने तैयार नहीं होते । कोई व्यक्ति जमीनकन्द खा रहा था, तभी किसी ने उसे कहा कि ''भाई ! जमीनकन्द में अनंत जीव है । उसका भक्षण करने से उन अनंत जीवों की हिंसा होती है । इस हिंसा से पापबंध होता है और पापबंध से नरक में जाना पडता है ।'' तब जमीनकन्द खानेवाला व्यक्ति जवाब देता है कि ''सब स्वर्ग में ही जायेंगे तो नरक का क्या होगा ? इसलिए हमारे जैसों के लिए ही तो नरक है ।''

एक जमीनकन्द खाने का पाप और उपर से धर्म का मजाक भी करना । कम से कम इतना तो तय करो की पाप करने के पश्चात् पाप का पक्षपात ना किया जाये ।

हमारे गुरुदेव कई बार गोचरी का उपयोग करने से पूर्व कहते थे कि ''आहार करना गलत है । भूख लगती है तो भोजन की जरुरत होती है, भोजन हेतु गोचरी जाना पडता है, गोचरी का उपयोग करना पडता है और उसमें भी आसक्ति के दोष, उपयोग के पश्चात् भी निहारक्रिया हेतु जाना पडता है । इस तरह अत्यंत समय की बरबादी होती है । अनेक दोषों का सेवन भोजन की वजह से होता है । बिना भोजन के शरीर रह सकता तो उत्तम साधना हो सकती और जीवनभर उस साधना में रक्त रह पाते । इसलिए आहार करना गलत है ।'' इस प्रकार भोजन करने के बावजुद उसका पक्ष नहीं था । हमें भी हमारे जीवन में यही कार्य करना है ।

**'पाप का पक्षपात जीवन को कलुषित बनाता है,**
**पुण्य का पक्षपात जीवन को मधुर बनाता है ।'**

## (५) प्रशंसा

***'पाप की प्रशंसा दुर्मति और दुर्गति प्रदान करती है,***
***पुण्य की प्रशंसा सन्मति और सद्गति प्रदान करती है ।'***

प्रशंसा वह चीज है जो सर्व को प्रिय है । नन्हा सा बालक जब पहली बार मीठी-मीठी भाषा में बात करता है तब हर कोई खुश हो जाता है । वह बालक भले ही मात्र एक शब्द बोल रहा हो फिर भी बार-बार वही शब्द सुनने का मन होता है । उस बालक को जैसे जैसे प्रोत्साहन प्राप्त होता है, जैसे जैसे उस कार्य की प्रशंसा सुनता है वैसे वैसे वह कार्य ज्यादातर करने लगता है ।

संगीतकार भी गीत गाते समय बीच-बीच में उसके सहकलाकारों की प्रशंसा करता रहता है, जिससे उनको भी संगीत बजाने का उत्साह प्राप्त होता है । किसी व्यक्ति के दान की प्रशंसा करने पर उसे दान करते रहने का मन होगा । किसी के तप की प्रशंसा करने पर उसे तप करते रहने का मन होगा । वैसे ही किसीकी चोरी करने पर उसकी प्रशंसा की तो उसे चोरी करने का मन बनेगा, खूनी की प्रशंसा करने पर उसे खून करते रहने का मन बनेगा ।

**'सत्कार्य की प्रशंसा मानवी को सत्कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करती है, दुष्कार्य की प्रशंसा मानवी को दुष्कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करती है ।'**

यह हुई सामनेवाले व्यक्ति के फायदे-नुकसान की बात । अब, हमें क्या फायदा-नुकसान होता है इसकी बात करेंगे ।

पाप की प्रवृत्ति से भी ज्यादा पाप की प्रशंसा खतरनाक है क्योंकि पाप की प्रवृत्ति से **short time** नुकसान होता है जबकि पाप की प्रशंसा के द्वारा **long time** नुकसान होता है । क्योंकि पाप की प्रशंसा भारी कर्मो का बंध करवा सकती है ।

देखा ना ! सामनेवाले को कैसे बोतल में उतार दिया ।

मैंने कैसा श्रेष्ठ भोजन बनाया कि सब लोग ऊँगलीया खा गये ।

मैंने कैसी बेटींग की, सामनेवाले को परास्त कर दिया ।

ऐसी अनेक बातें है जिसमें निरर्थक पाप की प्रशंसा की जाती है ।

याद करो **महाराजा श्रेणीक** को ! सम्यक्त्व प्राप्ति के पूर्व शिकार के शौखीन थे । जंगल में शिकार करने गये और तीर चलाया जो गर्भवती हीरन को लगा । हीरन तत्काल मर गई और उसके पेट में जो गर्भ था वहीं पर तीर लगने से वह निर्दोष जीव भी तुरंत मर गया ।

श्रेणीक राजा उस हीरन के पास आये और दोनों जीवों की मृत्यु देखकर अत्यंत प्रफुल्लित हो गये, नृत्य करने लगे और बोल उठे कि "मेरे जैसा शूरवीर कोई नहीं है जो एक तीर से दो निशान लगाता हो ।" पाप तो किया और पाप की प्रशंसा भी की ।

कर्मराजा भी कहते है कि "अब तुं भी सजा भुगत ।" तत्क्षण आयुष्य का बंध हुआ और नरकायुष्य बाँधा । पश्चात् प्रभु वीर के मुख से सुना कि "तुम नरकगामी हो", यह सुनकर नरक टालने के उपाय पूछने लगे । प्रभु

ने कहा कि ''यह निकाचित कर्म है अतः उसको भुगतना ही पडेगा।''

फिर भी उन्हें संतोष हो इसलिए प्रभु ने तीन मार्ग बताये।

(१) पुणीया श्रावक के एक सामायिक का फल ले आये तो...

(२) कपिला दासी मुनि भगवंत को सुपात्रदान दे तो...

(३) कालसौरीक कसाई एक दिन के लिए ५०० महिष की हत्या बंद कर दे तो...

तुम्हारी नरक टल सकती है।

तीनों उपाय देखे पर कर्मसत्ता के आगे किसीकी नहीं चलती। भले ही वह कोई भिक्षुक हो या फिर मगधाधिपति सम्राट महाराजा श्रेणीक हो ! निष्फलता ही मिली और जो भविष्य में अनागत चौबिसी के पद्मनाभ नाम से तीर्थंकर होनेवाले है वही जीव वर्तमान में नरक की भयावह वेदना सहन कर रहे है। मात्र एक ही भूल, शिकार किया और पश्चात् उस पाप की प्रशंसा भी की !

हम भी दिनभर अनेक पापी प्रवृत्ति करते है। उसमें से जितना भी मुमकीन हो, बचने की कोशिश करें। गलती से भी किसी पाप की प्रशंसा ना हो इसका ध्यान रखे। हमारी दृष्टि को मात्र इस लोक तक सिमित ना रखते हुए दीर्घदृष्टा बनना है। एक भी प्रवृत्ति ऐसी नहीं होनी चाहिये जिसकी वजह से हमें दुर्गति में भटकना पडे।

कई बार यह भी होता है की हम स्वयं पाप नहीं करते किन्तु अन्यों के पाप की प्रशंसा करके कर्म का भार ग्रहण कर लेते है।

''वाह ! भोजन तो अत्यंत **Tasty** बनाया है।'' भोजन बनाने का कार्य ना करने के बावजुद उसकी प्रशंसा करके कर्मो का भार लिया जाता है।

''उन्होंने बंगला बहुत ही शानदार बनाया है, उनका **Furniture,** गाडी, **Bedroom, Show-case** अत्यंत सुंदर है। पाप ना करने के बावजुद पाप की प्रशंसा करने की वजह से कर्मबंध हो गया।''

बस, आज से ही तय करो कि कभी भी पाप की प्रशंसा नहीं करेंगे।

**'पाप की प्रशंसा दुःख देती है और सुख का नाश करती है,**

**पुण्य की प्रशंसा सुख देती है और दुःख का नाश करती है ।'**

प्रशंसा करनी ही है तो किसी के सत्कार्य की करो । शास्त्र में तो यह भी कहा गया है कि ''जो अन्य के सत्कार्य की प्रशंसा नहीं करता उसे अतिचार लगता है ।'' अतः कोई भी अल्प सत्कार्य की प्रशंसा करने से पीछे ना हटे ।

किसी जीव ने छोटी उम्र में ही आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का नियम लिया है तो उसके सत्कार्य की प्रशंसा करो । ''भगवंत ! मैं कैसा पापी जीव हुँ । जीवन बीत गया फिर भी इन तुच्छ विषयसुखों से पीछे नहीं हट रहा और इस आत्मा ने युवावस्था में ही यह सत्त्व अपनाया है । धन्यवाद है ऐसे व्रतधारीओं को ।''

इस प्रकार उनके गुणों की प्रशंसा करने से हमारे भीतर भी व्रतपालन की शक्ति पैदा होती है । हमारे भीतर भी सत्त्व का संचार होता है और मन मजबूत बनता है ।

**बलदेवमुनि !** गोचरी हेतु गये और उनके रुप पर मोहित हो कर पनीहारी ने पानी भरने हेतु रस्सी घडे में बाँधने के बदले अपने ही पुत्र के गले में बाँध दी । मुनि ने उसको रोका और स्व-रुप के कारण अनर्थ घटित होने की संभावना देखकर सीधे जंगल में ही चले गये ।

साधना के प्रभाव से जंगल के पशु अहिंसक बन गये और उनके पास सिंह, हिरन, बिल्ली, मूषक आदि तमाम जीव बैठ जाते फिर भी किसी जीव को कोई भय नहीं था । एक मृग उनकी सेवा में तत्पर रहता और वन में आनेवाले मुसाफिरों के समीप मुनिवर को ले जाता । मुनिवर वहाँ से भिक्षा ग्रहण कर लेते । इस प्रकार संयमजीवन का पालन कर रहे थे ।

किसी दिन वहाँ कोई रथकार वन में काष्ठ ग्रहण करने आया । मृग मुनिवर को वहाँ ले कर गया । रथकार पेड की डालीयाँ काट रहा था और मुनिवर को देखते ही नीचे उतरकर मुनि भगवंत को आहार वोहरने हेतु विनंती करने लगा । मुनिवर ने भी उसकी विनंती स्वीकारी और रथकार मुनिवर को गोचरी वोहराने लगा । यह दृश्य देखकर वह मृग मन ही मन रथकार के सत्कार्य की प्रशंसा करने लगा कि ''धन्य है इस रथकार को ! जो मुनि भगवंत को सुपात्रदान दे कर अपने जीवन को धन्य बना रहा है ।''

तीनों जीव शुभभाव में थे और अचानक उपर से आधी कटी हुई पेड

की विशाल डाली गिरी और तीनों की मृत्यु हो गई । तीनों आत्मा पाँचवे देवलोक में उत्पन्न हुए ।

तभी तो कहा गया है कि,

**''करण करावण अनुमोदन, सरिखा फल नीपजावे''**

यदि शक्ति है तो सत्कार्य स्वयं ही करना चाहिये, जिससे भावो में सतत वृद्धि होती रहे । मासक्षमण करने की क्षमता हो तो स्वयं मासक्षमण करना ही चाहिये ।

पर अगर शरीर का साथ नहीं है तो जो आत्मा मासक्षमण कर रहे हो उन्हें अनुकूलता प्रदान करनी चाहिये । उसके गृह की जिम्मेदारीओं का वहन करना चाहिये ताकि गृहकार्यों से उसे मुक्ति मिल जाये । उनकी सेवा करनी चाहिये । उसके परिवार की जिम्मेदारीयाँ जैसेकि भोजन, अन्य कार्य, बालक का अभ्यास आदि तमाम कार्य स्वयं करने चाहिये जिसके कारण वह आत्मा निश्चिंत बनकर मासक्षमण का तप कर सके ।

अगर समय की प्रतिकूलता से वह भी ना कर सको तो उन तपस्वी आत्मा की खूब अनुमोदना तो अवश्य करनी ही चाहिये । ''मैं कैसा अभागी हुँ, जो तप ही नहीं कर सकता । एक-एक माह तक आहार त्याग करनेवाले उन तपस्वीओं को धन्यवाद है । मुझे भी जीवन में इस प्रकार तप करने की शक्ति मिले ।''

समेतशिखरजी चातुर्मास में १० मासक्षमण की तपस्या हो रही थी और गुरुदेव के परम भक्त गोरेगांव के **किरणभाई** को विचार आया कि ''मेरे से तप तो नहीं होता पर मुझे इन तपस्वीओं की अनुमोदना तो करनी ही है ।'' यह सोचकर उन्होंने तमाम तपस्वीओं का सुवर्णचेन से बहुमान किया ।

मलाड के एक भाई ने संपुर्ण चातुर्मास में मौनव्रत धारण किया था, जब सभा के समक्ष उनका बहुमान हुआ तो संपूर्ण होल अनुमोदना के नाद से गुँज उठा । क्यों ? कारण यही था कि ''हम १ दिन भी बोले बिना नहीं रह सकते तो यह आत्मा देढ माह से संपूर्ण मौन का पालन कर रहे है । धन्य है उन व्रतधारी श्रावक को ।'' इस भावना के साथ सभाजनों ने अभिवादन किया ।

अनुमोदना करने हेतु एक पैसे का भी खर्च नहीं होता और लाभ भी

उतना ही मिलता है, तो ऐसे अनुमोदना के अवसर कभी ना छोडे । बनिया तो वही है जो अवसर ना गँवाये, तो अब आप भी इस प्रकार सत्कार्यों की प्रशंसा करने द्वारा जीवन को जाज्वल्यमान बनाये ।

**'पुण्य की अनुमोदना हमें तलहटी से शिखर तह पहुँचाती है,**
**पाप की अनुमोदना हमें शिखर से खाई तक पहुँचाती है ।'**

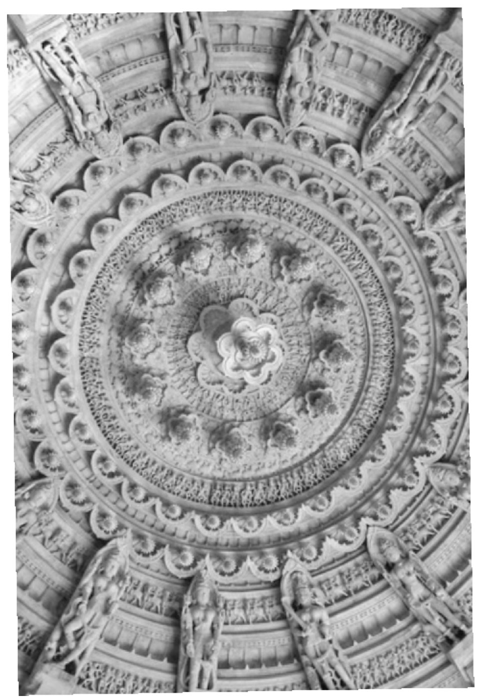

## आत्मा की Medicines- औषधि

*आँख आँसु बहाती है तब पीड़ा कम होती है*
*अंतर आँसु बहाता है तब पाप कम होते है*

**(१) पश्चाताप**

**(२) प्रायश्चित्त**

**(३) प्रत्याख्यान**

# ***श्वानवृत्ति या सिंहवृत्ति ?***

पीडा आते ही आँख से आँसु बहने लगते है । आँख में आँसु आते ही अंदर की पीडा अश्रु के द्वारा बाहर निकल जाती है । आसपास के लोग मदद करने आ जाते है । इस प्रकार आँख आँसु बहाती है तब हमारी पीडा कम हो जाती है ।

**'पीडा को दूर करने की वृत्ति अर्थात् श्वानवृत्ति,**
**पाप को दूर करने की वृत्ति अर्थात् सिंहवृत्ति'**

अब तक हमने जीवन में श्वानवृत्ति ही अपनाई है । श्वान को यदि पथ्थर मारा जाये तो श्वान उस पथ्थर को ही काट लेता है, जबकि सिंह को पथ्थर या तीर मारा जाये तो सिंह पथ्थर या तीर की तरफ नजर नहीं करता बल्कि वह पथ्थर या तीर जिस दिशा से आया हो उस दिशा में जा कर व्यक्ति को खत्म करता है । दुःख को दूर करने की वृत्ति अर्थात् श्वानवृत्ति, पर दुःख किसने दिया ? हमारे स्वयं के पापो ने । तो पापों को दूर करने की वृत्ति अर्थात् सिंहवृत्ति । उन पापों को दूर करने हेतु पश्चाताप, प्रायश्चित्त और प्रत्याख्यान यह तीनों गुण आत्मसात् करने होंगे । तभी तो कहा है कि ''अंतर आँसु बहाते है तब पाप धुल जाते है''

तो आईये, तीनों गुणों को जानकर...पालन कर के... जीवन को सफल बनाते है ।

## (१) पश्चाताप

***जो कभी भूल न करे उसे भगवान कहते है ।***
***जो भूल करके भूल जाये उसे नादान कहते है ।।***
***जो भूल करके कुछ सीख ले उसे इन्सान कहते है ।***
***जो भूल करके मुस्कुराये उसे शैतान कहते है ।।***

जो जीवन में एक भी भूल ना करें वह भगवान है क्योंकि उन्हें संपूर्णज्ञान है, वीतराग है, राग-द्वेष पर विजय प्राप्त किया है । संसार की कोई आसक्ति नहीं है । मात्र स्वरुप रमणता में मग्न है । आत्मसुख का आनंद प्राप्त कर रहे है । हमारे जैसे संसारी जीव अज्ञानतावश भूल किये बिना रह नहीं पाते ।

जो भूल करने के पश्चात् भूल जाते है वह नादान अर्थात् नन्हें बालक के समान है। नन्हा बालक सुबह जिसके साथ लडाई करेगा शाम को उसी के साथ खेलता दिखेगा। हमें भी आश्चर्य होता है कि सुबह जो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की तरह एकदूजे के साथ लड रहे थे वही बालक शाम को एकदूजे के साथ बैठकर खेल रहे है, भोजन कर रहे है, नृत्य कर रहे है क्योंकि वह नादान है। भूल करने के पश्चात् वह उस भूल को ही भूल जाते है।

जो भूल करने के बाद उस भूल से कुछ शिक्षा ग्रहण करते है, बोध ग्रहण करते है, सत्यज्ञान प्राप्त करते है वह इन्सान है, मानव है। क्योंकि मानवी के पास समझ है। सही-गलत क्या है ? हितकारी-अहितकारी क्या है ? यह तमाम विचार मानव कर सकता है।

भेड के झुंड में सर्वप्रथम भेड जैसे चलती है वैसे ही उसके पीछे अन्य तमाम भेड चलती है। प्रथम भेड सही मार्ग पर चल रही हो तो अन्य तमाम भेड भी उसके पीछे सही मार्ग पर चलती है और प्रथम भेड गलत मार्ग पर जा रही हो तो अन्य तमाम भेड भी उसके पीछे गलत मार्ग का चयन ही करती है। प्रथम भेड यदि किसी गड्ढे में गिर जाये तो अन्य तमाम भेड भी उसके पीछे गिर जाती है। जबकि मानवी के पास स्वयं की समझशक्ति है। यदि उसके आगे कोई नीचे गिर जाता है तो वह स्वयं समझदारी से आगे बढता है।

यदि किसी का पैर केले के छिल्के पर आने से वह गिर जाता है, उसकी हड्डी टूट जाती है तो वह गलती से भी दूसरी बार केले के छिल्के पर पैर नहीं रखेगा।

एकबार गरम दूध पीने से मुँह जल गया तो दूसरी बार छाश भी फूंक लगाकर पीयेगा।

एकबार छोटी भूल की वजह से भी परीक्षा में **fail** हुआ तो दूसरी बार वह जागृत हो जायेगा।

व्यापार में नुकसान हो गया तो अब दूसरी बार नुकसान ना हो इसलिए तमाम प्रयत्न करके रहेगा।

एकबार ताला लगाकर बाहर गया और चाबी कहीं खो गई तो अब दूसरी बार चाबी को की-चेईन में जोडकर अच्छे से सम्हाल कर रखेगा।

एकबार भोजन में नमक ज्यादा हो गया तो दूसरी बार भोजन का

स्वाद चखने के पश्चात् ही आगे बढेगा ।

एकबार रोटी जल गई तो दूसरी बार ध्यानपूर्वक रसोई बनायेगा ।

एकबार काच का ग्लास हाथ से छूट गया, काच का झुमर साफ करते वक्त टूट गया, काच के कप-प्लेट हाथ से छूट गये तो दूसरी बार ज्यादा ध्यान रखकर कार्य करेगा ।

क्योंकि इन तमाम नुकसानों की जानकारी उसे है । मानव के पास बुद्धि है, समझ है, विचारशक्ति है तभी तो एकबार भूल करने के पश्चात् वही भूल दूसरी बार नहीं करता । यदि भूलों का पुनरावर्तन करता रहे तो मानव और पशु के बीच क्या फर्क रहा ?

**'भूल होना सहज है, भूल को सुधारना हमारा फर्ज है,**
**जो इस फर्ज के लिये नासमज है, उसके सर पर सदा कर्मराज का कर्ज है ।'**

''मानव मात्र भूल के पात्र'' भूल हो गई, कोई बात नहीं । भूल करने से पूर्व ध्यान रखने की आवश्यकता थी । वहाँ चूक हो गई पर अब जागृत बन जाना है कि वह भूल अब जीवन में दोबारा ना हो ।

एक बार कर्जा बढ जाये और आप कर्ज के लिये लापरवाह बन जाओगे तो वह कर्ज बढता ही जायेगा और मानवी सदा कर्ज के तले दबा हुआ रहता है । मात्र एक छोटी भूल करने पर भी उसके परिणाम आजीवन भुगतने पडते है । हम तो इस मानवभव में अनेक बडी गलतीयाँ कर रहे है, तो उसका परिणाम क्या होगा ?

वस्त्र में हुआ छोटा छेद यदि सही कर दिया जाये तो अन्य अनेक छोटे छेद होने से रुक जाते है किन्तु उस छेद की उपेक्षा की जाये तो फटे हुए वस्त्र ही पहनने पडेंगे । वैसे जीवनरुपी वस्त्र में हुए पापरुपी छोटे छेद को पश्चाताप के माध्यम से सही कर देने पर नये पाप होने से रुक जायेंगे किन्तु यदि उस पाप की उपेक्षा की गई तो दुःख के अलावा अन्य कोई मार्ग बाकी नहीं रहेगा ।

### Prevention is better than cuare

रोग होने के पश्चात् उसका इलाज करने से बेहतर है रोग ना आये उस बात का ख्याल रखा जायें । वैसे ही पाप होने के बाद उसका पश्चाताप करने

से बेहतर है पाप ही ना करें ।

हर जन्म में हमें शरीर, इन्द्रिय, इन्द्रिय के विषय प्राप्त हुए । इन इन्द्रियों के विषयों में राग, आसक्ति करना या नहीं करना, वह हमारे ही हाथ में था । फिर भी हमने हर जन्म में इन्द्रियों के विषयो में आसक्ति करके पापों के पहाड ही जमा किये है और भवभ्रमण बढाते ही गये ।

अब इस भव में वही भूल दोहरानी नहीं है । एक ही खड्डे में अब दूसरी बार नहीं गिरना है । उन पापों से बचने का, पापों को खत्म करने का सरल उपाय है पापों का पश्चाताप ।

हमारे द्वारा जो भी पाप हुए है उनका पश्चाताप ।

## Something is better than nothing

कुछ ना करने से कुछ करना ही बेहतर है । अतः हर रात कम से कम १० मिनिट दिनभर जो भी पाप हुए है उन्हें याद करते हुए क्षमा याचना करे कि ''हे भगवंत ! प्रातः काल उठने से रात्रि को सोने तक प्रायः तमाम प्रवृत्ति पापमय ही करता हुँ । कच्चे नमक का उपयोग करने से पृथ्वीकाय की विराधना ! सुबह उठकर चेहरे को साफ करने हेतु, ब्रश, स्नान आदि के द्वारा अपकाय जीवों की हिंसा ! रसोई, लाईट **mobile, computer, t.v.** आदि के द्वारा तेउकाय जीवों की हिंसा ! **A.C., Cooler,** पंखा आदि के द्वारा वाउकाय जीवों की हिंसा ! फल, सब्जीयाँ, पुष्प, घास पर चलना आदि कार्यो द्वारा वनस्पतिकाय जीवों की हिंसा ! पैरों तले कीडे-मकोडे आदि को कुचलना, जीवोत्पत्ति ना हो इसलिए दवाओं का उपयोग, चूहे को पकडने हेतु पिंजरे का उपयोग, **good night** चालु करके मच्छरों की हिंसा, इस प्रकार त्रसकाय जीवों की हिंसा''

''हे प्रभु ! संपूर्ण दिवस इस प्रकार पापों की परंपरा चालु ही रहती है । मेरे एक जीव के कारण न जाने कितने जीवों की हिंसा हो जाती है । मेरे यह पाप कौन से भव में टूट पायेंगे ? **प्रभु मुझे माफ करो, मेरी भूलो को साफ करो ।**'' इस प्रकार प्रतिदिन कोमल हृदय से शुद्ध भावों से पापों का पश्चाताप होना चाहिये । पाप का पश्चाताप भी हमारे अनेक पापों को समाप्त कर देता है ।

याद है **अर्णिकापुत्राचार्य !** पुष्पचूला केवली के मुख से जाना कि

गंगा नदी को पार करते वक्त केवलज्ञान की प्राप्ति होगी । वृद्ध उम्र थी, शरीर में थोडा सा चलने की भी शक्ति नहीं थी तब भी केवलज्ञानी की बात सुनकर शरीर में शक्ति का संचार किया और गंगा नदी के किनारे पहुँचे । नाँव में बैठे और नाँव नदी में आगे बढने लगी किन्तु नाँव में जहाँ अर्णिकापुत्राचार्य बैठे थे वह भाग झुकने लगा । नाँव में बैठे लोगों ने सोचा कि ''यह साधु स्वयं तो डुबेगा और हमें भी डुबो देगा'' । स्वजीव रक्षा हेतु तमाम लोगों ने मिलकर आचार्य को उठाकर नदी में फेंक दिया ।

तत्क्षण पूर्वभव की अपमानीत रानी जो इस भव में देवी बनी हुई थी उसने अपना बदला पूर्ण करने हेतु आचार्य भगवंत के पेट में त्रिशूल लगा दिया । आचार्य भगवंत त्रिशूल के उपर लटक रहे है और उनके पेट से खून की धारा बहने लगी । वह धारा नीचे नदी के पानी में गिर रही है तभी आचार्य भगवंत की आँखो में भी अश्रुधारा बहने लगी ।

त्रिशूल की वेदना से आँसु नहीं बह रहे बल्कि खून की धारा पानी में गिरने से अपकाय जीवों की जो हिंसा हो रही है, उन जीवों को जो वेदना हो रही है वह देखने पर आचार्य भगवंत की आँखो से अश्रुधारा बह रही है । विचारधारा आगे बढ रही है । ''धिक्कार है मुझे जो मरते मरते भी इन अपकाय जीवों की हिंसा कर रहा हुँ'' । इस प्रकार पापों का पश्चाताप करते करते केवलज्ञान उत्पन्न होता है और तुरंत मोक्षगमन करते है । यह ताकत है पापों के पश्चाताप की ।

**'मरते मरते भी अन्य जीवों का विचार करनेवाले आचार्यश्री को धन्यवाद है,**

**जीते जी भी अन्य जीवों का विचार न करनेवाले हमें धिक्कार है ।'**

स्वयं के दुःखो पर रोनेवाले तो अनेक है किन्तु स्वयं के पापों पर रोनेवाले तो कोई विरल आत्मा ही होते है । मरते मरते भी यदि आचार्यश्री अन्य जीवों का विचार कर सकते है तो जीते जी क्या हम अन्य जीवों के लिये कोई विचार नहीं कर सकते ?

मात्र इस पाप के पश्चाताप के द्वारा आचार्यश्री ने आत्मकल्याण किया तो हमारा आत्मकल्याण नहीं हो सकता क्या ?

हमें भी जीवन में इस प्रकार पापों का पश्चाताप करने की

आवश्यकता है, जो एक पल में भी अनेक भवों में उपार्जन किये गये कर्मो का सर्वनाश करने में समर्थ है । २४ घंटे में से मात्र २४ मिनिट की आवश्यकता है इस भाव को प्रगट करने हेतु । आँखे बंद करके दिनभर किये तमाम पापों को याद करके माफी माँगनी है ।

हृदय के शुद्ध भावपूर्वक किया हुआ पाप का पश्चाताप संसार के कीचड में फँसे हुए आत्मा को स्नान करवाकर शुद्ध बनाता है, निर्मल बनाता है ।

याद रखें,

**'पापों का पश्चाताप हमारे पापों को साफ करता है,**
**पुण्य का पश्चाताप हमारे पुण्य को साफ करता है ।'**

पश्चाताप हमेशा पापों का होता है, पुण्य का नहीं । कईबार कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते है जिनको सत्कार्य करने के पश्चात् उसका पश्चाताप होता है ।

जैसेकि, मैंने जल्दबाजी करके चडावा ग्रहण कर लिया । कुछ इन्तजार किया होता तो शायद सस्ते में ही लाभ मिल जाता या सिद्धचक्र पूजन में ज्यादा देर बैठकर गलती कर दी, अगर १० मिनिट में ही निकल गया होता तो जीवदया में पैसे लिखवाने की नौबत ही ना आती । भूल कर दी !

मैं व्यर्थ ही पूजा करने लाईन में खडा रहा, मूलनायक के बदले आसपास के प्रतिमाजी की पूजा कर ली होती तो भोजनशाला में समय पर पहुँच तो जाता । मूलनायक की पूजा करने में रुक गया और भोजन का त्याग करना पडा !

उपाश्रय गुरु भगवंत को वंदन करके गया तो गलती ही कर दी । वंदन करने गया तभी तो उन्होंने रात्रिभोजन त्याग, टी.वी. त्याग का नियम दे दिया । व्यर्थ ही फँस गया !

मैं भी क्यों भोजनगृह में भोजन परोसने लग गया । यदि मैं स्वयं समय पर भोजन करने बैठ गया होता तो मिष्टान्न भी मिल जाता, मन भर के खा लेता !

आज आयंबिल, उपवास किया तभी तो सरदर्द सहन करना पड रह है, अशक्ति भी महसुस हो रही है । आयंबिल, उपवास करके गलत किया !

इस प्रकार अनेक गलत विचार हम कर लेते है । सत्कार्य करने के बाद पश्चाताप क्यों करना ? सत्कार्य की तो प्रशंसा ही होती है, पश्चाताप नहीं ।

याद है ना **मम्मण सेठ !** पूर्वभव में अत्यंत मनोहर स्वादिष्ट केसरीया मोदक प्रभावना में प्राप्त हुआ था । गुरु भगवंत गोचरी हेतु पधारे । उत्कृष्ट भाव से मोदक वोहराया । बाद में पडोशी ने पूछा कि "मोदक का स्वाद चखा ?" मम्मण ने कहा कि "नहीं, मैंने तो गुरु भगवंत को वोहरा दिया ।" पडोशी बोला "तुं भी मूरख का सरदार है, इतना स्वादिष्ट सुंदर केसरीया मोदक तुने चखा भी नहीं और मुनि को वोहरा दिया ।" तब मोदक के दो-तीन दाने जो बचे हुए थे वह मम्मण ने चखे । भारी राग उत्पन्न हुआ ।

हाय ! मेरा मोदक ! चिल्लाकर तुरंत गुरु भगवंत के पीछे भागा और उनको पकडकर कहने लगा "गुरुदेव ! मुझे मेरा मोदक पुनः प्रदान कर दो, मैंने गलती से आपको वोहरा दिया ।"

गुरुदेव ने कहा "एक बार वस्तु ग्रहण करने के पश्चात् अब हम उसे लौटा नहीं सकते" । मम्मण उनकी कोई बात नहीं सुनता, उसे तो बस अपना मोदक ही चाहिये । गुरुदेव भी प्रबुद्ध और गंभीर थे, परिस्थिति को समझ गये । उन्होंने जाना कि यह मम्मण का जीव मोदक के बिना शांत नहीं बनेगा और मम्मण मोदक ले कर ही मानेगा । उन्होंने तुरंत पात्र बाहर निकाला और धूल में उलटा करके मोदक को धूल में मिला दिया ।

मम्मण तो वहीं चिल्लाता रहा "हाय ! मेरा मोदक... हाय ! मेरा मोदक..." क्या हुआ ? स्वयं भी मोदक नहीं खाया और ना ही गुरुदेव को उपयोग करने दिया । स्वयं ने ही किये सुपात्रदान का पश्चाताप किया । मृत्यु पा कर मम्मण के भव में आता है ।

सुपात्र दान के प्रभाव से अमाप संपत्ति प्राप्त होती है पर उसका सुख प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि पूर्व भव में मुनिवर से मोदक पुनः छिनना चाहता था । अमाप संपत्ति होने के बावजुद भोजन में मात्र तेल और कठोल ही खाता है । सब्जी, फल आदि खाने पर संपत्ति कम हो जायेगी ना ? इसी डर के मारे भोजन भी ठीक से नहीं करता । एक ही वस्त्र अनेक वर्ष तक पहनता है । उसके घर दो बैल थे, उनमें से एक बैल संपूर्ण और दूसरा बैल उसके सींग के अलावा संपूर्ण रत्न से श्रृंगारीत थे ।

उस सींग को रत्न से पूर्ण करने हेतु कडी ठंड में भी नदी किनारे जा

कर लकडीया प्राप्त करके उसे बेचने का मजदूरों वाला कार्य करता था। इस प्रकार धन की अपार लालसा में मरकर ७वीं नरक में उत्पन्न हुआ। अमाप संपत्ति होने के बावजुद उसका सुख प्राप्त किये बिना ही ७वी नरक में गया। पतन का कारण यही था कि सुकृत करने के बाद उसी सुकृत का पश्चाताप किया।

हमें भी ध्यान रखना है कि हमारे जीवन में ऐसी भूल गलती से भी ना हो। हमारे पापों के सामने हमारे सुकृतो की संख्या अल्प है, नहिवत् है और उन सुकृतों को भी हम पश्चाताप के द्वारा खत्म कर देंगे तो हमारे पास क्या बचेगा ?

अतः जीवन को सफल बनाने, दुर्गति से बचने, संसार का भ्रमण रोकने और आत्मा की शुद्धि करने दो कार्य आज से ही शुरु करें

**'जीवन में किये हुए पापों का पश्चाताप**
**जीवन में किये हुए सुकृतो की प्रशंसा'**

**'पापों का पश्चाताप पाप को नष्ट करें और प्रभु से मिलन करवाये,**
**पुण्य का पश्चाताप पुण्य को नष्ट करें और पीडा प्रदान करवाये।'**

## (२) प्रायश्चित

***'लोहा भारी है तो समंदर में डुब जाता है,***
***काष्ठ हल्का है तो समंदर में तैर जाता है,***
***पापों से भारी जीव संसार में डुब जाता है,***
***प्रायश्चित से हल्का जीव संसार से तैर जाता है।'***

प्रायश्चित का अर्थ है जीवन में की गई भूलों को गीतार्थ गुरु भगवंत के समक्ष प्रगट करना और बदले में गुरु भगवंत जो भी आराधना करने हेतु कहे वह पूर्ण करना। जैन शासन में ''**भव आलोचना**'' नामक शब्द है। इस भव के दौरान जो भी पाप हुए है उनको याद करके गुरु भगवंत के समक्ष प्रगट करना है।

छः काय जीव के रक्षक, अष्टप्रवचन माता के पालक, पंचमहाव्रतधारी श्रमण-श्रमणी भगवंत ! जो भी उच्च आचारों का पालन करते है और सुंदर संयम जीवन पालन में कोई स्खलना, भूल कर बैठे तो प्रतिवर्ष

उन भूलों को याद करके गीतार्थ गुरु भगवंत से आलोचना ग्रहण करते है ।

इस प्रकार उत्तम संयम जीवन पालन करनेवाले महात्मा भी छोटे-छोटे दोष की आलोचना ग्रहण करते है तो संसार के कीचड में फँसनेवाले आत्मा को आलोचना ले कर अवश्य शुद्ध बनना ही चाहिये ।

याद करो **अईमुत्ता मुनि** को ! गौतम स्वामी उनके गृह गोचरी हेतु पधारे तब उन्होंने कहा कि "मैं भी आपके जैसा बनना चाहता हुँ ।" माता-पिता की आज्ञा प्राप्त करके चारित्र ग्रहण किया । किसी दिन अईमुत्ता मुनि निहार अर्थे बाहर गये थे, मार्ग में छोटी उम्र के बालक छोटे से तालाब में कागज की नाँव बनाकर पानी में तैरा रहे थे ।

अईमुत्ता मुनि भी बालमुनि ही थे, बालसहज स्वभाव से उन्हें भी इस प्रकार खेलने का मन हो गया । उन्होंने उनकी तरपणी को पानी में तैरने हेतु रख दिया, तरपणी पानी में तैरने लगी । अन्य तमाम बालक भी खुश हो गये । वहीं किसी बडे गुरु भगवंत ने यह दृश्य देखा । उपाश्रय में पधारे और प्रभु महावीर स्वामी को तमाम बात कही ।

प्रभु वीर ने बालमुनि को कहा कि "हमने चारित्र ग्रहण किया है और चारित्रधर आत्मा इस प्रकार कच्चे सचित्त पानी को नहीं छु सकते । तरपणी को कच्चे पानी में रखने से अपकाय जीवों की विराधना होती है । आपके द्वारा यह जो भी विराधना हुई है उसके प्रायश्चित स्वरुप "इरियावहियं" करें ।" बालमुनि भी तुरंत मन में पश्चाताप के साथ प्रभु की आज्ञा को मानते हुए इरियावहियं क्रिया करने लगे । इरियावहियं क्रिया करते करते मन में अपकाय जीवों की क्षमा याचना करने लगे ।

"हे अपकाय जीवों ! मेरे द्वारा आपकी विराधना हुई है । मुझे क्षमा करें ।" इस प्रकार प्रायश्चित करते करते अईमुत्ता मुनि को तत्समय केवलज्ञान प्रगट हुआ । यह ताकत है प्रायश्चित की ।

**'पापों का प्रायश्चित संसाररुपी कैद की समाप्ति करवाता है,**
**पापों का प्रायश्चित मोक्षरुपी महल की प्राप्ति करवाता है ।'**

मात्र एक छोटी सी पापक्रिया की और परमात्मा द्वारा प्रदत्त प्रायश्चित का भावपूर्वक पालन करते हुए आत्मकल्याण कर लिया । यदि हमें भी आत्मकल्याण करना है तो प्रायश्चित का स्वीकार करना ही होगा । जो भी पाप

जीवन में किये है उनको किसी नोटबुक में लिख दो और अवसर प्राप्त होने पर गीतार्थ गुरु भगवंत से प्रायश्चित ग्रहण करके आत्मा को भारमुक्त बना दो ।

जैसे जैसे हमारे पाप बढते जायेंगे वैसे वैसे प्रायश्चित भी बढता ही जायेगा । अत: जिन्हें मोक्ष की कामना है, जल्द से जल्द पापमुक्त होना है उन्हें पाप कम करने पडेंगे और किये हुए पापों का प्रायश्चित करना ही पडेगा । एक तरफ प्रायश्चित करते रहोगे और दूसरी तरफ अमाप पाप चालु रखोगे तो इस चक्रव्यूह से कब छूटकारा मिलेगा ?

एक व्यक्ति प्रतिदिन १०० रुपये कमाता है और २०० का खर्च करता है तो वह व्यक्ति कर्ज से कभी मुक्त हो पायेगा क्या ?

कोई व्यक्ति अपने इष्ट स्थान पर पहुँचने हेतु ४ कदम आगे बढता है और ५ कदम पीछे जाता है तो क्या वह व्यक्ति कभी अपने इष्ट स्थान तक पहुँच सकेगा ?

कभी नहीं । क्योंकि लाभ से ज्यादा नुकसान हो, यही प्रयत्न वह कर रहा है । अब तक हमने भी संसार में रहकर इस प्रकार विपरीत कार्य ही किये है, जिसकी बदौलत संसार की भूलभूलैया से बाहर नहीं निकल सके । किन्तु अब सत्य का ज्ञान हो चुका है ।

**''सुबह का भूला शाम को लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते''**

इस कहावत के अनुसार आज से ही पापों की आलोचना करके सद्‌गुरु भगवंत से प्रायश्चित ग्रहण करके जल्द ही शुद्ध बनना है । यह एक सरल मार्ग है जिसकी सहाय से हम शीघ्र शाश्वत सुख को प्राप्त कर सकते है ।

प्रायश्चित ग्रहण करते वक्त तमाम पापों को याद करके तमाम पापों की आलोचना लेनी है । कई बार यह भी होता है कि बडे-बडे पापों की आलोचना तो ग्रहण कर लेते है किन्तु छोटे-छोटे पापों को याद भी नहीं किया जाता ।

जैसेकि, कोई व्यक्ति गुरुदेव के पास जाकर गाडी, स्कूटर आदि चलाते समय पहीयों के तले श्वान, बिल्ली, चूहा आदि मर जाते है तो उसका प्रायश्चित लेते है । यह उत्तम भाव है कि आपको प्रायश्चित ग्रहण करने का मन हुआ है किन्तु मात्र इस प्रायश्चित से संतुष्ट नहीं होना है बल्कि जीवन में किये गये तमाम पापों की आलोचना ग्रहण करनी है । पाप याद ना आये तब भी

याद करने का प्रयत्न करते रहो, किसी नोटबुक में लिखते रहो और अंत में परमशुद्धि की तरफ प्रयाण करो ।

प्रायश्चित भी सरल भाव से ग्रहण करना है । उसमें माया, कपट नहीं करने है क्योंकि हमें प्रायश्चित स्वयं के लिये ग्रहण करना है । किसीको बताने के लिये नहीं तो फिर माया क्यों करें ?

कई बार जीव यह सोचता है कि "मेरे मन में तो अनेक हल्के पाप चलते रहते है । गुरुदेव मुझे धर्मिष्ठ समझते है तो यदि मैं यह हल्के पाप उनके समक्ष बताऊँगा तो मेरा व्यक्तित्व, मेरा नाम, मेरी कीर्ति सब धूल में मिल जायेगा ।"

सावधान ! इस प्रकार के कोई भी विचार किये बिना, कुछ भी गुप्त ना रखकर गुरुदेव के समक्ष सरलता से पापों का एकरार करें ।

पैर में फँस चूका काँटा यदि समय पर ना निकाला जाये तो आगे पैर कटवाने तक की नौबत आ सकती है ।

आँख में फँसा हुआ कचरा यदि समय पर ना निकाला जाये तो आगे आँख गँवाने की भी नौबत आ सकती है ।

छोटा सा काँटा भी यदि भयानक तांडव कर सकता है तो छोटे से पाप का क्या कहना ? छोटा पाप भी सर्प से ज्यादा भारी हो सकता है तो बडे पापों का क्या कहना ?

तमाम पापों को मूल से तोडने हेतु सरलता से प्रायश्चित का स्वीकार करना ही पडेगा । यदि पेड को मूल से ना निकाला गया तो बारीश के गिरते ही, सूर्यप्रकाश, खाद आदि उचित पदार्थ की प्राप्ति होने पर उसी जगह पुनः पूर्ववत पेड बन सकता है । किन्तु यदि उस पेड को जड से ही निकाल दिया जाये तो वह दोबारा वृद्धि प्राप्त नहीं कर सकता ।

वैसे ही पापों को इसी मानवभव में जड से मिटा देना है, जिसके लिए प्रायश्चित ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है ।

डोक्टर के पास जा कर बिमारी की फरियाद कैसे की जाती है ? जहाँ भी दर्द, तकलीफ हो उन तमाम स्थानों का सही वर्णन किया जाता है । जिससे डोक्टर बिमारी का सही निर्णय ले कर सही दवाई लिख दे और उस दवाई का सेवन करके हम हमारी बिमारी का नाश करते है ।

वैसे ही पापरुपी बिमारी की गुरुदेवरुपी डोक्टर से फरीयाद करनी है। कुछ भी छुपाना नहीं है, जो भी हो वह सरल भाव से गुरुदेव को कह देना है। यदि प्रायश्चित ग्रहण करते समय भी माया की जाती है तो उसका क्या परिणाम प्राप्त होता है, यह जानने के लिये एक दृष्टांत,

**रुक्मिणी राजकुमारी** – रुप और शील गुण से अलंकृत थी। योग्य उम्र होने पर विवाह हुआ किन्तु पूर्वकृत कर्मो के कारण पति की तुरंत मृत्यु हो गई। रुक्मिणी पति के पीछे चिता में जलकर मरने के लिये तैयार हो गई पर उसके पिता उसे रोक देते है क्योंकि जैनधर्म के सिद्धांतो को जानते थे।

रुक्मिणी कहती है कि "पिताश्री ! इस युवावस्था में मेरे ब्रह्मचर्य का पालन संकट में है। सती स्त्री कभी दूसरा पति नहीं करती। मैं क्या करुँ ?" पिता उसे अपने राजमहल में ले जाते है और वहीं रहकर धर्मआराधना में जीवत व्यतीत करने के लिये कहा। रुक्मिणी भी धर्मध्यान में दिन बिता रही है।

कुछ समय के पश्चात् राजा की मृत्यु होती है। राजा की अंतिमक्रिया के पश्चात् राजा को एक भी पुत्र ना होने से और रुक्मिणी भी ब्रह्मचारी होने से मंत्रीगण उसे ही राजा के स्वरुप में घोषित कर देते है। रुक्मिणी भी भलीभाँति राज्य का संचालन करती है।

एक दिन राजदरबार में रुक्मिणी की दृष्टि शीलसन्नाह नामक नये मंत्री पर गई। विकारपूर्ण दृष्टि से देखा। शीलसन्नाह ब्रह्मचारी था, उसने जान लिया कि रुक्मिणी ने उसे विकारदृष्टि से देखा है। अपने शील को संकट में जानकर वह तुरंत नगर का त्याग करके अन्यत्र चला गया।

अन्य राज्य में गया और वहाँ शत्रुओं का आक्रमण होने पर राजा को युद्ध में मदद करके विजय प्राप्त करवाया। उस वक्त देवताओं ने शीलसन्नाह पर पुष्पवृष्टि की। उसने संसार से विरक्त हो कर चारित्र ग्रहण किया और अवधिज्ञान प्राप्त किया।

रुक्मिणी ने भी चारित्र ग्रहण किया। उत्तम साधना भी करने लगी और अनशन करने की कामना की। गुरुदेव से अनशन की आज्ञा माँगी। शीलसन्नाह ही रुक्मिणी के गुरु थे किन्तु दीर्घकाल व्यतित होने की वजह से रुक्मिणी साध्वी उन्हें पहचान ना पाये। परंतु शीलसन्नाह ने उन्हें पहचान लिया था।

गुरुदेव ने कहा कि ''शास्त्रों में विधान है कि आलोचना ग्रहण करके शुद्ध हो कर ही अनशन ग्रहण करना चाहिये ।'' रुक्मिणी साध्वी ने भी आलोचना ग्रहण की । गुरुदेव ने कहा कि ''पुनः विचार करके कोई भी पाप बाकी रह गया हो तो आलोचना ग्रहण करके शुद्धता प्राप्त करें ।''

रुक्मिणी साध्वी ने कहा कि ''गुरुदेव तमाम पापों की आलोचना ग्रहण की है ।'' तब गुरुदेव ने राजदरबार में आँखो के द्वारा हुआ पाप याद करवाया । तब रुक्मिणी ने सोचा कि ''यदि मैंने सत्य का प्रकाश किया तो मेरी ब्रह्मचारी के स्वरुप में जो प्रतिष्ठा है वह नष्ट हो जायेगी ।''

रुक्मिणी ने कहा कि ''गुरुदेव ! उस वक्त मैं तो मात्र उस युवान की परीक्षा करना चाहती थी, इसलिए वह कृत्य किया ।'' इस प्रकार माया करके एक छोटा पाप छुपाने का परिणाम शास्त्रकार भगवंत कहते है कि रुक्मिणी का संसार एक लाख भव तक बढ गया ।

जीवन में कभी भी ऐसा पागलपन मत करना अन्यथा कठोर परिणाम अवश्य प्राप्त होगा । मायारहित सरलता से गीतार्थ गुरु भगवंत के सन्मुख जीवन की काली किताब खोलकर आत्मा को साफ करें । इसमें कोई लज्जा ना करें ।

लज्जा तो तब आनी चाहिये जब जैनकुल और उत्तम परीवार में जन्म ले कर भी मुख से बोल ना पायें ऐसे तुच्छ पाप किये है । उन पापों का बंधन हो चुका है अतः उनका फल तो भुगतना ही पडेगा । गुरुदेव से आलोचना ग्रहण करने पर शुद्धता प्राप्त होगी अन्यथा उन पापों का उदय होने पर आँख से अश्रुपात करना पडेगा ।

कर्मराजा का बिलकुल स्पष्ट हिसाब है, कोई मिलावट नहीं, कोई रिश्वतखोरी नहीं, किसीकी शर्म नहीं ।

फिर चाहे स्वयं तीर्थंकर परमात्मा की आत्मा हो या चक्रवर्ती की, अमीर हो या गरीब, बालक हो या वृद्ध, स्त्री हो या पुरुष । कर्मराजा कोई मर्यादा नहीं देखता । जिसके पास जो हिसाब ग्रहण करना है वह करके ही रहेगा । फिर जीव चाहे पर्वत पर हो या किसी गुफा में हो, कहीं से भी उसे खोजकर हिसाब तो ग्रहण करके रहेगा । हमारे लिये अच्छा यही है कि कर्मसत्ता हम से जबरदस्ती से अश्रुपात करवा के हिसाब चूकता करे उसके पहले ही स्वयं आलोचना ग्रहण करके हिसाब चूकता कर दे । यदि पाप की

आलोचना, प्रायश्चित ना किया तो कठोर परिणाम चूकाना पडेगा, यह तय समझो ।

**त्रिपृष्ठ वासुदेव** के भव में प्रभु महावीर के जीव ने संगीतमग्न शय्यापालक के कान में अत्यंत गर्म शीशे का रस डलवाया तो वह कर्म अंतिम भव में उदय में आया और प्रभु के कान में खीले लगाने के स्वरुप उपसर्ग हुआ ।

तीसरे **मरीची** के भव में कुल का अभिमान करके नीच गोत्र कर्म उपार्जन किया जो अन्य भवो में चुकाने के बावजुद कुछ कर्म बाकी रहते अंतिम भव में देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षी में ८२ दिन तक रहना पडा ।

**खंधकमुनि** के जीव ने पूर्वभव में कोठींबडा फल की अखंडित छाल निकाली थी और स्वयं की भारी प्रशंसा करके निकाचित कर्म बंधन किया तो अगले ही भव में जीते जी चमडी छिलवाने का उपसर्ग सहना पडा ।

ऐसे अनेक प्रसंग शास्त्रों के पन्नों पर लिखे गये है कि पाप करने के पश्चात् जिन्होंने प्रायश्चित नहीं किया उनको कर्म तो भुगतने ही पडते है, कर्मो का हिसाब तो चूकाना ही पडता है ।

''**समझदार को इशारा काफी ।**'' हम सब समझदार है, दुःख हमें नहीं चाहिये तो जिसके द्वारा हमारे जीवन में दुःख पैदा होते है उन पापों का त्याग करना ही पडेगा । पाप के त्याग हेतु प्रायश्चित सर्वश्रेष्ठ उपाय है । तो आओ, प्रायश्चित का स्वीकार करके आत्मा को शुद्ध बनाने की दिशा में आगे बढते है ।

**पापों का प्रायश्चित अनादिकाल के मोह को नष्ट करता है**
**और आत्मा को मोक्ष प्राप्त करवाता है,**
**पापों का प्रायश्चित अनादिकाल के अज्ञान को नष्ट करता है**
**और आत्मा को ज्ञान प्राप्त करवाता है ।**

## (३) प्रत्याख्यान

***'जीवन में जिनवाणी को सुनने हेतु व्याख्यान की जरुरत है, जीवन में जिनवाणी को अपनाने हेतु प्रत्याख्यान की जरुरत है ।'***

अनेक वर्ष से जिनवाणी सुनने के बावजुद कोई सुधार नहीं हुआ

क्योंकि जिनवाणी को जीवन में अपनाया ही नहीं । जिनवाणी को जीवन में अपनाने हेतु प्रत्याख्यान करना पडता है । प्रत्याख्यान अर्थात् पच्चक्खाण, प्रतिज्ञा ।

प्रत्याख्यान – पच्चक्खाण करने से मन मजबूत बनता है और अनेक पापों से मुक्त हो सकते है ।

अगर आपको चौविहार की प्रतिज्ञा है और अचानक कहीं विवाह प्रसंग में जाना पडता है तो क्या करोगे ? या तो घर से भोजन करके ही जाओगे या फिर विवाहप्रसंग में जा कर सूर्यास्त के पूर्व भोजन कर लोगे ? इस प्रकार प्रतिज्ञा का पालन करोगे, लेकिन यदि आपने प्रतिज्ञा ही ग्रहण ना की तो... ?

कभी देशावर जाना हुआ और शायद भोजनशाला तक ना पहुँच पाये और सूर्यास्त होने की तैयारी हो तो पानी पीकर भी चौविहार कर लोगे पर नियम ही ग्रहण ना किया तो... ?

कई जीव तो डरते है कि नियम, प्रतिज्ञा लेने के बाद टूट गया तो ? इससे बेहतर है कि कोई नियम ही ना लिया जाये । क्या आप इस प्रकार के लोगों की श्रेणी में तो सम्मिलित नहीं हो ना ?

यदि हो तो शांति से बैठकर सोचों,

**मैं वस्त्र पहनुँ किन्तु मैले हो गये तो ? बेहतर है कि वस्त्र ही ना पहनुँ ।**

**मैं व्यापार तो करुँ किन्तु नुकसान हो गया तो ? बेहतर है कि व्यापार ही ना करुँ ।**

**मैं विवाह तो करुँ किन्तु अलगाव हो गया, विवाह-विच्छेद हो गया तो ? बेहतर है कि कुंवारा ही रहुँ ।**

संसार के कार्य में तो आप कभी इस प्रकार नहीं सोचते तो पच्चक्खाण में क्यों इतने विचार पैदा हो जाते है ?

पच्चक्खाण ले कर टूटने से ज्यादा पाप तो पच्चक्खाण ना लेने से लगता है । क्योंकि संपूर्णतया अविरति ही है और जब तक अविरति है तब तक पाप तो निरंतर चालु ही रहनेवाले है । इन पापों को रोकने हेतु, पापों से बचने हेतु प्रत्याख्यान करना है ।

पूज्य श्रमण-श्रमणी भगवंतो ने जीवनभर पच्चक्खाण ग्रहण किये है ।

यदि आपके पास वह सत्त्व नहीं तो कोशिश करो । शायद चारित्र जीवन का सत्त्व नहीं है तो श्रावक जीवन के १२ व्रत और १४ नियम का स्वीकार तो करना ही चाहिये ।

पच्चक्खाण ना लेने पर विश्व में हो रहे तमाम पापकार्य का पाप आपको भी लगता है क्योंकि उनके साथ आपका संबंध टूटा नहीं और जब तक वह संबंध जारी है तब तक पाप चालु ही है ल

आप किसी **Hill Station** पर घुमने जाते हो तो वहाँ **Five Star hotel** में १० दिन के लिये **Room Book** की और दो दिन वहाँ रुककर आसपास के स्थानों पर घुमने से ७ दिन हो गये और अंतिम १० वे दिन आप पुनः होटल पर आये तो आपने १० में से ३ दिन ही रुम का उपयोग किया है फिर भी भुगतान तो १० दिन का ही करना पडेगा । क्यों ? क्योंकि वह रुम आपके नाम पर १० दिन के लिये रखा गया है । उसके साथ आपका संबंध है और वह संबंध जब आप बंद करते हो तभी आपकी रुम का किराया रुकता है ।

इसी न्याय से दुन्यवी तमाम पदार्थो से हमारा संबंध चालु ही है अतः जब तक पच्चक्खाण लेने के द्वारा उन पदार्थो से संबंध तोडा नहीं जाता तब तक वह पाप भी हमें लगता ही है ।

समेतशिखरजी के चातुर्मास में गुरुदेव की इसी प्रेरणा से लगभग २०० आराधकों ने १२ व्रत और १४ नियम नाण के समक्ष ग्रहण किये है । लगभग १०० आराधकों ने चौथा ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया । अद्भूत आराधनामय माहौल रहा । जहाँ देखे वहाँ १२ व्रतधारी आराधकों के दर्शन हो रहे थे । धन्यवाद है उन व्रतधारी सच्चे श्रावक-श्राविकाओं को !

कई व्यक्ति पूछते है कि ''गुरुदेव ! पच्च्क्खाण ना ले और दिन में कुछ भी ना खायें तो उपवास का लाभ मिलता है क्या ? लूखा-सूखा खायें तो आयंबिल का लाभ मिलेगा क्या ?''

नहीं ! जो लाभ पच्चक्खाण ग्रहण करने से प्राप्त होता है उतना लाभ तो बिलकुल नहीं मिलेगा । अगर पच्चक्खाण ग्रहण किये बिना लाभ मिलता तो हम से ज्यादा पशु-पक्षीओं को प्राप्त होता, देवताओं को भी मिलता । पर ऐसा नहीं है । पच्चक्खाण ग्रहण करनेवाले को ही ज्यादा लाभ मिलता है । छोटा सा नियम भी ग्रहण करनेवाला आत्मा सद्गति को प्राप्त कर सकता है ।

एक शराबी था, उसे शराब की ऐसी आदत हो गई कि शराब के बिना वह पागल बन जाता । एक बार नगर में कोई आचार्य भगवंत पधारें । शराबी का मित्र उसे जबरदस्ती जिनवाणीश्रवण हेतु ले गया । प्रवचन के अंत में गुरुभगवंत ने तमाम आत्माओं को कोई ना कोई प्रतिज्ञा प्रदान की । शराबी ने गुरुदेव से कहा कि, ''कई बार शराब छोडने का विचार किया पर मैं नही कर पाऊँगा, अतः आप कोई दूसरा नियम प्रदान करें ।''

गीतार्थ गुरु भगवंत ने मधुर भाषा में कहा ''वत्स ! ऐसा कर की जब तु शराब ना पी रहा हो तब वस्त्र में गिठान बाँध देना और जब पुनः शराब पीनेवाला हो तब वह गिठान छोड देना, पर उसके पूर्व शराब मत पिना और शराब पीने के पश्चात् तुरंत वस्त्र में गिठान बाँध देना । बोल, क्या इस नियम का पालन कर पाओगे ?''

शराबी बोला ''गुरुदेव ! यह तो अत्यंत आसान नियम है, मैं जरुर पालन करुँगा, मुझे पच्चक्खाण प्रदान करें ।'' गुरुदेव ने प्रतिज्ञा प्रदान की, अनेक दिन तक उस शराबी ने नियम का सुंदर पालन किया ।

किसी दिन शराब पीने की इच्छा होती है । जब वस्त्र की गिठान खोलने जाता है तो वह खूलती ही नहीं । अनेक प्रयत्न करने पर भी नहीं खूली । अब तो पूर्ण शरीर में नशा की आग फैल रही है, रहना मुश्किल होने लगा, चक्कर आने लगे तभी परिवार के सदस्य नियम तोडने की बात करते है । पर वह शराबी बोलता है कि ''मैंने मेरे जीवन में एकमात्र छोटी सी प्रतिज्ञा ग्रहण की है और इसका पालन तो अब प्राण जाने पर भी करके रहुँगा ।''

**'प्राण जाये पर वचन ना जाये'**

**उस शराबी का आयुष्य वहीं समाप्त होता है । प्रतिज्ञा में मजबूत रहने से मृत्यु के पश्चात् शाश्वता श्री शत्रुंजय तीर्थाधिराज में अधिष्ठायक कपर्दी यक्ष बनता है । यह प्रभाव है प्रतिज्ञा का...**

**'प्रत्याख्यान पाप से संबंध तोडता है,**
**प्रत्याख्यान प्रभु से संबंध जोडता है ।'**

प्रत्याख्यान करने से पाप के साथ हमारा संबंध टूटता है । आप मांसाहार, चोरी, जुआ, वैश्यागमन आदि पाप नहीं करते फिर भी यदि आपने

पच्चक्खाण ग्रहण नहीं किया तो आपको पाप लगता ही है।

प्रतिदिन सूर्यास्त से पूर्व आपका भोजन समाप्त हो जाता है फिर भी यदि आपने चौविहार का पच्चक्खाण नहीं लिया तो रात्रिभोजन का पाप तो लगता ही है।

दिन में मात्र ५ या ६ वस्त्र, जूते, चंपल, वाहन आदि का उपयोग करते हो फिर भी दुनियाभर के वस्त्र, जूते, वाहन आदि के त्याग का नियम ग्रहण नहीं करते तो उन सबका पाप आपको भी लगता ही है क्योंकि आप नियमरहित हो।

अतः जिन्हें पाप का भय है उन्हें जल्द से जल्द पच्चक्खाण ग्रहण करना ही चाहिये।

जो पाप आप करते ही नहीं हो, जिन पापो के साथ आपका कोई संबंध ही नहीं है उन निरर्थक पापों को ग्रहण करके क्यों आत्मा को भारी बनाना है ?

पच्चक्खाण ग्रहण करने के बाद यदि किसी कारणवश भंग होता है तो गीतार्थ गुरु भगवंत से प्रायश्चित-आलोचना ग्रहण करके शुद्ध होना है। वस्त्र मैला होता है तो साबुन-पानी के द्वारा धो कर पुनः शुद्ध किया जाता है पर वस्त्र मैले होने के भय से वस्त्र पहनना ही बंद नहीं किया जाता।

वैसे ही नियम ग्रहण करने के पश्चात् यदि टूट जाता है तो आलोचना ले कर शुद्ध होना चाहिये किन्तु नियमभंग के डर से नियम ही ग्रहण ना करना, यह तो मूर्खता है।

यह भी ध्यान में रखें कि, आप स्वयं वस्त्र को कीचड में मैला नहीं करते, स्वयं वस्त्र पर चाय आदि नहीं फेंकते बल्कि अनजाने में, गलती से यह सब हो जाता है अतः वस्त्र को शुद्ध किया जाता है,

वैसे ही नियम भी स्वयं जानकर नहीं तोडना है बल्कि अनजाने में या भूल से नियमभंग हो जाता है तो गुरु भगवंत के सन्मुख वह गलती प्रकाशित करके प्रायश्चित ले कर शुद्ध होना है।

पच्चक्खाण तभी सार्थक होगा जब आपका संकल्प मजबूत होगा, जितना मजबूत आपका संकल्प होगा उतनी ही जल्दी सिद्धि प्राप्त होगी।

याद करो **पांडवो** को ! नारदजी समकिती ना होने से द्रौपदी उनका

सत्कार नहीं करती । अब नारदजी रुठ जाये तो क्या कर सकते है यह तो बताने की बात नहीं है ! नारद तो स्वयं आग लगाने का कार्य करनेवाला जीव । वहाँ से निकलकर सीधा पद्मोत्तर राजा के पास गया और द्रौपदी का चित्र उसे बताया । राजा ने अट्ठम तप करके देव को प्रसन्न किया और द्रौपदी का अपहरण करवाया । द्रौपदी वहाँ रहकर छट्ठ के पारणे छट्ठ करके स्वशील की रक्षा करती है ।

यहाँ पांडव और कुंता माता हर तरफ द्रौपदी की खौज करते है । कृष्ण वासुदेव को ज्ञात होते ही वह भी खोज शुरु करवाते है वहीं नारदजी कृष्ण के पास आकर अपहरण की बात बताते है । कृष्ण पांडवो को ले कर तुरंत पद्मोत्तर राजा के पास पहुँचते है ।

पांडव युद्ध करने जाते है । प्रथम दिन युद्ध करते करते सूर्यास्त होने पर लौट आते है । तब कृष्ण पूछते है कि ''क्या हुआ ?'' पांडव जवाब देते है ''हारे भी नहीं और जीते भी नहीं ।'' कृष्ण ने पूछा ''आपका लक्ष्य क्या था ?'' पांडव कहते है ''या जीतेंगे या हारेंगे''

कृष्ण ने कहा ''जब संकल्प ही दुर्बल हो तो सिद्धि कैसे मिलेगी ?''

दूसरे दिन युद्ध करने पर विजय प्राप्त होता है क्योंकि लक्ष्य अब बदल चूका था । आज दृढ निर्धार किया था कि ''जीतना ही है ।''

संकल्प निर्बल था तब तक सिद्धि उनसे दूर भाग रही थी लेकिन जैसे ही संकल्प मजबूत किया कि सिद्धि तुरंत प्राप्त हो गई । तभी तो कहा है,

**'कायर दिल के मानवी को मार्ग कभी मिलता नहीं,**
**अटल मन के मानवी को हिमालय भी रोकता नहीं ।'**

अब तक कायर की भाँति संसार में भटकते हुए जीवन पूर्ण किया किन्तु अब मन को मजबूत बनाना ही है । अब,

**'कायर बनकर भवभ्रमण करना नहीं,**
**बहादूर बनकर पापों से हटना है ।'**

अब तक जो भी प्रतिज्ञा ग्रहण की उसमें देश-देशावर की छूट, बिमारी में छूट, महिने के ५ दिन छूट, भूल हो जाये तो छूट... इस प्रकार छिद्र रखे थे । यह सब क्या है ? आप तो नियम से ज्यादा छूट ले रहे हो । नियम

लेने से पूर्व ही इतने दुर्बल हो तो परीक्षा होगी तब क्या करोगे ? दुर्बल नहीं बल्कि बलवान बनो ।

याद करो **वंकचूल चोर** को ! गुरु भगवंत वन में मार्ग भूल गये और वंकचूल से चातुर्मास में चार माह तक रहने की आज्ञा माँगी । प्रवचन न देने की शर्त पर वंकचूल ने स्थान प्रदान किया । चार माह पूर्ण होने पर वंकचूल गुरुदेव को कुछ दूर तक छोडने गया । अंत में गुरुदेव से चार नियम ग्रहण किये ।

(१) अनजाने फल नहीं खाना

(२) जब भी वार करें तब ५-७ कदम पीछे जाना

(३) राजा की रानी से कभी व्यभिचार नहीं करना

(४) काग अर्थात् कौए का माँस कभी नहीं खाना

एक बार वंकचूल और उसके सेवक वन में मार्ग भूल गये । एक स्थान पर विश्राम करने बैठे । तमाम लोगों को बहुत भूख लगी थी । आसपास के वृक्ष से उसके सेवक फल तोडकर ले आये । वंकचूल को अपना नियम याद आया । उस फल का नाम ज्ञात ना होने से उसने नहीं खाया । जिन लोगों ने फल खाये वह तुरंत मर गये क्योंकि वह झहरीला किंपाकफल था ।

कुछ दिन के पश्चात् वंकचूल पुनः चोरी करने हेतु गया । उसके गृह उसकी बहन ने पुरुष का वेश ग्रहण किया और भाभी के साथ नाटिका देखने गई । देर रात्रि को लौटकर आने से वह दोनों तुरंत निद्राधीन हो गई । वंकचूल जब लौट कर आता है तो पत्नी को किसी पुरुष के साथ सोता हुआ देख उनकी हत्या करने हेतु तलवार बाहर निकालता है । वहीं पुनः प्रतिज्ञा याद आने से कुछ कदम पीछे गया और जैसे ही तलवार उठाता है तब तलवार खंभे से टकराकर नीचे गिर गई । तभी आवाज से पुरुष के वेश में निद्राधीन बहन उठ गई और भाई शब्द बोली तब सर्व हकीकत का पता चला । इन दोनों घटना से वंकचूल सतत गुरुदेव की बातें याद करता है और निशदिन उनके उपकारो को याद करता रहता है ।

एक बार वंकचूल चोरी करने राजमहल में गया और वहीं रानी वंकचूल को देखकर अनुचित माँग करती है । वंकचूल के अस्वीकार करने पर रानी जोरो से चिल्लाती है और छेडखानी का आरोप लगा देती है । दूसरे दिन राजदरबार में राजा के समक्ष उसे पेश किया गया । अपने बचाव में कुछ

भी ना बोलने पर चतुर राजा ने उसे उत्तम पुरुष जानकर उसे राजदरबार का अमात्य मंत्री घोषित किया। लोगों को जब आश्चर्य हुआ तब राजा ने कहा कि ''गतरात्रि की संपूर्ण घटना मैंने स्वयं बाहर खडे-खडे दरवाजे के छिद्र से देख ली थी। यह वंकचूल बिलकुल निर्दोष है।''

तीन प्रतिज्ञा में वंकचूल पास हो गया। प्रतिज्ञापालन से तीन बार उसका बचाव हो गया। अब तो उसे गुरुवचन पर पूर्णतः श्रद्धा हो गई। अहोभाव से गुरुदेव के चरणों में झुक जाता है।

एक बार वंकचूल बिमार हुआ। अनेक वैद्य को बताने पर भी कोई फर्क ना पडा। एक अत्यंत ज्ञानी वैद्य पधारें और उन्होंने वंकचूल को काग के माँस के साथ औषधि ग्रहण करने पर त्वरीत स्वास्थ्य ठीक हो जायेगा यह कहा। वंकचूल ने कहा कि ''मौत आये तो आये, मैं मृत्यु को अपनाने तैयार हुँ पर प्रतिज्ञा नहीं तोडुंगा।'' अंत में मक्कमता से प्रतिज्ञापालन करके वंकचूल आयुष्य पूर्ण करके स्वर्ग में जाता है।

एक चोर भी प्रतिज्ञा का मक्कमता से पालन कर के इस लोक और परलोक में उत्तम फल को प्राप्त कर सकता है। हमें भी यदि इस फल की प्राप्ति करनी है तो मजबूत बनकर प्रतिज्ञा का स्वीकार करना जरुरी है। छोटा सा नियम भी ग्रहण करके उसका मजबूताई से पालन किया जाये तो हमारा भी बेडा पार हो सकता है।

**'कितना जीवन जीया है वह महत्त्वपूर्ण नहीं है,**
**कैसा जीवन जीया है वह महत्त्वपूर्ण है'**

# आत्मा का Precautions = सावधानीयाँ

दु:ख नष्ट होगा तभी सुख मिलेगा,

दोष नष्ट होगा तभी मोक्ष मिलेगा

(१) सुख में सावधान - आसक्ति ना हो जाये

(१) सत्ता
(२) संपत्ति
(३) स्त्री

(२) दु:ख में समाधान - आर्तध्यान ना हो जाये

(१) दु:ख का प्रतिकार - दुर्गति
(२) दु:ख का स्वीकार - सद्गति
(३) दु:ख का सत्कार - परमगति

(३) धर्म में प्रणिधान - अस्थिरता ना हो जाये

(१) संकल्प
(२) साधना
(३) सिद्धि

## (१) सुख में सावधान : आसक्ति ना हो जाये

संसार के तमाम जीवों की यही इच्छा है कि सुख की प्राप्ति हो । किन्तु अज्ञानी जीवों को यह ज्ञात ही नहीं है कि वास्तविक सुख क्या है ? वह तो मात्र भौतिक सुखो के पीछे ही दौड रहे है ।

संसार के तमाम सुख ब्लेड पर लगाई हुई चोकलेट की भाँति है । बाहर से वह चोकलेट अत्यंत आकर्षक प्रतीत होती है, उसे देखकर मुख में पानी भी बह जाता है, उसे खाने को मन ललचाता है और अज्ञानी जीव उसे अपने मुख में रख देते है । उसके स्वाद के चाहक हो जाते है और उनके मुख से शब्द निकल पडते है "वाह ! क्या स्वादिष्ट है ।" और जैसे ही उस चोकलेट को खाते है, अंदर छुपी हुई ब्लेड तुरंत जुबान को काट लेती है, लहु की धारा बहती है । फिर वही जीव बोलता है कि "ना खाई होती तो अच्छा होता ।"

अरे ! खाने के पश्चात् भी ध्यान रखा होता, सावधानी रखी होती तो यह समय ना देखना पडता । अब वही व्यक्ति पुनः वही चोकलेट देखेगा तो क्या उसे खाने का मन होगा ? कोई जबरन उसके मुख में चोकलेट रख दे तो वह कैसे खायेगा ?

कभी छोटे बालक को दूध दिया हो और बालक को ज्ञात ना हो की दूध अत्यंत गर्म है तो वह दूध को पीता है किन्तु गर्म दूध का एहसास होते ही तुरंत अपना मुख दूर कर लेगा और दूध के प्याले में फूंक मारकर ठंडा करके ही ग्रहण करेगा । अब जब भी दूध पीने का अवसर होगा तब वह क्या करेगा ? सीधा दूध पी लेगा या गर्म है की नहीं यह जानकर पीयेगा ? अब उस बालक को दूध नहीं बल्कि छाछ भी प्रदान करेंगे तब भी वह फूंक मारकर ही पीयेगा ।

यदि नन्हा सा बालक भी एक बार के अनुभव से सावधान हो जाता है तो हमने तो संसार में अनंत भव कर लिये । अनंत भव के अनंत अनुभव हो चुके है, क्या सावधानी की शुरुआत हुई ?

अज्ञानता में सुखों के पीछे ही पागल बनते गये और अनंत दुःखो को सहन करना पडा और अब अनुभव होने के बावजुद भ्रामक सुखो की दौड में भवभ्रमण बढा रहे है । नहीं, अब नहीं भटकना है इन सुखों के पीछे; अब रुकना है, थमना है । इन भौतिक सुखों की दौड ने तो अच्छेअच्छों को परचा

दिखा दिया है। इन भौतिक सुखो में मुख्य तीन कारण से हमारी बुरी दशा हुई है।

**( १ ) सत्ता**
**( २ ) संपत्ति**
**( ३ ) स्त्री**

## (१) सत्ता

जिसके पास पूरे देश की सत्ता हो, राज्य या समाज की सत्ता हो उस पर देश, राज्य या समाज निर्भर है। तभी तो कहा जाता है कि "**जैसा राजा वैसी प्रजा**" । राजा यदि सदाचारी होगा तो प्रजा भी सदाचारी बनेगी और राजा यदि दूराचारी, भ्रष्टाचारी या व्यभिचारी होगा तो प्रजा की क्या हालत होगी ?

पूर्व के काल में **संप्रति महाराजा** हुए। सत्ता प्राप्त होते ही सदुपयोग शुरु कर दिया। उन्होंने अपने जीवन में लोगों को ज्यादातर धर्म सन्मुख बनाया। जब तक नूतन जिनालय निर्माण का संदेश ना मिलता तब तक मुख में अन्न या पानी तक नहीं रखते थे। उनके इस पराक्रम ने अनेक नये इतिहासो का सृजन कर दिया था।

उन्होंने अपने जीवनकाल के दौरान १.२५ लाख जिनमंदिर और १.२५ करोड जिनप्रतिमाओं का सृजन किया। उनके द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमा अनेक आत्माओं द्वारा पूजा होते हुए हम तक पहुँची है। आज भी अनेक नगरों में उनके द्वारा निर्मित प्रतिमा पायी जाती है। अनार्य देश के लोगों को भी धर्मप्राप्ति करवाने हेतु अनेक उपायों के द्वारा साधु भगवंतो के विहार सुलभ करवाये। अनेक स्थानों पर जिनशासन की उत्तम प्रभावना की। यह है सत्ता का सदुपयोग।

किसीने सत्य कहा है "**छोटे व्यक्ति की बडी भूल जितना नुकसान नहीं करती उससे कही गुना ज्यादा नुकसान बडे इन्सान की छोटी भूल कर देती है।**" सत्ता हाथ में आने के बाद आपकी जिम्मेदारीयाँ बढ जाती है। बाल्यावस्था में आपके पास कोई सत्ता नहीं थी और ना ही जिम्मेदारीयों का भार। किन्तु अब आप बडे हो चुके हो, आपके परिवार की जिम्मेदारी आपके हाथो में है। वह परिवार दुर्गति के द्वार तक ना पहुँच जाये

यह जिम्मेदारी भी आपकी ही है ।

मध्ययुग में कुछ अपात्र व्यक्तिओं के हाथ में सत्ता जा चुकी थी जिसके कारण भारतीय संस्कृति को भारी नुकसान सहन करना पडा । उन जीवों का यही सिद्धांत था कि **''जो है इस भव में ही है, परभव किसने देखे है''** अतः परलोक की चिंता किये बगैर जी भर के जिंदगी जीओ, मजे करो, खाओ पीओ और मस्त रहो ।

मार्ग में कोई रुपवंत स्त्री दिख जाये और पसंद आ जाये तो उसे जबरन उठाकर अपने साथ ले जाते । रात होते ही शराब की मेहफिल जमती और भोजन में माँस परोसा जाता था । लोगों पर सत्ता की जबरदस्ती दिखाकर मजबूरन धर्म परिवर्तन करवाया जाता था और यदि कोई तैयार ना होता तो तुरंत तलवार से हमला करके उसे मार दिया जाता था ।

आप शायद और कुछ ना कर सको किन्तु एक कार्य अवश्य करें और वह है आपके परिवार की रक्षा । क्या आज **School** और **Colledge** में संस्कार की शिक्षा प्रदान की जाती है ? संस्कार तो धर्मगुरु से ही प्राप्त होंगे । स्कूल की शिक्षा में तो संतान के पीछे उसकी माता भी जान लगा देती है । ऐसा लगता है कि दोनों स्कूल पढने हेतु जाते है । संतान से ज्यादा तो उसकी बेग का वजन होता है ।

वर्तमान काल में तो स्कूल भी **morning** की हो गई है ताकि पूजा करने के संस्कार भी टूट जाते है । ज्यादातर संतान पूजा करने से वंचित रह जाते है । स्कूल से आते ही भोजन करके **tution** जाना पडता है और **drawing class, dance class, cooking class, karrate class** यह तमाम क्लास और ट्युशन ने तो पाठशाला पर लगातार प्रहार किया है । ज्यादातर संघों की पाठशाला में मात्र परींदे ही दिखते है ।

पूर्व समय में बालक जब प्रतिक्रमण करने आते थे तब अतिचार, अजितशांति, बडी शांति आदि सूत्र बोलने हेतु तत्पर रहते थे और अब तो दिया ले कर घुमने से भी वैसे बालक नहीं मिलते ।

**माताओं को खास विनंती है कि नौकरी, अभ्यास, कीटी पार्टी, पडौशी की व्यर्थ बातें करने नहीं जाओगे तो चलेगा किन्तु बालक में संस्कारो का सिंचन नहीं किया तो नहीं चलेगा ।** रविवार को भी गलती से बालक गुरु भगवंतो के पास जाता है तो यह भी नसीब की बात है । पूर्ण हफ्ते

की थकान रविवार को जो निकाली जाती है ।

रविवार को बालक १० बजे से पूर्व उठता नहीं, उठकर नास्ता करके स्नानादि कर लेता है, कुछ समय टी.वी. देखने के बाद **friends** के साथ घुमने जाता है । फिर घर आ कर हाथ-पैर साफ करके **fresh** हो कर पूर्ण **family** फिल्म देखने **theatre** में जाती है और वहाँ से सीधा **hotel** में जाते है । पेट भरकर घर जा कर सो जाते है, अब बताओ कल्याण कैसे होगा ?

इतना ही नहीं, बालक को पहले से ही **english medium** में दाखिल करते है । बालक की हालत भी **tight** हो जाती है । ''धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का'' जैसी हालत हो जाती है । ना तो सही **english** जानता है और ना ही गुजराती या हिन्दी जैसी मातृभाषा का कुछ अता-पता रहता है । बालक को अन्य कोई क्लास ना करवाओ तो चलेगा किन्तु प्रथम मातृभाषा के क्लास करवाओ । गुजराती-हिन्दी जैसी मातृभाषा ही नहीं समझेगा तो धार्मिक पुस्तको का वांचन कैसे कर पायेगा ? ज्ञानप्राप्ति कैसे कर पायेगा ? मातृभाषा का भी ज्ञान नहीं होगा तो उपाश्रय में आ कर महात्मा को परेशान करता रहेगा ।

एकबार किसी माता ने अपने बालक को समझाकर पढाई हेतु भेजा । जल्दबाजी में पुस्तक ले कर आया पर पुस्तक रखने हेतु सापडा घर पर ही भूल गया । मैंने कहा ''सापडा कहाँ है ?'' तो बोला ''म.सा. वह क्या होता है ?'' काफी देर तक समझाने की कोशिश की पर नहीं समझ पाया । अंत में जब उसे चित्र बनाकर बताया तब बोला ''ओह ! म.सा. ऐसा कहीये ना कि **book-stand** कहाँ है ?'' यह हाल है आज के **educated** बालको का !

धन्यवाद है उन माता-पिता को ! जिनको इस प्रकार की जहरी लहर का स्पर्श नहीं हुआ । मैंने उन माताओं को भी देखा है जो व्यवहार से बालक को **convent** में भेज तो रही है किन्तु अन्य कोई क्लास ना करवाते हुए गृह में ही अपने बालक को मातृभाषा सिखाती है, गाथाएँ करवाती है, धार्मिक उपकरणों की पहचान करवाती है । **morning school** में होने के बावजुद बालक को सुबह जल्दी उठाकर जिनालय में पूजा भी करवाती है ।

रविवार के दिन बालक को अष्टप्रकारी पूजा भी सिखाती है । महात्मा

को गोचरी हेतु पधारने की विनंती करवाती है । दोपहर को सामायिक और शाम को चौविहार की आराधना भी करवाती है । चातुर्मास में देढ माह तक बियासणां करवाती है । उसमें भी प्रथम बियासणां **जैसे तैसे स्कूल की रिशेष में** और दूसरा बियासणां शांति से गृह पर करवाती है ।

विश्वास नहीं हो रहा ना ? यह सत्य घटना है । कुछ समय पूर्व हमारी निश्रा में गिरीडीह से समेतशिखर तीन दिवस का छ:री पालित पौषधधारी संघ वर्धमान मित्र मंडल के द्वारा आयोजित किया गया था । करीब ४५० यात्रिको की संख्या थी और करीब १५ बालक-बालिका भी स्कूल से छुट्टी ले कर संघ में जुडे थे ।

उनमें से एक बालक था जिसका नाम **तत्त्व** था । मलाड-इस्ट देवचंदनगर में रहनेवाला बालक पौषध की तमाम क्रिया सही तरीके से करता, एकासना, संथाराशयन करता और १४ कि.मी. का विहार भी करता था । चेहरे पर सदैव प्रसन्नता रहती । जब भी विहार करके आता था तब हर कोई उसे पूछता की थकान लगी है ? तब वह जवाब देता कि नहीं शरीर की थकान नहीं लगी बल्कि भवोभव की थकान उतर रही है । वह बालक घर में भी प्रतिदिन चौविहार, गर्म पानी पीना, सामायिक की आराधना करता है । उसकी उम्र क्या होगी ? मात्र ४ वर्ष !!! आपको कितने वर्ष हुए ? क्या अभी भी कोई प्रगति है ?

बालक का ९० प्रतिशत आधार उसके माता-पिता पर होता है । यदि माता-पिता सुधरते है तो परिवार भी सुधर जाता है, परिवार सुधर जाता है तो समाज सुधर जाता है, समाज सुधर जाता है तो देश भी सुधर जाता है । जब तक सत्ता आपके हाथ में है तब तक उसका सदुपयोग कर लो ।

**प्रतिदिन परमात्मा को प्रार्थना करो कि ''हे प्रभु ! समस्त विश्व को सुधारना किन्तु शुरुआत तो मुज से ही करना ।''**

आपके पास वर्तमान में जो भी है वह पूर्वभव के उपार्जित पुण्य की बदौलत है । तभी तो परमर्षिओं ने कहा है,

**'सुखमास्ते सुखं शेते भुङ्क्षे पिबसि खेलसि ।**
**न जाने त्वग्रतः पुण्यैर्विना किं भविष्यसि ।।**

तु सुखपूर्वक बैठ रहा है, सो रहा है, खा रहा है, पी रहा है, खेल रहा

है किन्तु भविष्य में पुण्य के बिना तेरा क्या होगा उसका मुझे कोई ज्ञान नहीं है।

**Bank** में आपने पचास हजार रुपये जमा करवाये और आपके **account** में पचास हजार रुपये जमा हो गये। अब, आपको अचानक एक लाख रुपये की जरुरत है, **cheque** लिखकर **Bank** में देने से आपको कितने रुपये प्राप्त होंगे ? जितने रुपये आपके **account** में है उतने ही रुपये मिलेंगे ना ? उससे अधिक एक रुपया भी नहीं मिलेगा।

अनेक स्थानों पर पानी का विकट **problem** होता है। पानी कब नल से आना बंद हो जाये वह पता भी नहीं चलता। लोग परेशान हो जाते है उन्होंने कुछ विचार करके स्वयं के घर में ही पानी की टंकी बसा दी। जिसमें दो दिन तक कम ना पडे इतना पानी जमा कर सकते है। अब कभी भी पानी चला जायें पर उनको फिकर नहीं है क्योंकि उनके पास आवश्यक पानी भरा पडा है।

अब वह व्यक्ति गलत भ्रमणा में रहता है कि मुझे पानी की जरुरत नहीं है, मेरे पास आवश्यक पानी है और नया पानी भरना ही बंद कर दे तो वह पानी उसे कब तक मिलेगा ? जब तक टंकी में है तब तक ही मिलेगा ना ? टंकी में पानी समाप्त होते ही वह पानी उसे मिलना बंद हो जायेगा।

बस इसी प्रकार आपकी पुण्य की बेंक में जितना पुण्य जमा होगा, पुण्यरुप संपत्ति होगी या पुण्य की टंकी में जितना पुण्यरुपी पानी जमा होगा उतना ही पुण्य आपको उपयोग करने हेतु प्राप्त होगा। उससे ज्यादा एक रुपया या एक बुँद पानी ज्यादा प्राप्त नहीं होगा।

यदि आप निश्चिंत हो कर बैठ गये तो पुण्यरुपी धन, पुण्यरुपी पानी खत्म हो जायेगा किन्तु यह धन बैंक में जमा करते रहोगे, नया पानी मोटर के माध्यम से टंकी में भरते रहोगे तो आपका बेलेन्स या टंकी कभी भी खाली नहीं होंगी।

यह बात भी समझ ले कि यह पुण्य सुवर्ण की बेडीयों के समान है। व्यक्ति के पैरों में बेडीयाँ होने पर चाहते हुए भी वह व्यक्ति भाग नहीं सकता। अनेक लोग यात्रा-प्रवास हेतु निकलते है तब ट्रेन में से कोई चोर सामान उठाकर ना ले जायें इसलिए जंजिर से बाँधकर रखते है। किसी बालक ने नई साईकिल खरीदी हो तब कोई उसे उठाकर ले ना जाये इसलिए जंजिर से

बाँधकर रखता है । कई स्थानों पर पानी के प्याउ होते है वहाँ भी लोगों को पानी पीने हेतु ग्लास रखे जाते है, जिन्हें बाँधकर रखा जाता है ताकि कोई उन प्याले को ले कर ना चला जायें या गलत स्थान पर ना रख दे ।

जैसे कैदी, सामान, साईकिल, प्याले को जंजिर या किसी वस्तु से बाँधा जाता है वैसे हम भी पुण्यरुप जंजिर से बँधे है । वह पुण्य को भुगते बिना हमारा इस संसार से मुक्त होना संभव नहीं । मोक्ष भी प्राप्त नहीं होगा अतः मात्र पुण्यप्राप्ति की अपेक्षा से ही धर्म आराधना नहीं करनी ।

मोक्ष में पहुँचने हेतु सामग्री जैसे कि मनुष्यभव, आर्यदेश, सद्गुरु समागम आदि पुण्य के द्वारा ही प्राप्त होते है । अतः शुरुआत में मोक्ष की सामग्री प्राप्त करने हेतु पुण्य की आवश्यकता है किन्तु मोक्ष में जाने हेतु उस पुण्य को भी शून्य करना ही पडेगा । किन्तु वहाँ तक पहुँचने हेतु पुण्य आवश्यक है और वह पुण्य परमात्मा द्वारा प्रदत्त धर्म के आचरण से ही प्राप्त होता है । किन्तु हमारा लक्ष्य तो पूर्वकृत पापों को खत्म करने का होना चाहिये ।

किसान खेत में बीज बोता है तब उसका लक्ष्य क्या होता है ? यही कि इस क्रिया के द्वारा अच्छी फसल उगे और अपने इसी लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु दिन-रात मेहनत करता है । पानी, खाद आदि जरुरी चीज प्रदान करना, जानवर-पंछी आदि से रक्षा करना इत्यादि तमाम प्रकार से अच्छे से अपना कार्य करता है तब जा कर उसे लक्ष्य की प्राप्ति होती है । जब अच्छी फसल उगती है तो उसके आसपास घास भी उगती है । घास उगाने का लक्ष्य नहीं है फिर भी घास की प्राप्ति होती है ।

सब्जी के साथ थैली भी आती है ना !

चश्मा खरीदने पर उसके साथ बोक्स भी आता है ना !

गिफ्ट लेते हो तब साथ में गिफ्ट पेपर भी आता है ना !

आपका लक्ष्य तो सब्जी, फसल, चश्मा, गिफ्ट का ही होता है फिर भी थैली, घास, बोक्स, गिफ्ट पेपर भी प्राप्त होता है । किन्तु यदि आपने थैली, घास, बोक्स, गिफ्ट पेपर का लक्ष्य रखा होता तो उसके साथ सब्जी, फसल, चश्मा, गिफ्ट की प्राप्ति नहीं होती । तो कौन मूरख का सरदार होगा जो गौणवस्तु, मूल्यहीन वस्तु की प्राप्ति हेतु मुख्य वस्तु, अमूल्य वस्तु को गौण कर दे ?

कोई ज्वेलर्स की दुकानवाला आपसे प्रसन्न हो कर कुछ माँगने को कहे तो आप क्या माँगना चाहोगे ? बुद्धिमान इन्सान **diamond neckless** माँग लेगा किन्तु बुद्धिहीन व्यक्ति **diamond neckless** रखने का बोक्स माँग लेगा। आपका नंबर कौन से इन्सान में है ?

ज्वेलर्सवाला अर्थात् अनंतरत्नों के मालिक परमात्मा के पास डायमंड का नेकलेस माँगना यानि धर्म आराधना का लक्ष्य और पूर्वकृत कर्मों को नष्ट करते रहना और नेकलेस रखने का बोक्स माँगना यानि पुण्य-भौतिक सुख सुविधा में ही लक्ष्य रखना।

कई बार यह देखा गया है कि जो जीव ज्यादा धर्म करता है वह दुःखी होता है, संकट के बादल उस पर हमेशा छाये हुए रहते है, तमाम कार्यो में उसे निष्फलता ही मिलती है, उसकी दुकान पर कोई नहीं जाता और जो अत्यंत पापी, अधर्मी, व्यसनो में आसक्त हो, जिसने जिनालय-उपाश्रय में कभी पैर ना रखा हो वह अत्यंत सुखी होता है, कामियाबी जैसे उसके कदम ही चुमती है और हमेशा सफलता प्राप्त करता है, उसकी दुकान पर ग्राहकों की भीड जमी रहती है। धर्म करनेवाला झौंपडी में रहता है और पाप करनेवाला विशाल बंगलो में रहता है। धर्मी के गृह आहार की भी तकलीफें होती है और पापी के गृह हररोज मेहफिले सजती है। क्यों ?

किसी व्यक्ति को मोसंबी का ज्युस पीने का मन हुआ। वह ज्युस की दुकान पर जा कर १ ग्लास मोसंबी का ज्युस माँगता है। दुकानदार के पास मोसंबी कम थी और अनानास ज्यादा थे। उसने अनानस का बडा टुकडा पहले से मशीन में डाला हुआ था। अब एक ग्लास का ही ओर्डर था तो उसने उपर से एक मोसंबी डाल दी और ज्युस निकालकर दे दिया। उस व्यक्ति को ज्युस पीते ही ख्याल आ गया कि ज्युस में अनानास है। उसने दुकानदार पर गुस्सा किया तब दुकानदार ने भी भूल का स्वीकार करके माफी माँगी।

पुराने जमाने में लोग घर में अनाज भरने हेतु कोठीयाँ रखते थे। ऐसी ही किसी कोठी में प्रथम गेहुँ रखे गये फिर अक्षत और उसके उपर ज्वार रखते समय आपका बालक वहाँ दौडकर आ जाता है। वह देख रहा है कि उसकी माता कोठी में ज्वार डाल रही है। आपके कहीं जाने पर वह बालक तुरंत कोठी में नीचे जो नल होता है उसे खोल देता है तो वहाँ से गेहुँ बाहर

निकलते है । यह देखकर वह बोलता है कि, माँ आज तो कमाल हो गया । आज मैंने जादु देखा । आपने अंदर ज्वार डाले थे किन्तु नल से तो गेहुँ बाहर आ रहे है । मैं अभी मेरे मित्रों को ले कर आता हुँ और यह जादु दिखाता हुँ ।

तभी माता उसे रोकती है और कहती है कि यह कोई जादु नहीं है । मैंने कोठी में प्रथम गेहुँ फिर अक्षत और फिर ज्वार रखे है परंतु तुने वह सब नहीं देखा और जब तु आया तब तुने मात्र ज्वार ही देखी इसलिए तुझे लग रहा है कि ज्वार डालने से गेहुँ बनकर निकल रहे है । यह मात्र तेरी भ्रमणा है । वह बालक तो समझ गया किन्तु क्या आप समझे ?

जैसे उस व्यक्ति ने मात्र मोसंबी ही देखी थी किन्तु अनानास नहीं देखा परंतु उसके स्वाद से ही उसे समझ आ गया कि यह अनानास का ज्युस है, जैसे बालक को मात्र ज्वार ही दिखी किन्तु गेहुँ नहीं दिखे परंतु माता के समझाने पर वह समझ गया,

वैसे ही हमें भी वर्तमान में नजरों के समक्ष पापी के साथ सुख और धर्मी के साथ दुःख दिख रहा है किन्तु यह हमारी भ्रमणा है । हमें मोसंबी और ज्वार की भाँति मात्र उसके पाप ही दिखते है किन्तु पूर्वभव में उसके द्वारा प्रदत्त सत्कार्य अनानास और गेहुँ-अक्षत की भाँति हमें नहीं दिख रहे । यह बात हमें कभी अनुभव से ज्ञात होती है और कभी हमारी माता समान सद्‌गुरु भगवंत से ज्ञात होती है अतः कभी भी इस प्रकार की भ्रमणाओ में भ्रमित नहीं होना चाहिये ।

आप सब व्यापारी है, जैसे की धन-दौलत की बात होती है आपके नयन प्रफुल्लित हो जाते है, कर्ण तेजी से कार्य करते है । आपको आपकी ही भाषा में कहे तो **agent** को कोई खास कार्य नहीं करना, मात्र **customers** को **merchant** के पास ले जाना है । तमाम बातचीत वह दोनों ही करेंगे और उसको बैठे-बैठे १० या १५ प्रतिशत **commission** मिल जाता है । हमें भी कुछ यही कार्य करना है । हमारी सत्ता का उपयोग करके लोगों को सत्कार्य में जोडकर बैठे-बैठे **commission** प्राप्त करना है ।

किन्तु एक बात अच्छे से समझ लेना कि यदि आपने सत्ता का दुरुपयोग करके लोग, समाज, परिवार को दुष्कार्य में जोडा तो उसका कमिशन भी आपको मिलेगा ।

**सत्कार्यो की दलाली से पुण्य का बेलेन्स बढता है,**

## दुष्कार्यो की दलाली से पाप का बेलेन्स बढता है

आप सर्व बनिये हो और बनिया हमेशा **profit** का ही व्यापार करता है, **loss** का नहीं। आपको व्यापार, दलाली किसकी करनी है ? **profit** की या **loss** की ?

## (२) संपत्ति :

***'बंद मुट्ठी ले कर आये, जाते समय खाली हाथ***
***मनवां देख ले जगत में कुछ न आया तेरे साथ'***

जन्म के समय हमारा वजन ढाई किलो था और मृत्यु के पश्चात् राख का वजन भी ढाई किलो ही होगा। जन्म के समय प्रथम जो कपडा पहना उसमें एक भी जेब नहीं थी, इस संसार से बिदा होते वक्त भी अंतिम कपडा कफन रहेगा और उसमें भी जेब नहीं रहेगी। फिर भी मानवी संपूर्ण जीवन जेब भरने की मेहनत करता रहता है। अहो आश्चर्यम् !

आज के समय में हर जगह संपत्ति प्राप्ति की धून सवार है। किसी भी हालत में, कहीं से भी, कुछ भी करके संपत्ति ही चाहिये। संपत्ति प्राप्त करने हेतु धर्म का भी त्याग कर दिया गया है। नाममात्र के जैन रह गये, उस नाम को बरकरार रखने में सहायभूत प्रभुदर्शन, पूजा आदि क्रिया तो बिलकुल कम हो गई।

दिनरात संपत्ति हेतु ही मजदूरी की जाती है और संपत्ति हेतु अनीति करने को भी तैयार हो जाते हो, **करप्शन**, रिश्वत, विश्वासघात, माया, कपट, धोखा, असत्यभाषण करने हेतु भी तैयार हो जाते हो। कुछ आत्मा के हृदय तो इस प्रकार निष्ठुर हो गये है कि संपत्ति के लिये सगे भाई, माता, पिता, बहन की हत्या तक करने हेतु तैयार हो जाते है। कुछ आत्मा तो स्वयं के देह को ही बेचने हेतु तैयार हो जाते है वह भी मात्र संपत्ति प्राप्त करने हेतु।

क्या आपके जीवन में संपत्ति ही सर्वस्व है ? संपत्ति से ही सुख मिलता है, आपकी यह मान्यता मिथ्या है। विश्वास नहीं है ना ? तो सुनो कुछ वर्ष पहले की ही एक घटना।

अमेरिका का अत्यंत श्रीमंत इन्सान। करोडो की संपत्ति का मालिक। उसने अपनी तमाम संपत्तिओं को सुरक्षित रखने हेतु विशिष्ट और विशाल **locker** बनवाया, जिसकी चाबी वह अपने पास ही रखता था। अन्य

कोई भी व्यक्ति उसे खोलने में असमर्थ था। एक दिन वह अपनी संपत्ति की गणना करने अंदर गया। संपत्ति देखकर, गिनकर अत्यंत आनंदविभोर हो गया। पुनः जब बाहर निकलने के लिये उठा तो मानो उसके पैरों तले जमीन सरक गई क्योंकि उसने देखा कि उस विशाल लोकर का दरवाजा ही बंद हो चुका था और उसकी चाबी भी बाहर भूल चुका था। अंदर रहकर वह मदद के लिये चिल्लाने लगा परंतु उसने ही लोकर इस प्रकार बनवाया था कि भीतर से एक शब्द बाहर किसीको सुनाई नहीं दे रहा था।

अत्यंत भूख और प्यास लगी थी, गला सूख रहा था, प्यास से तडप रहा था। उसने एक पत्र लिखा और वहीं पर मर गया। एक-दो दिन में अन्य लोग उसकी खोज करते हुए इस लोकर के पास आ गये और लोकर खोला तो अंदर से भयावह दुर्गंध आ रही थी। लोगों ने उसे देखा और उसके पास जो कागज था वह पढा। उसमें लिखा था कि ''जो भी मुझे अभी एक ग्लास पानी पिलायेगा उसे मैं अपने जीवन की तमाम संपत्ति प्रदान करने हेतु तैयार हुँ''। महापुरुषो ने कहा है,

**'अर्थानां अर्जने दुःखं, अर्जितानां च रक्षणे।**
**आये दुःखं व्यये दुःखं, धिगर्थं दुःखकारणम्॥**

संपत्ति को प्राप्त करते समय, प्राप्त की हुई संपत्ति की रक्षा करते समय, आमदनी में और व्यय करते समय दुःख होता है। इस दुःख के कारण स्वरुप, धन-दौलत को धिक्कार हो।

याद रखना,

**संपत्ति से भोजन मिलेगा, भूख नहीं**
**पानी मिलेगा, प्यास नहीं**
**डनलोप की गद्दी मिलेगी, नींद नहीं**
**घडी मिलेगी, समय नहीं**
**पुस्तक मिलेगा, ज्ञान नहीं**

मानवी प्रथम संपत्ति को प्राप्त करने हेतु दिन-रात, क्षुधा-प्यास, शर्दी-गर्मी इन सब की परवाह किये बिना शरीर के आरोग्य का खर्च कर देता है, उपयोग कर लेता है और फिर उसी आरोग्य की प्राप्ति करने हेतु संपत्ति का खर्च कर देता है, उपयोग कर लेता है।

यह तो वही हो गया कि साफ वस्त्र पहनकर कीचड में गिर जाना और फिर शरीर व वस्त्र पर लगे कीचड को साफ करने हेतु शुद्ध होना।

कागज के टुकडे करके उसे पुनः एक करने हेतु मजदूरी करना।

स्वयं ही घर में पेट्रोल डालकर आग लगाना और फायरब्रिगेड को फोन करके आग बुझाने हेतु बुलाना।

**Neat and clean** बंगलो में कचरा फैंककर मलिन बनाने के पश्चात् उसी बंगले को साफ करने हेतु झाडु-पोछा लगाना।

सोते समय नींद की गोलीयाँ खाना और उठने के लिये **alarm** बजाना।

दिन रात संपत्ति के पीछे मत भागो। अब तो जागो, परलोक में एक आना भी साथ नहीं आयेगा। तो फिर संपत्ति के लिये इतनी मजदूरी क्यों कर रहे हो ? कुछ लोग कहेंगे कि "महँगाई का जमाना है, बिना धन के गुजारा कैसे होगा ?" सर्वप्रथम यह बात जान लो कि आपके पास दूध का ग्लास भरा हुआ है और पास में शक्कर का डिब्बा है। अब आपको यदि मीठा दूध पीना है तो क्या करोगे ? यही ना कि उस शक्कर के डिब्बे में से दो चम्मच शक्कर दूध के ग्लास में डालकर मिश्र करोगे।

शक्कर पुण्य के स्थान पर है और मिश्रण करने की क्रिया पुरुषार्थ के स्थान पर है। आप बिना शक्कर के दिन-रात दूध में चम्मच को घुमाते रहोगे तो वह कभी भी मीठा नहीं बनेगा। जीवनभर यह करने पर भी दूध मीठा नहीं बनेगा। जैसे दूध में शक्कर मिलाने पर ही वह मीठा बनता है वैसे दिन-रात मेहनत करने से धन प्राप्त नहीं होगा बल्कि पुण्य का साथ होना जरुरी है।

यह बात भी स्पष्ट है कि मात्र शक्कर का डिब्बा रख देने से दूध मीठा नहीं बनेगा बल्कि पुरुषार्थ करना ही पडेगा। अर्थात् निष्कर्ष यही प्राप्त होता है कि पुण्य + पुरुषार्थ। दोनों का साथ होने पर ही धन की प्राप्ति होगी और उसमें भी पुण्य की जरुरत विशेष रुप से है ९०% पुण्य की जरुरत है और पुरुषार्थ की जरुरत १०% है।

पुण्य ही नहीं होगा तो चाहे कितना भी पुरुषार्थ कर लो परिणाम शून्य ही होगा और पुण्य सत्कार्य से ही प्राप्त होता है। आप अगर सत्कार्य, धर्म को त्यागकर दिन-रात संपत्ति के पीछे ही दौडते रहोगे तो पुण्य कैसे मिलेगा ? पुण्य के बिना संपत्ति भी कैसे मिलेगी ?

अतः आज से, अभी से यह तय करो कि आपके दिन का खर्च प्राप्त हो जाये उसके पश्चात् दुकान बंद करके धर्म आराधना में लीन हो जाना है। क्या यह निर्णय ले पाओगे ?

हमें कई लोग कहते है कि "गुरुदेव ! भविष्य का भी विचार करना पडता है ना ? कोई बडी बिमारी आ जायें, **hospital** में भर्ती होना पडे, पुत्र को **school** या **college** में **admission** प्राप्त करने **donation** हेतु देना पडता है। अचानक ही घर में कोई प्रसंग हो तब यदि धन का संग्रह रखा हो तो तमाम कार्य आसानी से पूर्ण हो जाते है।"

वाह ! शाबाश... यहाँ आपको आपके भविष्य का विचार हो जाता है, पर कौन से भविष्य का ? मात्र इस लोक के भविष्य का ही विचार आता है ना ? जबकि मैं आपके इस लोक के साथ-साथ परलोक के भविष्य की भी चिंता कर रहा हुँ।

इस लोक में धर्म आराधना का त्याग करके १८-१८ पापों का सेवन करके जो धन आप जमा कर रहे है, जब उन पापों का घडा फूटेगा और उन पापों का उदय होगा तब हड्डीयाँ भी काँपने लगेगी। आँखो से अश्रुपात होगा फिर भी कर्मराजा दया नहीं करेगा। वह तो उसका हिसाब वसूल करके ही छोडेगा।

जिस संपत्ति को प्राप्त करने हेतु आप दिन-रात मेहनत कर रहे हो उसके द्वारा पूरा परिवार मौज मना रहा है। किन्तु याद रखना कि आपके पापों का फल प्राप्त करने हेतु कोई भी व्यक्ति भाग नहीं देगा। वह तो आपको स्वयं ही भुगतना पडेगा।

जंगल का राजा सिंह उसकी क्षुधापूर्ति हेतु हाथी को मारकर अपनी भूख अनुसार अपना पेट भरकर वहाँ से चला जाता है। उसके पीछे लोमडीयाँ भी मेहफिल मना लेती है किन्तु हाथी को मारने का पाप किसे लगेगा ? अभी भी विश्वास ना हो रहा हो तो जानो यह सत्य घटना जिससे आपकी शंका का समाधान अवश्य होगा।

मलाड में रहनेवाले एक करोडपति सेठ ने दिन-रात मेहनत करके संपत्ति उपार्जन की थी। अपने **bank account** में संपत्ति जमा करवाई। यही विचार था कि यह संपत्ति उसे मुश्किल समय में मदद करेगी। भविष्य में कोई तकलीफ पैदा होने पर संपत्ति के द्वारा उसका रक्षण हो जायेगा, यही

उसके विचार थे ।

एक दिन किसी कारण से सेठ अपनी संपत्ति लेने बैंक में गये । उसके घर और बैंक के बीच मात्र ५ मिनिट का ही अंतर था । बैंक से पैसे निकालकर घर जा ही रहे थे कि अचानक कुछ चोर वहाँ आ गये । दिनदहाडे भरे बाजार में लोगों की नजर के सामने ही वह चोर सेठ के पेट में छूरी से हमला करके तमाम संपत्ति लूँट कर वहाँ से भाग गये । वह सेठ तडपते हुए वहीं मर गये ।

जिस संपत्ति को उसने तारक मान रखा था वही संपत्ति उसके लिये मारक बन गई । जिसे आप रक्षक मानते हो वही भक्षक बन गया ।

संपत्ति आज तक ना किसी की हुई है और ना ही आगे किसी की होगी । जिसका भाग्य पुण्य से प्रबल है उसी के पास संपत्ति रहेगी ।

यदि आपका पुण्य प्रबल है तो किसी में भी यह सत्त्व नहीं कि आपकी संपत्ति की तरफ नजर भी उठा सके । उस संपत्ति को चोर चोरी नहीं कर पायेगा, लूँटारु लूँट नहीं पायेंगे, अग्नि में जलेगी नहीं, दिमक का भय नहीं, पानी में डूबेगी नहीं और यदि आपका पुण्य ही समाप्त हो गया तो उस संपत्ति को आपने कहीं भी छुपाकर रखा होगा, कितने ही ताले लगाकर सब से बचाया होगा और चाहे कितने भी पहरेदार उसकी रक्षा हेतु रखे होंगे पर वह संपत्ति आपके पास नहीं रह पायेगी ।

कुछ लोग कहते है कि हाथ जोडकर बैठे रहने से अच्छा है कि कुछ मेहनत कर ले ताकि दिल को सांत्वना प्राप्त हो, भले ही निष्फलता मिले किन्तु मेहनत करने का सुख तो मिलता है ना ? याद रखो,

पूर्व के काल में दूध को मिट्टी के घडे में रखा जाता था । सायंकाल उस दूध में मिश्रण डालकर मटके में ही जमा दिया जाता था । सुबह होते ही वह दहीं बन जाता और फिर दहीं को मथने से छाछ बन जाती । आज मशीन के द्वारा दहीं से छाछ बनाई जाती है किन्तु पूर्व के काल में दहीं को मथने पर छाछ बनाई जाती थी । यह कार्य स्वयं करना पडता था । २-३ घंटे की मेहनत के पश्चात् छाछ बनती और तभी उपर से ताजा मक्खन निकालकर ताजा घी बनाया जाता था और छाछ भी ताजी ही प्राप्त होती । मध्याह्न भोजन में घी से लथपथ रोटे, गुड, छाछ और मिर्च, यही उनका आहार था ।

एक बार सास को कुछ कार्य होने पर बहु को कहने लगी कि ‘‘मैं

कुछ कार्य निपटाकर आ रही हुँ, तब तक तुम छाछ बना लेना ।'' बहु ने २-३ घंटों तक कडी मेहनत की परंतु मक्खन ही नहीं निकलता । वहीं सासुमा आ गये, उन्होंने बहु को पसीने से लथपथ देखा । किन्तु बहु के कडी मेहनत करने पर भी मक्खन नहीं मिल रहा यह देखकर सासुमा भी दंग रह गये । उन्होंने मटके के अंदर देखा तो चौंक उठे, जोरों से चिल्लाने लगे कि ''हे भगवान ! सारी मेहनत पानी में''

हकीकत यह थी कि सासुमा जैसे ही बाहर चले गये तब बहु ने मटके के भीतर देखे बिना ही वलोवन का कार्य शुरु कर दिया था । वहाँ दो मटके थे, एक में पीने का पानी था और दूसरे मटके में छाछ बनानी थी । बहु ने भूल से दहींसंपन्न मटके के बदले पानी वाले मटके में वलोवन शुरु कर दिया... और फिर तो सासुमा ने...

६ घंटे... ६ महीने... ६ वर्ष आप पानी में ही क्रिया करते रहोगे किन्तु उसमें से कभी मक्खन प्राप्त नहीं होगा । आप घाणी में चाहे कितनी भी रेत डालो उसमें से एक बुँद भी तेल नहीं निकलेगा । आप चम्मच ले कर अरब समंदर के पानी का माप करने बैठ जाओगे तो जन्म समाप्त हो जायेगा, पर समंदर का अंत नहीं आयेगा । आपकी मेहनत भी पानी में ही बह रही है, क्या यह मेहनत करके दिल में शांति मिलेगी ?

सही मार्ग की मेहनत हमेशा सफल होती ही है । वैसे ही पुण्य के साथ किया गया पुरुषार्थ भी अवश्य सफल होता ही है । मैं आपको हाथ बाँधकर बैठे रहने का नहीं कहता । मैं मात्र यही कह रहा हुँ कि धर्म को त्यागकर दिन-रात संपत्ति के पीछे लगे रहने से संपत्ति कभी प्राप्त नहीं होगी । किन्तु धर्म के द्वारा उपार्जन किये गये पुण्य के द्वारा ही संपत्ति प्राप्त होगी । इसलिए जीवन में धन से ज्यादा धर्म को महत्त्व देना चाहिये ।

याद रखे, सुख संपत्ति से नहीं बल्कि संतोष से ही प्राप्त होता है । ''संपत्तिवृद्धि से सुखवृद्धि होती है'' इस भ्रमणा में ना रहे । संपत्ति तो मम्मण सेठ के पास भी अत्यंत थी किन्तु उसके पास संतोष नहीं था इसलिए दुःखी बनकर रह गया ।

करोडपति सेठ होने के बावजुद ज्यादा संपत्ति की लालच में रात्रि के समय ठंड की ऋतु में भी नदी में जा कर कोई टूटी हुई नाँव या जहाज की लकडीयाँ तैर रही हो उसे ले आता था । उसे बेचकर जो भी पैसा मिलता

उसको जमा करता रहता था । किसी दिन रानी ने रात्रि को मम्मण सेठ की यह क्रिया देख ली, उन्होंने राजा श्रेणिक को यह बात बताते हुए कहा कि ''हमारे राज्य में इतने दु:खी लोग है और आपको दयाभाव भी नहीं हो रहा ?'' श्रेणिक राजा को भी यह बात सुनकर दु:ख हुआ । दूसरे ही दिन उन्होंने राजदरबार में मम्मण सेठ को हाजिर रहने का आदेश दिया । राजा ने जो भी चाहे वह माँगने को कहा तब मम्मण सेठ कहता है ''राजन ! सर्वप्रथम आप मेरे गृह पधारो तब मैं आपको मेरी इच्छा बता दुँगा ।'' राजा उसके गृह पधारें ।

मम्मण सेठ श्रेणिक राजा को अपने गृह के आखिरी कमरे में ले कर गया । राजा तो वहाँ का दृश्य देखकर आश्चर्यचकित हो गये । उस कमरे में रत्न के दो बैल थे । संपूर्ण बैल रत्नों से श्रृंगारीत थे । उनमें से एक भी रत्न की तुलना में संपूर्ण राज्य की संपत्ति भी अधूरी थी । राजा ने पूछा कि ''इतनी संपत्ति होने के बावजुद भिक्षुको की भाँति जीवन क्यों जी रहे हो ?'' तब मम्मण सेठ ने कहा ''राजन ! ध्यान से देखो । इन दो बैल में से एक बैल का सींग खाली है । वह सींग रत्नों से भरपूर हो जायेगा फिर मेरे मन को शांति मिलेगी ।''

ऐसी अमाप संपत्ति का मालिक मम्मण सेठ मात्र तेल और कठोल का ही भोजन करता था । परिवार के सदस्य जब भोजन ग्रहण करने बैठते तब उनके भी निवाले गिनता था । अब बताओ, वह संपत्ति भी क्या काम की जो जीवन को शांति से जीने भी ना दे ।

क्या आप सब उस मम्मण सेठ के वंशज तो नहीं हो ना ? यदि आपको आपकी संपत्ति से कोई संतोष नहीं है तो चिंतन करने योग्य सवाल है । सही कहा ना ?

एकबार एक दूत ने काफी समय से पुत्र की इच्छा रखनेवाले राजा को कहा ''राजन ! आपकी जय हो... विजय हो.. जय जयकार हो... आज आपके गृह में पुत्र का जन्म हुआ है...'' राजा तो अत्यंत खुश हो गया और दूत को ७७ पीढी तक कोई कमी ना हो उतना धन प्रदान किया । धन प्राप्त होते ही वह दूत अत्यंत रोने लगा ।

सबको आश्चर्य हुआ, किसीको समझ नहीं आ रहा था कि वह रो क्यों रहा है । अंत में किसीने पूछा कि ''भाई ! तुम रो क्यों रहे हो ?'' दूत ने

कहा कि "राजा ने मेरी ७७ पीढी तक खत्म ना होवे इतना धन तो दिया है किन्तु मेरी ७८वीं पीढी का क्या होगा... ?"

जहाँ मात्र संपत्ति ही है वहाँ सुख नहीं है किन्तु जहाँ संतोष है वहाँ सुख है । ज्ञानसार नामक ग्रंथ में महोपाध्याय श्री यशोविजयजी महाराजा ने कहा है कि,

**परस्पृहा महादुःखं, निःस्पृहत्वं महासुखं ।**
**एतदुक्तं समासेन, लक्षणं सुखदुःखयोः ॥**

किसीकी भी अपेक्षा, इच्छा रखना ही सब से बडा दुःख है और अपेक्षारहित, इच्छारहित जीवन जीना ही सब से बडा सुख है ।

याद रखो कि इच्छा का अंत कभी नहीं होगा । एक इच्छा के पूर्ण होते ही दूसरी इच्छा तैयार हो जायेगी, उसको पूर्ण करने पर तीसरी इच्छा... इन इच्छाओं की पूर्ति करते हुए भी हमारा आयुष्य समाप्त हो जायेगा किन्तु इच्छाओ का अंत नहीं होगा । हमारी साँसे पूर्ण हो जायेगी किन्तु इच्छा, अपेक्षा कभी पूर्ण नहीं होगी । हम सबको इस बात का अनुभव है ।

बाल्यकाल में इच्छा रहती है कि कुछ अच्छे खिलौने मिलने चाहिये तो पूर्ण दुनिया का सुख मिल जाये । कंपासबोक्ष, बेग, अच्छे कपडे, घडी, नई साईकिल, नये जूते, नया मोबाईल, डीग्री, नौकरी, स्त्री, पुत्र, पुत्र का विवाह, दादा बनने की इच्छा, पौत्र के साथ खेलने की इच्छा, उत्तम भोजन, सेवा... इस प्रकार जीव को मरते दम तक कोई ना कोई इच्छा होती ही रहती है और मृत्यु तक जीव अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने की योजना ही बनाता रहता है और दुःखी होता रहता है । इसलिए सुखी होना है तो इच्छाओं से पीछे हटना जरुरी है और संतोष में रत रहना जरुरी है ।

याद करो **पुणिया श्रावक को !** आज के दिन की आय होने पर व्यापार बंद करके धर्म-आराधना में तल्लीन हो जाते थे । ना कल की चिंता, ना भविष्य की । मात्र वर्तमान में ही मस्ती से जीना । स्वयं उत्तम आत्मा तो थे ही और उनके श्राविका भी उत्तम भावों से अभिभूत थे । दोनों एक बार ही भोजन करते थे और अद्‌भूत प्रसन्नता से जीवनयापन कर रहे थे । एक दिन साधर्मिक भक्ति करने का मन हुआ तो उसके लिये ज्यादा धन कमाने की इच्छा नहीं हुई बल्कि तय किया कि अब दोनों बारी-बारी से उपवास करेंगे

और उनके भोजन से साधर्मिक की भक्ति करेंगे । समय प्राप्त होते ही सामायिक में लीन हो जाते थे । इस तरह धर्ममय जीवन का आनंद प्राप्त किया ।

मम्मण सेठ के पास अमाप संपत्ति थी किन्तु संतोष नहीं था अत: सुखी नहीं था, पुणिया श्रावक के पास संपत्ति नहीं थी किन्तु संतोष था अत: सुखी थे ।

श्रमण-श्रमणी भगवंत के पास भी एक रुपिया नहीं किन्तु प्रगाढ मस्ती से अपना जीवन जी रहे है । कारण क्या ? कोई भी अपेक्षा नहीं है । तभी तो महोपाध्याय श्री यशोविजयजी महाराजा ने कहा है,

**भूशय्या भैक्षमशनं जीर्णवासो वनं गृहं ।**
**तथापि निःस्पृहस्याहो चक्रिणोप्यधिकं सुसं ।।**

साधुओं की शय्या क्या है ? धरती । धरती पर संथारा-उत्तरपट्टा बिछाकर निद्रा ग्रहण कर लेते है और लेट जाने के साथ ही तुरंत उत्तम नींद भी प्राप्त कर लेते है । जो नींद आप सांसारी को ए.सी. रुम में, डनलोप की गद्दी के उपर, मुलायम चद्दर ओढकर, नींद की गोलियाँ खा कर भी नहीं आती ।

श्रमण भगवंतो को क्या भोजन करना है ? घर-घर जा कर गोचरी वोहरते है । कभी मेवा-मिठाई से पात्र भर जाता है तो कभी रोटी की भी तकलीफ होती है । कभी ३२ पकवान मिल जाते है तो कभी पानी पी कर भी पेट भरना पडता है । फिर भी तमाम स्थिति में वह प्रसन्नता रहती है जो आपको घर में सुवर्ण के थाली-कटोरे में ३२ पकवान ग्रहण करते समय भी ना हो ।

**गुरु भगवंत के dress एक ही होते है पर address अनेक होते है, जबकि आपका address एक होता है पर dress अनेक होते है ।** गुरु भगवंतो को पहनने हेतु श्वेत रंग के जिर्ण-शीर्ण वस्त्र होते है फिर भी मुख पर वह प्रसन्नता होती है जो आपको महँगे, विविध रंग से भरपूर, फेशनपरस्त, प्रतिदिन नये-नये वस्त्र पहनते समय भी नहीं होती ।

साधु-साध्वीजी भगवंतो को कहाँ रहना है ? कभी शालिभद्र के महल जैसे उपाश्रय में तो कभी सुदामा की झौंपडी के जैसे उपाश्रय में, कभी

उपवन में तो कभी वैरान रन में, कभी स्कुल में तो कभी महादेव के मंदिर में, कभी उत्तम सपाट जमीन पर तो कभी बंझर कष्टप्रदायक जमीन पर, फिर भी उनके मुख पर वह तेज चमकता रहता है, जो करोडों के महल जैसे **बंगले-फ्लेट, डाईनींग टेबल, फ्रीज, टी.वी., वोशिंग मशीन, माइक्रो ओवन, होम थियेटर, नोकर आदि आपकी सेवा में हाजिर** होने पर भी आपको प्राप्त नहीं होता। कारण क्या ?

**न हि सुही देवता देवलोए, न हि सुही पुढवी पहराया ।**
**न हि सुही सेठ सेनावइया एगंत सुही साहु वीतरागी ।।**

देवलोक के देवता भी सुखी नहीं है, समग्र पृथ्वी का राजा भी सुखी नहीं है, सेठ या सेनापति भी सुखी नहीं किन्तु वास्तव में कोई सुखी है तो मात्र वीतरागी साधु ही सुखी है।

धरती पर संथारा करनेवाले, आपकी भिक्षा के द्वारा भोजन ग्रहण करनेवाले,जीर्ण-शिर्ण वस्त्र धारण करनेवाले, वन में रहनेवाले साधु चक्रवर्ती से भी ज्यादा सुखी होते है क्योंकि उनके जीवन में कोई अपेक्षा नहीं है । जबकि आपका जीवन सेंकडो अपेक्षाओं से भरपूर है। उन्हें जो प्राप्त होता है उसमें संतोष रखते है जबकि आपको जो मिला है उसमें आपको संतोष नहीं है और जो नहीं मिला वह प्राप्त करने की अपेक्षा है। यदि आपको इस भव में सुखी होना है तो अपेक्षाओं का त्याग करके संतोषमय जीवन जीना शुरु कर दो।

**Don't expect anything from anybody.**
**किसी भी व्यक्ति से कोई भी वस्तु की अपेक्षा ही ना रखो ।**

कुछ जीवों का पूर्वभव का पुण्य ही इतना बलवान होता है कि उनके पानी माँगने पर दूध मिल जाता है । उसे अत्यंत भोगसामग्री और भौतिक सुखों की प्राप्ति सहज हो जाती है। अज्ञानी मनुष्य उन भोगसुखों में मदोन्मत बनकर अपना पुण्य बरबाद कर देते है और दुर्गति के द्वार खोल देते है । किन्तु ज्ञानी आत्मा समझते है कि इन भोगसुखों के पीछे, क्षणिक सुखो में आसक्त नहीं होना है। उनका लक्ष्य तो अनंतकाल के अनंत सुख को प्राप्त करना ही होता है।

**भरत महाराजा** के पास छः खंड का साम्राज्य था। अमाप भौतिक

सुखों की सामग्री थी । ९ निधि, १४ रत्न, ६४००० देवांगना जैसी स्त्री, ९६ करोड गाँव होने के बावजुद भरत राजा सावधान थे अतः इन तमाम भौतिक सुखो में आसक्त नहीं बने, फलतः शाश्वत सुख के मालिक बने । आपको भी यदि शाश्वत सुख की प्राप्ति करनी है तो अल्पकालिन, क्षणिक सुख में जागृत बनना पडेगा । उन सुखो में आसक्त नहीं होना है, लिप्त नहीं होना है, आनंदविभोर नहीं होना है ।

**सुख में घमंड करना नहीं, सुख में लीन बनना नहीं,**
**दुःख में डरना नहीं, दुःख में दीन बनना नहीं**

## (३) स्त्री

***प्रभु साथे जो प्रीत वंछो तो नारी संग निवारोजी***

आप यदि सच्चे मन से परमात्मा से प्रीत करना चाहते हो तो आपको स्त्री का संग छोडना होगा क्योंकि स्त्री साधना में बाधक बन जाती है । महापुरुषो ने कहा है कि "संसार में विधाता ने स्त्री के बहाने से ऐसा जाल बिछाया है जिसमें विवेकरहित मनुष्य, देव, तिर्यंच, दानव तमाम आत्मा फँस जाते है ।"

शिकारी पंछीयों को पकडने हेतु दाने डालता है और साथ में ऐसी जाल बिछाता है जो पंछीयों को दिखती भी नहीं । पंछी तो मनपसंद दाने देखकर तुरंत उसे ग्रहण करने चले जाते है वहीं जाल में फँसकर शिकारी के हाथों पकडे जाते है । वैसे ही मोहराजा रुपी शिकारी ने दाने के समान स्त्री बनाई है । जिसके आकर्षण से पक्षी के समान बिचारे पामर जीव फँस जाते है ।

इन्द्रियपराजयशतक में पूर्वमहापुरुष ने कहा है कि,

**'मणयनवणीयविलओ जह जायइ जलणसंनिहाणंमि ।**
**तह रमणिसंनिहाणे विद्दवइ मणो मुणीणं पि ॥**

जैसे अग्नि के पास रखा गया मक्खन या मोम पिघल जाते है वैसे स्त्री के पास रहने से मुनि भगवंतों का मन भी चलायमन हो जाता है । इसलिए मुनि भगवंत स्त्री के संग से दूर रहते है । शायद अनजाने में स्त्री के उपर दृष्टि चली जाये तो भी जिस प्रकार सूर्य के सामने नजर करते ही दृष्टि

को हटाना पडता है उसी प्रकार अपनी नजर को फैर लेते है।

याद करो **नरेन्द्र को !** एक बार छत पर अभ्यास करते करते चक्कर लगा रहे थे। तभी अचानक सामनेवाले के घर में दृष्टि गई। कोई युवति स्नान कर रही थी। कुछ पल तक एक नजर से उसको देखा, कुछ समय के पश्चात् दृष्टि को हटा लिया, विचारधारा शुरु हुई और स्वयं के गलत कार्य का एहसास हुआ, भूल होने का पश्चाताप हुआ। इस भूल की सजा मिलनी ही चाहिये यह संकल्प हुआ।

तुरंत नीचे उतर गये। रसोईघर में जा कर एक डिब्बे में से लाल तीखी मीर्च का पावडर ले कर दोनों आँखो में डाल दिया।

आँखो में भयावह जलन हुई, पानी की धारा बहने लगी। उस वक्त भी मन में यही विचार था कि "मेरी इन आँखो ने गलत कार्य किया था तो उसकी सजा मिल गई। भविष्य में इस पाप का पुनरावर्तन हुआ तो इससे भी भयावह सजा मिलेगी।" वही नरेन्द्र आगे स्वामी विवेकानंद बने।

जगत में जिन पुरुषों के माहात्म्य को देवेन्द्र भी नहीं तोड सकते उन पुरुषों को भी स्त्रीओं ने अपना गुलाम बना दिया है। स्वयं के दास बनानेवाले उन पुरुषों को स्त्री अपने इशारे पर नृत्य करवा सकती है। स्त्री घर में राजा की भाँति अपना रौफ जमाती है और पुरुष नौकर की भाँति कार्य करता है और स्त्री की तमाम आज्ञा का पालन करता है।

**सियं च उण्हं सहंति मूढा, इत्थीसु सत्ता अविवेअवंता।**
**इलाइपुत्तं व चयंति जाइं, जिअं च नासंति अ रावणुव्व॥**

स्त्री के विषय में आसक्त होनेवाले पुरुष ठंड, गर्मी, भूख, प्यास सबकुछ सहन कर लेते है। इलाचिपुत्र ने नाट्य करनेवाली स्त्री के प्रेम में पागल बनकर अपने सगे माता-पिता, परिवार, समाज, इज्जत को भी त्याग दिया था।

२ मिनिट के स्त्री के प्रेम में पागल बनकर २२-२२ वर्ष के माता-पिता के स्नेह को भूलनेवाले लोगों की कमी नहीं है इस दुनिया में। सीता के रुप में मोहांध बननेवाले रावण को भी अपने प्राणों से किमत चूकानी पडी थी। यह बात तो जगप्रसिद्ध है।

अरे ! जिस स्त्री के लिये राजा ने अपना राज्य, राजवी वैभव,

स्वजन, संपत्ति सबकुछ छोडकर वन में भटकने लगा, वन में स्त्री को भूख लगने पर और कुछ ना मिलने पर अपने ही शरीर का माँस दे कर भोजन करवाया, प्यास लगने पर अपने ही शरीर का खून पिलाया, थकान लगने पर कांधे पर बिठाकर घुमता रहा... वही स्त्री परपुरुष में आसक्त बनकर उसी राजा को कुंए में धक्का दे देती है।

**जुवईहिं सह कुणंतो संसग्गिं, कुणई सयलदुक्खेहिं।**
**न हि मुसगाणं संगो, होई सुहो सह बिलाडेहिं ॥**

स्त्रीओं का संसर्ग करनेवाला पुरुष तमाम दुःखो से संबंध बना लेता है अर्थात् उसे विभिन्न दुःखों का सामना करना पडता है क्योंकि मूषकों को बिल्ली के साथ संग करना उसके हित में नहीं है।

याद करो **राजा मुंज को !** युद्ध में करारी हार प्राप्त हुई। तैलंगण के राजा तैलप ने राजा मुंज को बंदी बनाकर कारागृह में धकेल दिया। उसके भोजन की व्यवस्था तैलप राजा की बदसूरत बहन मृणालिनी करती थी। इस प्रकार हररोज भोजन के माध्यम से मुंज और मृणालिनी का मिलन होने से दोनों एकदूजे के प्रति आकर्षित बन गये, एकदूजे के प्रेम में पागल बन गये।

कुछ समय के पश्चात् राजा मुंज के भरोसेमंद सेवको ने उन्हे कारागृह से मुक्त करने हेतु गुप्त सुरंग बनाई। अब राजा मुंज को मुक्त होने से कोई नहीं रोक सकता था। राजा मुंज भी भागने की तैयारी कर रहे थे वहीं मृणालिनी आ गई। राजा मुंज ने उसे तमाम बात कही और स्वयं के साथ चलने के लिये कहा। मृणालिनी ने कहा ''कुछ समय प्रतिक्षा करो, मैं मेरे किमती आभूषणों की पेटी ले कर आती हुँ, फिर हम यहाँ से भाग जायेंगे।''

मृणालिनी ने सोचा कि ''यदि राजा मुंज कारागृह से मुक्त हो जायेंगे तो पुनः उसके राज्य में उसकी रुपवंत रानी के पीछे पागल हो जायेंगे। वहाँ जा कर मेरी तरफ देखेंगे भी नहीं, अतः उन्हें यहाँ से भागते हुए किसी भी हाल में रोकना ही पडेगा।''

यह सोचकर मृणालिनी तुरंत अपने भाई तैलप के पास पहुँच गई और तमाम बातें बता दी। तैलप ने तुरंत अपने सैनिको को भेजा और राजा मुंज को पकडकर घर-घर भीख मँगवाई। राजा मुंज घर-घर भीख माँगते वक्त लोगों को शीक्षा दे रहे है कि ''कभी भी किसी औरत पर भरोसा मत

करना अन्यथा राजा मुंज के जैसी ही आपकी दशा हो जायेगी।"

राजा तैलप ने राजा मुंज से घर-घर भिक्षा मँगवाकर विशाल मैदान के मध्य में खडा कर दिया और दूसरी तरफ से पागल बन चुके हाथी को मुक्त किया। उस हाथी ने अपने पैरों तले राजा मुंज को कुचल दिया।

शास्त्रकार भगवंतो ने स्त्रीसंग से दूर रहने को कहा है। जिन आत्माओं ने स्त्री का संग किया है वह व्यक्ति बडे और विशिष्ट पद प्राप्त करने के बावजुद वहाँ से पतित हुए है।

हा ! तीर्थंकर, महापुरुषो को जन्म देनेवाली, संस्कारों का सिंचन करनेवाली, पतित परिणामी को भी उत्थान का मार्ग बतानेवाली स्त्री भी है किन्तु यहाँ उन स्त्रीयों की बात नहीं है। यहाँ तो जो साधना में बाधक बन रही है उन स्त्रीयों की ही बात है।

निमित्त मिलते ही पतन प्राप्त करने से बेहतर है कि निमित्तो से दूर ही रहा जाये, इसमें ही सलामती है। यदि आपको आपका जीवन सुरक्षित रखना है तो आपके जीवन को पतन के मार्ग में ले जाने वाले इन तीनों विषय से दूर ही रहना उत्तम है।

## *(२) दुःख में समाधान - आर्तध्यान ना हो जाये*

कोई भी जीव जब तक संसार में है तब तक उसके जीवन में दुःख तो आयेगा ही। संसार में कोई भी जीव हमेशा सुखी नहीं रह सकता। यदि संसार में सर्वदा सुख ही प्राप्त होता तो किसी को मोक्षप्राप्ति की इच्छा ही ना होती। संसार तो दुःख का **identity card** है। तभी तो ज्ञानी भगवंतो से संसार को दुःख स्वरुप, दुःख फलक और दुःखानुबंधी कहा है। यदि आपको दुःखमुक्त होना है तो समाधान करना अत्यंत आवश्यक है।

**धर्मस्य फलमिच्छन्ति, धर्मं नेच्छन्ति मानवाः।**
**पापस्य फलं नेच्छन्ति, पापं कुर्वन्ति सादराः॥**

कई सारे मनुष्य धर्म के फल की इच्छा तो करते है पर धर्म की इच्छा नहीं करते। उन्हें सुख चाहिये परंतु धर्म का पालन नहीं करना। यह तो वही बात हो गई कि जोहरी की दुकान से आभूषण तो खरीदने है परंतु रुपयों का भुगतान नहीं करना। जोहरी तो क्या, कोई सब्जीवाला भी पैसे के बगैर

आपको खडे नहीं रहने देगा । जैसे भुगतान किये बिना कोई चीज नहीं मिलती वैसे धर्म किये बिना सुख भी नहीं मिल सकता ।

मनुष्य पाप के फल की इच्छा नहीं रखते किन्तु पाप अत्यंत आदरपूर्वक करते है । उन्हें दुःख नहीं चाहिये परंतु पाप किये बिना वह रह भी नहीं सकते । अग्नि को हाथ लगाओगे तो वह आपको जलायेगी ही वैसे पाप करोगे तो दुःख तो मिलेंगे ही । अतः यह बात जान ले कि जो भी दुःख प्राप्त होता है उसके पीछे आपके पाप ही कारणभूत है । यदि दुःख नहीं चाहिये तो पापकृत्य बंद कर देना जरुरी है । अनेक जीवों को यमलोक पहुँचाकर हमें सुख कैसे मिलेगा ?

**ग्रंथ पंथ सब जगत में बात बतावत दोय,**
**सुख दिये सुख उपजे, दुःख दिये दुःख होय**

इस जगत में जितने भी ग्रंथ है, जितने भी पंथ है वह तमाम मात्र दो बात ही करते है कि "हे मानवी ! यदि तुझे सुख की कामना है तो तु अन्य जीवों को भी सुख प्रदान कर और यदि तुझे दुःख की कामना है तो तु अन्य जीवों को दुःख प्रदान कर ।"

**'वारा पछी आवशे वारो,**
**आजे मारो ने काले तारो'**

आम के बीज बोने पर आम का पेड मिलेगा और नीम के बीज बोने पर नीम का पेड मिलेगा । आपको क्या चाहिये आम के मीठे फल या नीम के कडवे फल ? दोनों बात आपके हाथ में है । आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि आम के बीज बोये और नीम का पेड बनकर आया ।

तभी तो कहा जाता है कि –

**As you sow, so shall you reap**
**जैसा बोओगे, वैसा पाओगे**

इस दुनिया में तीन प्रकार के जीव होते है ।

**( १ ) दुःख का प्रतिकार करनेवाले – दुर्गति प्राप्त होती है ।**

**( २ ) दुःख का स्वीकार करनेवाले – सद्‌गति प्राप्त होती है ।**

**( ३ ) दु:ख का सत्कार करनेवाले - परमगति प्राप्त होती है।**

*(१) दुःख का प्रतिकार करनेवाले -*

**मानवी रोते हुए जन्म प्राप्त करता है,**
**फरीयाद करते हुए जीता है,**
**निराश हो कर मरता है**

कुछ जीव ऐसे भी होते है जो दु:खो का सतत प्रतिकार करते है किन्तु याद रखे कि आपने जो कर्म बाँधा है उसका फल आपको मिलकर ही रहेगा । कर्मराजा देव-दानव-पशु-पक्षी-मानव-चक्रवर्ती-अरे स्वयं तीर्थंकर परमात्मा को भी नहीं छोडता तो हम कैसे उसका प्रतिकार करेंगे ?

लाखों वर्ष हो गये, लाखों तबीब हो गये फिर भी आज तक एक भी तबीब नहीं हुआ और एक भी वैज्ञानिक नहीं हुआ जिसने मृत्यु पर विजय प्राप्त किया हो, मृत्य को रोकने की औषधि बनाई हो । आपका कर्म जब, जहाँ, जिस समय में लिखा हो उस समय पर भुगतना ही पडेगा । उसको भुगतने के वक्त उसका प्रतिकार करना कितना उचित है ?

आप होटल में गये, टेबल पर बैठे, मनपसंद चीज का ओर्डर भी दे दिया, पेट भर के खाया अब भुगतान करने का समय आया तब आप कहोगे कि पैसे नहीं है तो चलेगा क्या ? अगर पैसे देने की ताकत ही ना थी तो होटल में जाना ही नहीं चाहिये था, वैसे ही अगर दु:ख सहन करने की हिंमत नहीं है तो पाप भी नहीं करना चाहिये था।

पाप किया है तो उसका फल तो भुगतना ही पडेगा । किन्तु यदि आप तत्समय हाय-वोय करोगे, कल्पांत करोगे तो वह पाप सहन करते करते अन्य नये पापों का बंधन भी कर लोगे। एक पाप सहन करने का सत्त्व नहीं है तो अन्य पाप भी कैसे सहन कर पाओगे ? १०० रुपये देने की ताकत नहीं तो १००० रुपये कैसे दे पाओगे ? १० मेहमान की स्वागता करने की शक्ति नहीं तो १०० मेहमानों की स्वागता कैसे कर पाओगे ?

आप श्वान को पथ्थर मारोगे तो श्वान पथ्थर को काट खायेगा किन्तु अगर आप सिंह को पथ्थर मारोगे तो वह पथ्थर को नहीं बल्कि आपके उपर ही हमला कर देगा। कुत्ते की नजर जो आया उसके उपर ही होती है, जबकि सिंह की नजर कहाँ से आया वहाँ जाती है । आपकी नजर कहाँ है ? दु:ख

आया उसके उपर या दु:ख जहाँ से आया उस पाप के उपर ?

**राजगृही का भिक्षुक !** प्रतिदिन भीख माँगने जाता है और पूर्वभव के कर्मों की वजह से उसे कहीं से भोजन प्राप्त नहीं होता । भूखा-प्यासा जीवन व्यतीत कर रहा है । किसी दिन नगरी में बडा महोत्सव हुआ ।

नगरी के तमाम लोग नये-नये वस्त्र पहनकर महोत्सव में जाते है । यह भिक्षुक भी सोचता है कि ''मैं कई दिनों से भूखा हुँ, अन्न का दाना तक नहीं मिल रहा । मात्र अपशब्द और अपमान से ही पेट भरना पड रहा है । आज नगरी में महोत्सव है और नगर के तमाम जन वहीं क्रीडा करने हेतु गये है । मैं भी वहाँ जाता हुँ, शायद वहाँ कुछ भोजन मिल ही जायेगा ।'' यह सोचकर अनेक आशा और अरमान के साथ स्वयं की क्षुधापूर्ति हेतु वह भिक्षुक भी उद्यान में गया ।

लोग महोत्सव का आनंद उठा रहे थे । अत्यंत आनंदपूर्वक महोत्सव पूर्ण करके लोग भोजन की तैयारी कर रहे थे । वह भिक्षुक भी वहाँ लोगों से भोजन की याचना करता है किन्तु कोई उसे भोजन प्रदान नहीं करता ।

अरे ! आश्चर्य तो यह था कि वहाँ और भी भिक्षुक थे और लोग उनको भोजन दे रहे थे किन्तु इस भिक्षुक को कोई भी भोजन प्रदान नहीं कर रहा था । कई बार, कई लोगों से याचना करने के बावजुद भोजन ना मिलने से भिक्षुक को मन में अत्यंत क्रोध उत्पन्न हुआ ।

उसने मन में सोचा कि ''इस नगर के लोग कैसे हरामखोर, पक्षपाती, नालायक है कि अन्य तमाम भिक्षुकों को भोजन दिया किन्तु मात्र मुझे ही भोजन नहीं दिया । मैं भी इन लोगों को सबक सिखाऊँगा ।'' यह सोचकर वह भिक्षुक निकटवर्ती पहाड पर चढ गया और उसके मन में मात्र नगरजनों को सबक सिखाने का विचार ही कार्यरत था ।

पहाड पर विशाल शिला देखते ही उसने शिला को धक्का लगाकर नगरजनों को मार डालने का घातक विचार किया । शिला को धक्का देते समय वह खुद ही गिर गया और शिला के नीचे आ कर मर गया । ७वीं नरक में उत्पन्न हुआ । यह फल है दु:ख के प्रतिकार का । दु:ख का प्रतिकार भी दुर्गतिप्रदायक है ।

**'रंक बनना तो फिर भी ठीक है, रांक बनना अनुचित है,**
**दरिद्र बनना तो फिर भी ठीक है, दीन बनना अनुचित है,'**

यदि उस समय उस भिक्षुक ने सोचा होता कि "मेरे कोई पूर्वकृत कर्मो का दोष है तभी मुझे भिक्षा नहीं मिल रही है। अन्य भिक्षुको को मिल रही है किन्तु मुझे नहीं मिल रही क्योंकि मेरा कर्म है।" यदि यह सोचकर समाधान कर लिया होता तो ३३ सागरोपम की सजा भी ना मिलती, दुर्गति में जाना ना पडता। किन्तु वह भटक गया। उसने श्वान की दृष्टि से सोचा। यदि उसने सिंह की दृष्टि से सोचा होता तो आत्मकल्याण कर लिया होता।

हमारे जीवन में भी इस प्रकार अनेक घटना बनती है तब हम मन में कौन सी दृष्टि से विचार करते है ? श्वान की दृष्टि से या सिंह की दृष्टि से ?

पूरे साल दिन-रात मेहनत करनेवाला निष्फल होता है और परीक्षा के दिनों में ही पुस्तक खोलनेवाला फर्स्ट क्लास पास होता है तब क्या विचार आता है ?

सम्हालकर, मर्यादा से और श्रेष्ठ भोजन करनेवाला भी बिमार रहता है और कभी भी, मर्यादाविहिन, कुछ भी खानेवाला भी स्वास्थ्य से भरपूर रहता है तब क्या विचार आता है ?

बडा पुत्र बरसों तक माता-पिता की सेवा करता है, उनकी चिंता करता है फिर भी उसकी कदर नहीं होती जबकि छोटा पुत्र मात्र दो दिन सेवा करता है तो हर तरफ उसकी प्रशंसा होती है तब क्या विचार आता है ?

यह घटना दिन-प्रतिदिन आपके जीवन में बनती रहती है। उन तमाम घटनाओं में सिंहदृष्टि को रखा तो मन का समाधान करना आसान होगा।

"मैंने पूर्वभव में प्रचुर जीवहिंसा की होगी तभी मुझे उत्तम आरोग्य की प्राप्ति नहीं हो रही और अन्य जीवों ने पूर्वभव में उत्तम जीवदया का पालन किया होगा तभी उसके शरीर में कोई तकलीफें नहीं हो रही।"

"मैंने पूर्वभव में अन्य के यश की चोरी की होगी, मेहनत किसी और ने की होगी और मैंने बिना वजह अपना नाम दे कर उसके यश को छीन लिया होगा तभी मुझे इस भव में यश की प्राप्ति नहीं हो रही। उस इन्सान ने पूर्व भव में स्वयं कार्य करके किसी और को यश दिया होगा, जिसके कारण इस भव में उसे आदर प्राप्त हो रहा है।"

**परिस्थिति का परिवर्तन हमारे हाथ में नहीं है परंतु मनःस्थिति का परिवर्तन हमारे हाथ में जरुर है। वर्षा का स्थंभन हमारे हाथ में नहीं है**

**किन्तु उसमें भीगना या नहीं वह तो हमारे ही हाथ में है । गाँव नहीं घुम सकता किन्तु गाडी को घुमना पडता है । गाडी के बदले गाँव को घुमानेवाला पागल ही कहा जायेगा ।**

इस प्रकार समाधान करने पर जीवन को प्रसन्नता से जीना संभव होगा और यह लोक व परलोक दोनों सुधर जायेंगे; किन्तु यदि दु:ख का प्रतिकार किया तो ''**धोबी का कुत्ता न घर का, न घाट का**'' जैसी हालत होगी । ना तो इस भव में सुख-चैन से जी पाओगे और परभव में भी दुर्गति ही मिलेगी । अत: अगर यह लोक व परलोक दोनों को सुधारना है तो दु:ख का प्रतिकार मत करो ।

**विधि के साथ वैर नहीं होता, जीवन संपूर्ण जहर नहीं होता ।**
**नसीब ने लिखा हुआ लेख है, उसमें कोई फेर नहीं होता ॥**

**( २ ) दु:ख का स्वीकार करनेवाले** - कुछ आत्मा होते है जो दु:ख को प्रसन्नता से स्वीकार लेते है, दु:ख प्राप्त होने पर विह्वल नहीं हो जाते बल्कि समाधान कर लेते है । ''मैंने जो बीज बोये थे उसका ही फल मुझे मिल रहा है,'' यह सोचकर, समाधान करके जीवन को प्रसन्नता से जीनेवाले होते है ।

दु:ख का प्रतिकार करने की कक्षा में रहनेवाले जीव परिस्थिति को बदलने का प्रयत्न करते रहते है जबकि दु:ख का स्वीकार करने की कक्षा में रहनेवाले जीव परिस्थिति को नहीं बल्कि मन:स्थिति को ही बदल देते है ।

**Everything is in order.**
**सब कुछ मेरे पूर्वकृत कर्मो का ही फल है ।**

''मेरे पूर्वकृत कर्म ही तमाम स्थितियों का निर्माण करते है । किन्तु मन:स्थिति तो मेरे हाथ में ही है । जैसे बडे पहाड बनाने का कार्य मेरे हाथ में नहीं है किन्तु पहाड पर चढना या ना चढना वह तो मेरे हाथ में ही है । वैसे परिस्थिति को अनुकूल बनाना मेरे हाथ में नहीं किन्तु परिस्थिति से अनुकूल बनना या प्रतिकूल बनना तो मेरे हाथ में ही है । परिस्थिति का प्रतिकार करना या स्वीकार करना वह तो मेरे हाथ में ही है ।''

जीवन में कभी भी, कोई भी दु:ख आये तब मात्र यही विचार करना है कि ''दु:ख मेरे जीवन में विकास हेतु ही आ रहा है । यह दु:ख मुझे नये-

नये अनुभव करवा रहा है। दु:ख तो मूक शिक्षक है जो हमें सिखाता है कि जैसे तुझे यह परिस्थिति पसंद नहीं वैसे अन्य जीवों को भी यह परिस्थिति पसंद नहीं, अत: तु कभी यह कार्य अन्य किसीके साथ मत करना।'' तभी तो कहा गया है कि,

**आत्मन: प्रतिकुलानि परेषां न समाचरेत्।**

अर्थात् जो तुझे पसंद नहीं वह व्यवहार अन्य के साथ मत करना।

पथ्थर को शिल्पी की मार सहन करनी पडती है तभी उसमें से प्रतिमा का निर्माण होता है और उसी प्रतिमा की लोग पूजा करते है। किन्तु यदि पथ्थर वह मार सहन नहीं करता तो वही पथ्थर सीढीयों के स्वरुप में उपयोग में लिया जाता है, जिसके उपर लोग पैर रखकर चलते है।

अरे ! दु:ख तो अत्यंत अच्छे है, कम से कम प्रभु का स्मरण तो करवाते है। सच कहना, आपको सुख में भगवान की ज्यादा याद आती है या दु:ख में ? सुख के समय में भगवान के पास जा कर प्रार्थना करने में और दु:ख में भगवान को ह्रदय से की गई प्रार्थना में जमीन आसमान का फर्क आपने स्वयं ही देखा होगा। अत: कभी दु:ख से गभराओ मत किन्तु सहजता से दु:ख का स्वीकार करो।

शासन में जो भी महापुरुष और महासती हो गये उनके जीवन में अत्यंत दु:ख आने के बावजुद उन्होंने दु:ख का स्वीकार करके समाधान किया है। तभी तो हम हररोज उनके गुणों की याचना करते है।

**Peace of heart is the greatest victory a man can achieve.**

**ह्रदय की शांति प्राप्त करना ही जीवन की श्रेष्ठ जीत है। जिसे मनुष्य ही प्राप्त कर सकता है।**

याद करो **सुभद्रा सती को !** कपट करके जैन धर्म अंगीकार करनेवाले युवक के साथ विवाह हुआ। अपने ससुराल आने पर वास्तविकता से परिचय हुआ। जैनेतर के घर में रहकर भी जैन धर्म के आचारों का पालन करते है। सास भी आज के काल जैसी कष्टप्रदायक ही थी किन्तु सुभद्रा सती ने कभी भी उनके लिये असद्भाव नहीं किया। सास हर क्षण उनको ताने देती रहती थी, अपशब्द कहती फिर भी सुभद्रा सती ने सब कुछ सहन

किया । परिस्थिति का स्वीकार करके मन को ज्यादा से ज्यादा धर्म मार्ग में जोडते रहे ।

किसी दिन मुनि भगवंत गोचरी हेतु पधारें । जो निःस्पृही थे और मात्र आत्मा की चिंता करते थे । उन्हें शरीर के लिये कोई अपेक्षा ही नहीं थी । शरीर से ज्यादातर आराधना कर रहे थे । उनकी आँख में तिनका फँस चुका था, जो बार-बार उन्हें चुभ रहा था । जिसके कारण उनकी आँख भी अत्यंत लाल हो चुकी थी । आँख से सतत पानी बह रहा था ।

यह देखकर सुभद्रा का मन भी दुःखी हो गया । उन्होंने सोचा कि "धन्य है इन निःस्पृही मुनि भगवंत को ! जो देह की कोई परवाह ही नहीं करते । किन्तु मेरा कर्तव्य है कि मैं उनकी साधना में सहायक बनुँ ।" यह सोचकर सुभद्रा ने अपनी जुबान से ही मुनि भगवंत को भी ज्ञात ना हो इस प्रकार चतुराई से उनकी आँख से वह तिनका निकाल दिया ।

किन्तु दुर्भाग्यवश सुभद्रा के ललाट पर रहा तिलक मुनि भगवंत के भाल पर लग गया । मुनि भगवंत गोचरी ग्रहण करके लौट रहे थे तब सतत सुभद्रा के छिद्र खौजने में ही मशगूल सास ने सुभद्रा पर असती-कुलटा का कलंक लगाया ।

महासती सब कुछ सहन कर सकती है किन्तु स्वशील और शासन पर कलंक कभी भी सहन नहीं कर सकती । सुभद्रा भी अत्यंत समझदार थी । अतः सुभद्रा ने आज की बहु की भाँति अपनी सास के साथ कोई कलह-विवाद नहीं किया और ना ही कोई अपशब्द कहे । सुभद्रा काउसग्ग ध्यान में स्थिर हो गई । शासनदेवी प्रगट हुए और बोले "हे सुभद्रा सती ! तु जरा भी चिंता मत कर । तुझ पर और शासन पर लगे कलंक दूर होंगे और जैन शासन की प्रभावना होगी ।"

दूसरे ही दिन चंपापुरी नगरी के चारों दरवाजे बंद हो गये । लोगों का आवागमन रुक जाने से राजा को भी समाचार प्राप्त हो गये । बडे, शक्तिमान हाथीयों को दरवाजे तोडने हेतु लाया गया किन्तु तमाम प्रयत्न विफल रहे । तब आकाशवाणी हुई कि "हे नगरजनों ! कोई भी सती स्त्री कच्चे सूतर की जालीवाली छाननी बाँधकर कुए से पानी निकालकर दरवाजे पर तीन बार पानी का छँटकाव करेगी तभी यह दरवाजे खूलेंगे, अन्यथा नहीं खूलेंगे ।"

यह सुनकर राजा अत्यंत प्रसन्न हो गया । उसने अपनी रानीयों को

वही कार्य करने की आज्ञा दी । राजा की तमाम रानीयों ने प्रयत्न कर लिया किन्तु निष्फल रही । पश्चात् नगर की तमाम स्त्रीयों ने प्रयत्न करके देखे किन्तु कोई भी स्त्री सफल ना हुई । तब सुभद्रा सती कलंक देनेवाली सास से दरवाजा खोलने की अनुमति माँगती है तब सास भी ताना देती है कि ''महासती शिरोमणि आपका चरित्र जगत में प्रगट करो ।''

सुभद्रा जाती है... कच्चे सूतर की छाननी बाँधकर कुए में डालकर पानी बाहर निकालती है । दरवाजे की तरफ आगे बढती है । यह देखकर पूरा नगर आश्चर्य में गरकाव हो जाता है । सती सुभद्रा की जयजयकार होती है ।

सुभद्रा सती नगर के तीन दरवाजे पर पानी का छँटकाव करके खोल देती है तब नगरजन चौथा दरवाजा खोलने की विनंती करते है । तब सुभद्रा सती इन्कार करते हुए कहती है कि ''शायद इस नगर की कोई स्त्री नगर से बाहर गई हो और उसे अपना सतीत्व प्रगट करना हो तो उसके लिये यह दरवाजा बाकी रखती हुँ ।''

इस प्रकार सुभद्रा सती ने नगर के तीन दरवाजे खोलकर अपना सतीत्व साबित किया । हर तरफ जैन धर्म की प्रभावना हुई ।

अनेक स्त्री ने स्वशील रक्षार्थ प्राणों की आहुति भी दी है तो अनेक स्त्री को भटकना पडा, अनेक दुःख सहन करने पडे फिर भी अपने शील से, अपने धर्म से भ्रष्ट नहीं हुई बल्कि धर्ममार्ग में विशेष दृढ बनती गई । इस प्रकार अनेक महापुरुष-महासतीओं ने दुःख का स्वीकार करके सद्गति का आरक्षण कर लिया ।

हमें भी महापुरुष-महासतीओं का आदर्श हमारे जीवन में अपनाना ही चाहिये । हमें भी यदि सद्गति का आरक्षण करना है तो दुःख का स्वीकार करना आवश्यक है ।

**Live for the best but be ready for the worst**

**छोटी-छोटी बातों में Let go करो ।**

**बडी-बडी बातों में Let god करो ।**

**( ३ ) दुःख का सत्कार करनेवाले** - कुछ जीव ऐसे भी होते है जो स्वयं चलकर दुःख को आमंत्रण देते है । वह महापुरुष दुःखो को **challange** देते है कि ''तुम मेरे सामने क्या आओगे, मैं स्वयं तुम्हारे सामने

आता हुँ। दम है तो आओ मैदान में फिर देखते है **किसमें कितना है दम**''

इस कक्षा के जीव प्रचंड सत्त्व प्रगट करते है। उनके मन में यह बात पूर्णतय: स्थापित हो जाती है कि ''कर्म के अलावा मेरा बाल भी बाँका करने की ताकात किसी में नहीं है। मेरा कर्म मुझे ही भुगतना पडेगा। वर्तमान में या भविष्य में, आज या कल, इस भव में या परभव में, हँसते-हँसते या रोते-रोते; मेरे कर्म मुझे ही भुगतने है। यह **fix** बात है। इसमें शंका का कोई स्थान ही नहीं है।''

**दु:ख में विचलित होनेवाले हार जाते है,**
**दु:ख में भयभीत होनेवाले बिखर जाते है,**
**दु:ख में टूटनेवाले भाग जाते है।**

अत: दु:ख में विचलित होने की, हारने की, भयभीत होने की, बिखर जाने की, टूटने की, भाग जाने की जरुरत नहीं है। दु:ख को डरकर नहीं बल्कि सीना तानकर स्वयं चलकर गले लगाना है।

आपने किसी व्यक्ति से उधार लिया अब वह उधार आप सामने जा कर चुका दो इसमें बहादुरी है या वह इन्सान आपके घर आ कर, आपको भय बताकर, धमकी दे कर आपका अपमान करके, जबरन उधार ले जाये उसमें बहादुरी है ?

इस कक्षा में रहनेवाले जीव मानते है कि ''कर्मराजा मुझ से हिसाब माँगने आयेगा, मेरा अपमान, बदनामी करेगा उसके पूर्व ही मुझे उसका उधार चुका देना है। तभी वह जीव दु:खों का **welcome** करते है।''

**परमात्मा महावीर देव** के पास भी अमाप शक्ति थी। इन्द्र के मन की शंका का समाधान करने मात्र अंगूठे के स्पर्श से ही समस्त मेरु पर्वत को कंपायमान कर दिया। यह प्रचंड शक्ति परमात्मा में थी और जैसे ही उन्होंने दीक्षा ग्रहण की तब कर्मराजा अपना हिसाब वसूल करने आ गया।

कभी चंडकौशिक सर्प बनकर प्रभु के चरण में दंश दिया तो कभी गोपालक के रुप में आ कर कान में खील्ले लगाये, कभी पैरों में चूल्हा जलाकर खीर बनाई तो कभी भ्रमर, बिच्छु के स्वरुप में आ कर प्रभु के शरीर में दंश दिये।

कर्मराजा अपना हिसाब चूकता करता रहा और प्रभु भी प्रसन्नता से

वह उधार चूकाने हेतु तैयार रहते थे ।

परमात्मा को इस तरह उधार चूकाने में विलंब होता हुआ दिखा तो शीघ्रता से ऋणमुक्त होने दुःखो का सत्कार करने स्वयं अनार्य देश में गये ।

अनार्य देश में कोई परमात्मा को जानता नहीं था अतः वहाँ किसीने मुष्टि के प्रहार किये, तो किसीने लकडी का प्रहार किया, किसीने अपशब्द कहे तो किसीने पथ्थर के प्रहार किये, किसीने गालीयाँ सुनाई तो किसीने अपमान किया; फिर भी परमात्मा ने सब कुछ सहन किया ।

मात्र सहन नहीं किया बल्कि प्रसन्नता से सहन किया और जगत को यह आदर्श दिया कि हमेशा सहन करने से ही सिद्धि प्राप्त होती है, सामना करने से नहीं । यदि सामना करने से सिद्धि मिलती तो मेरु पर्वत को कंपायमान करनेवाले परमात्मा ने तो गोपालक, संगम, चंडकौशिक जैसों को तो उठाकर कहीं भी फेंक दिया होता ।

किन्तु परमात्मा ने यही सोचा था कि ''मेरे कर्म मुझे भुगतने ही पडेंगे ।'' अतः सब कुछ प्रसन्नता से सहन किया ।

अरे ! स्वयं इन्द्र महाराजा परमात्मा को विनंती करते है कि ''हे परमात्मा ! आपको अनेक कष्ट-उपसर्ग होंगे । यदि आप आज्ञा दे तो देवों को आपकी सेवा में रख दुँ ? जिससे आपको कोई तकलीफ ना हो ।'' उस स्थान यदि हम होते तो कह देते ना कि ''हा ! अवश्य भेज दो ना और कुछ अधिक देवता ही भेज देना ताकि कोई देव हाजिर ना हो तो अन्य देवता से काम चल जायेगा ।''

यह तो प्रभु वीर थे, सामने चलकर कष्ट सहन करनेवाले थे अतः उन्होंने धरार इन्कार कर दिया कि ''हे इन्द्र ! आज तक कभी एसा नहीं हुआ कि कोई परमात्मा देवता की सहाय से मोक्ष गये हो ।'' इस प्रकार प्रभु वीर ने किसीकी सहाय तो नहीं ली अपितु स्वयं सामने जा कर दुःखों को सहन करके परमगति को प्राप्त किया ।

हम भी तो प्रभु वीर की संतान है । प्रभु वीर महापराक्रमी है तो हम इतने कायर क्यों है ? कुछ लोग कहते है कि ''परमात्मा को प्रथम संघयण था तो सब सहन कर पाये । हमारे पास अंतिम संघयण है तो कैसे सहन कर पायेंगे ?''

वाह ! आपकी बुद्धि की तो दाद देनी पडेगी । बच निकलने के

तमाम रास्ते आपको मिल ही जाते है ना ? चलो, ठीक है। आपकी बात मान ली परंतु वर्तमान में भी, अंतिम संघयण में भी आप से जितना सहन हो सकता है वह भी क्या आप सहन करते हो ? दु:खों को स्वयं आगे बढकर सहन करने जाते हो क्या ?

पैसे कमाने हेतु दिन-रात चिंता करनेवाले, पसीना बहानेवाले, खडे-खडे ग्राहकों की सेवा करनेवाले, भोजन-विश्राम तमाम बातों को भूलनेवाले आप; धर्म के कार्य में ही सहन करते समय क्यों अशक्त हो जाते हो ? पैसा कमाने के समय तो कोई संघयण याद नहीं आता तो धर्म मार्ग में ही क्यों याद आ जाता है ?

इस कलिकाल में भी अंतिम संघयण को धारण करनेवाले अनेक श्रमण-श्रमणी भगवंत है जो स्वयं आगे बढकर सामने से कष्टों को सहन कर रहे है। कर्मराजा को चुनौती देते है। मस्तिष्क के तमाम केश खींचने पर भी मुख पर प्रसन्नता ही होती है। सोचते है कि "मेरे केश मात्र नहीं निकल रहे बल्कि मेरे कर्म भी टूट रहे है।" साधु-साध्वी एक नगर से दूसरे नगर तक जाने हेतु एक वाहन का भी उपयोग नहीं करते, पैदल चलकर ही विहार करते है।

कुछ भगवंत तो ऐसी उत्कृष्ट भावना में रत होते है कि जब तेज गर्मी हो तब दोपहर को ही बरामदे में जा कर काउसग्ग ध्यान में स्थिर हो जाते है और मन में विचार करते है कि "यह मेरे पैर नहीं बल्कि मेरे कर्म जल रहे है।" इस प्रकार स्वयं पहल करके दु:खों का सत्कार करते है।

कुछ भगवंत तो ठंड की ऋतु में पोष महीने की ठंड में प्रात: काल के समय वस्त्र निकालकर खुल्ले शरीर पर जीर्ण वस्त्र पहनकर ठंड को सहन करते है।

कभी मात्र रोटी और पानी का उपयोग करके १००वीं ओली के आयंबिल करते है।

तो कभी रसलोलुपता पर विजय प्राप्त करने हेतु भोजन में करीयाता जैसे कडवे पदार्थ भी डालते है।

यह आदर्श हमारी नजरों के सामने है ही फिर भी हम में और उन में इतना ज्यादा फर्क क्यों है ?

क्योंकि हमारा जीवन मात्र शरीरलक्षी है। शरीर को कोई तकलीफ

नहीं होनी चाहिये यही हमारा लक्ष्म है। शरीर को ही सजाते है – श्रृंगार करते है।

जबकि ऐसे महात्माओं की नजर आत्मा पर होती है। मात्र आत्मा का जल्दी कल्याण कैसे हो ? मेरा मोक्ष कब हो ? मेरे कर्मो का क्षय कब होगा ? यही विचार करते है और प्रचंड सत्त्व को प्रगट करते है। दुःखों का सत्कार करते है।

अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु शरीर का बलिदान देने की आवश्यकता होती है तो भी वह तैयार रहते है।

हमें भी यह आदर्श हमारे जीवन में अपनाने चाहिये। खुद आगे बढकर दुःखों का सत्कार करे। शायद यह शक्ति ना हो तो सामने से प्राप्त हो रहे दुःखों का स्वीकार करे किन्तु प्रतिकार कभी भी ना करे। आर्तध्यान को हमेशा के लिये जीवन से अलविदा कर दे। दुःखो में समाधान करके मन को सदा प्रसन्न बनाकर शीघ्र उस स्थान को प्राप्त करे जहाँ कभी हमें दुःख का स्पर्श भी ना हो सके।

पुनः पुनः आपको प्रेरणा करता हुँ,

तीन बातें हमेशा याद रखना...

दुःख में सदा **समाधान** करो... ताकि आर्तध्यान ना हो

सुख में सतत **सावधान** रहो... ताकि आसक्ति का पापबंध ना हो

परमात्मा में भीषण **प्रणिधान** जोड दो... ताकि प्रभुभक्ति की धारा सतत प्रवाहित रहे और धर्म में संकल्प मजबूत बने।

## *(३) धर्म में प्रणिधान*

**'धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः'**

धर्म से हीन मनुष्य पशु के समान है। मानव को पशु से अलग करनेवाली कोई बात है तो वह धर्म है।

**'दुर्गति प्रपतत् प्राणी धारणाद् धर्म उच्यते'**

दुर्गति में जाने से जीव को रोकनेवाला धर्म है।

**Religion is the production of Pure Mind**

मन को शुद्ध बनानेवाला एक मात्र धर्म ही है।

**'धान्य एक वर्ष तक उपयोगी है,**
**निधान जीवनभर उपयोगी है,**
**प्रणिधान भवोभव तक उपयोगी है ।'**

प्रणिधान का अर्थ है मन, वचन, काया की एकाग्रता ।

किसी भी कार्य में सिद्धि प्राप्त करनी है तो एकाग्रता का होना अत्यंत आवश्यक है ।

गाडी चलाते समय **driver** का मन एक मिनिट के लिये भी **disturb** हो जाता है तो उसका बदला जीवन देने से चुकाना पडता है ।

**Doctor patient** का **operation** करने में जरा सी चूक कर देता है तो मरीज इलाज करते-करते लाईलाज बन सकता है ।

विद्यार्थी यदि परीक्षा देते समय उसका **concentration** गँवा देता है तो उसका **career** समाप्त हो सकता है ।

दूध में मिश्रण डालने के पश्चात् बार-बार उसको हिलाते रहने से कभी दहीं नहीं बन सकता ।

बीज को जमीन में बोने के पश्चात् यदि बार-बार उसको बाहर निकालकर **check** करने से वृक्ष कभी नहीं बन पायेगा ।

**Cricketer** यदि **Match** में खैलते समय अपनी एकाग्रता गँवा देता है तो **wicket** गँवाने की नोबत आ सकती है ।

इस बात से यही निष्कर्ष निकलता है कि किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिये एकाग्रता जरुरी है । फिर वह चाहे भौतिक क्षेत्र हो, धार्मिक क्षेत्र हो या आध्यात्मिक क्षेत्र हो ।

**महामंत्री पेथडशा !** परमात्मा की भक्ति करते समय इतने ओतप्रोत हो गये कि स्वयं महाराजा आ कर उनके पीछे बैठ गये फिर भी उन्हें ज्ञात नहीं हुआ ।

**नागकेतु !** परमात्मा की पुष्प पूजा करते समय इतने मशगुल हो गये कि पुष्प में रहा सर्प जब दंश देता है तब भी अपने ध्यान से विचलित नहीं होते, परिणाम स्वरुप वहीं केवलज्ञान प्राप्त करते है ।

**शोभन मुनि !** स्वाध्याय में इतने मग्न बन जाते है कि गोचरी में किसीने पथ्थर वोहरा दिये फिर भी ज्ञात नहीं हुआ । परिणाम स्वरुप २४ जिन

की संस्कृत स्तुति जिनशासन को प्रदान की ।

**महोपाध्याय यशोविजयजी महाराजा !** ग्रंथरचना में इतने डुब गये कि शिष्य हाथ में पानी की पात्र ले कर खडा रहता है, सूर्यास्त हो जाता है । स्वाध्याय की धून में पानी पीना भी भूल जाते है ।

**सकलचंद्र उपाध्याय !** संकल्प किया कि जब तक गधा चिल्लाता नहीं तब तक काउसग्ग में ही रहेंगे और संजोगवश कुम्हार गधे को ले कर देशावर जाता है । ७२ घंटों के बाद जब गधा चिल्लाता है तब तक उसी स्थान पर खडे रहने से सत्तरभेदी पूजा की प्राप्ति हुई ।

**इतना याद रखो**
**( १ ) संकल्प बीज है**
**( २ ) साधना वृक्ष है**
**( ३ ) सिद्धि फल है**

**( १ ) संकल्प बीज है** - बीज हो तभी फल की प्राप्ति होती है । बीज के बिना कभी फल की प्राप्ति ही नहीं होती । संकल्प बीज है । जितना संकल्प ज्यादा उतनी ही सफलता की प्राप्ति जल्दी होती है ।

विद्यार्थी का संकल्प यदि परीक्षा में ९० % प्राप्ति का रहेगा तो वह अथाग मेहनत करके लक्ष्य की प्राप्ति कर ही लेगा । किन्तु यदि संकल्प ही नहीं रहा और नाममात्र का अभ्यास करेगा तो ४०% प्राप्त करके पास हो जायेगा किन्तु आगे नहीं बढ पायेगा ।

साईकिल सिखने का दृढ संकल्प होगा तो चाहे कितनी बार गिर जाये, हाथ-पैर में चोट लग जाये फिर भी अपना प्रयत्न नहीं छोडेगा और साईकिल चलाने में माहिर बन जायेगा । किन्तु यदि संकल्प ही कमजोर रहा तो एक-दो बार गिरने पर ही साईकिल चलाने का त्याग कर देगा ।

जितना संकल्प मजबूत होगा उतना ही ज्यादा सत्त्व प्रगट होगा और संकल्प जितना कमजोर होगा उतना ही सत्त्व भी कम होता जायेगा ।

**नेपोलियन !** जब युद्ध करने जाता है तब नाँव में बैठकर दूसरे किनारे पहुँच के नाँव को अग्नि से जलाकर पलायन करने का मार्ग ही बंद कर देता था, अतः सैनिकों के पास मात्र एक ही विकल्प बाकी रहता था । या तो युद्ध में विजय प्राप्त करके जीवित रहो या मृत्यु को गले लगाने तैयार रहो ।

अन्य कोई भी विकल्प बाकी नहीं रहता था । इसी मजबूत संकल्प के प्रताप से युद्ध में विजय प्राप्त करता था

**आल्बर्ट आइन्स्टाईन !** परिवार के दबाव से विवाह करके गायब हो गया । चारों दिशाओं में छानबिन करने पर भी नहीं मिला तब किसीने कहा कि वह **Laboratory** के अलावा कहीं और नहीं मिलेगा । लेबोरेटरी में देखा तो वहीं पर मिला । सब लोग उसे कहते है कि ''आज ही तो तुम्हारा विवाह हुआ है और आज ही क्यों यहाँ आ गये ।'' तब उसने क्या कहा होगा ? उसने तो स्वयं सवाल पूछा कि ''क्या आज मेरा विवाह हुआ है ?''

यदि भौतिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने हेतु मजबूत संकल्प की आवश्यकता रहती है तो आध्यात्मिक जगत में सफलता प्राप्त करने हेतु तो कई गुना ज्यादा मजबूत संकल्प की आवश्यकता रहती ही है ।

इस संकल्प का अर्थ ही है प्रणिधान ।

यदि पूजा करने हेतु आपका संकल्प मजबूत नहीं रहेगा तो देरी से उठोगे, दुकान का कार्य याद आ जायेगा, घर में कोई मेहमान भी आ जायेगा; इन प्रकार के कारण मिलने से पूजा करना ही छोड दोगे किन्तु संकल्प यदि मजबूत रहा की पूजा किये बिना मुँह में अन्न या पानी रखना ही नहीं है तो चाहे कोई भी स्थिति हो जाये किन्तु आप अपना मार्ग बना ही लोगे ।

यदि तप करने हेतु आपका संकल्प मजबूत नहीं होगा तो सरदर्द होने लगेगा, खाँसी होगी, वमन होगा और तुरंत पारणां भी कर लोगे किन्तु मजबूत संकल्प होगा तो तप पूर्ण करके ही रहोगे ।

यदि समता धारण करने का मजबूत संकल्प होगा तो कोई गाली दे, अपमान करे, लकडी या पथ्थर से प्रहार करेगा तब भी क्रोध नहीं होगा किन्तु यदि मजबूत संकल्प ना रहा तो गलती से किसी का पैर भी लग गया तो क्रोधित हो जाओगे ।

आज से ही मोक्ष प्राप्त करने का दृढ संकल्प करो । मुझे इस भयानक संसार के विषयसुखो में, क्षणिक सुखो में मेरे अमूल्य मानवभव को बरबाद नहीं करना है । मुझे तो शाश्वत, अनंत, वीतरागता के सुख को प्राप्त करना है ।

**( २ ) साधना वृक्ष है** - मात्र बीज बोने से कार्य पूर्ण नहीं होता, तत्पश्चात् उसे खाद, पानी, प्रकाश आदि भी देना पडता है तो उसमें से ही विराटवृक्ष बनता है । जो विराटवृक्ष धूप-छाँव, ठंडी-गर्मी में अथाग बनकर

रह सकता है और फल प्रदान करने हेतु समर्थ बनता है।

वैसे मात्र संकल्प करने से कार्य पूर्ण नहीं होगा अपितु संकल्प को सिद्ध करने हेतु संकल्पानुसार साधना भी करनी पडती है, तभी सिद्धि की प्राप्ति होती है।

याद करो **चंद्रावतंसक राजा को !** रात्रि के समय में संकल्प करता है कि जब तक दीपक चालु है तब तक काउसग्ग ध्यान में स्थिर रहना है। संकल्प करके साधना की शुरुआत की। प्रायः साधना सहजता से सिद्ध नहीं होती, उसमें परिषह और उपसर्ग सहन करने पडते है।

राजा भी काउसग्ग साधना में मस्त बन गये थे। समय होने पर दीपक बुझने की तैयारी में ही था, तभी राजा की दासी वहाँ आ पहुँची। उसने सोचा कि ''यदि यह दीपक बुझ गया तो राजा की साधना खंडित हो जायेगी।'' राजा की साधना अखंडित रखने हेतु, राजा के संकल्प से अनजान उस दासी ने अल्प घी वाले दीपक में पुनः घी भरकर दीपक को प्रज्वलित कर दिया। इस तरह संपूर्ण रात्रि खत्म हुई।

जब-जब दीपक बुझने की तैयारी में होता, तब-तब दासी आ कर घी डालकर चली जाती। प्रातः होते ही उजाला फैलने से दीपक की आवश्यकता न होने से दासी ने घी डालना बंद किया। दीपक बुझ गया और राजा ने काउसग्ग समाप्त किया।

संपूर्ण रात्रि पैरों पर खडे रहने से राजा को अत्यंत थकान का अनुभव होने लगा और कुछ ही समय में प्राणों का त्याग किया और देवगति को प्राप्त किया।

संकल्प मजबूत था और साधना भी संकल्पानुसार ही थी, तो अल्प समय में ही सद्‌गति को प्राप्त किया। हमें भी यदि सद्‌गति को प्राप्त करना है, दुर्गति को दूर करना है तो आज से ही मोक्ष का दृढ संकल्प करना जरुरी है। साधना मार्ग में आनेवाले परिषह और उपसर्गो को सहन करके विराट वृक्ष की भाँति अथाग बने रहना पडेगा।

**( ३ ) सिद्धि फल है** - कोई भी फल प्राप्त करना है तो आसानी से प्राप्त नहीं होता बल्कि उसके लिये अथाग परिश्रम करना पडता है। तभी तो कहा जाता है -

**''मेहनत के फल मधुर''**

जो इन्सान सच्ची दिशा में मेहनत करता है उसे अवश्य मधुर फल प्राप्त होते है। किन्तु कोई कहे कि उसे मेहनत किये बिना ही मधुर फल प्राप्त करने है तो यह असंभव है।

आपको सुंदर मनोहर बागीचा दिखता है और आप वहाँ सैर करने निकल जाते हो, बागीचे की सुंदरता का अनुभव कर रहे हो किन्तु उस बागीचे में माली ने मेहनत की है तब जा कर यह फल मिला है। माली का बागीचा बनाने का दृढ संकल्प था। वह तैयार करने हेतु उसने दिन-रात मेहनत की है और परिणाम के स्वरुप सुंदर बागीचे की प्राप्ति हुई।

याद करो **जंबुस्वामी को !** एक बार ही सुधर्मास्वामी की देशना सुनकर वैराग्य प्रगट हुआ। संयम ग्रहण का मजबूत संकल्प किया। विवाह के पूर्व ही ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया। माता-पिता की आज्ञा से विवाह के दूसरे ही दिन संयम ग्रहण करने का निर्णय करके विवाह किया। प्रथम रात्रि में ही आठों पत्नी, प्रभव सहीत ५०० चोरों को प्रतिबोध देकर दूसरे दिन ५२७ आत्मा की दीक्षा हुई।

संयम ग्रहण करके साधना के बल पर उसी भव में सिद्ध होने का संकल्प मजबूत था तो कोई भी भोगसुखो के पदार्थ उन्हें आकर्षित ना कर सके या लालायित ना कर सके। यह है संकल्प का प्रभाव ! यह है प्रणिधान का प्रभाव !

आपको भी यही प्रणिधान धर्म में करना है। प्रणिधान करने से जीवन से अस्थिरता दूर होती है। अतः आज ही संकल्प करो कि "मुझे मोक्ष चाहिये और उसके लिये संयम की साधना जरुरी है। अतः मैं प्रतिदिन परमात्मा से संयमजीवन प्राप्ति की प्रार्थना करुँगा। प्रार्थना करने मात्र से अनेक कर्मो की निर्जरा होती है और चारित्र का उदय शीघ्र होता है। इसी चारित्र जीवन में संयम की साधना करते-करते परिषह और उपसर्गो को सहन करने से अवश्य मोक्ष की सिद्धि प्राप्त होती है।"

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्राचार्य महाराजा योगशास्त्र नामक ग्रंथ में कहते है,

**जिनधर्म विनिर्मुक्तो मा भुवं चक्रवर्त्यपि।**
**स्यां चेटोपि दरिद्रोपि जिनधर्माधिवासितः॥**

जिनधर्म से रहित चक्रवर्ती अवस्था मुझे नहीं चाहिये । मैं दास बनुँ या दरिद्र बनुँ तो भी स्वीकार्य है किन्तु मुझे जन्म तो जैनकुल में ही मिले ।

**'दो पाटन के बीच में, साबूत बचा न कोई,**
**खूंट पकड के जो रहा, पीस सका न कोई'**

राग-द्वेषरुप दो पथ्थर के बीच संसारी जीव अनाज के दानों की भाँति पिसते ही जा रहे है । परंतु जो जीव जिनधर्मरुप खूंट को पकडकर रखते है उसका कोई कुछ भी नहीं बिगाड सकता । उसका बाल भी बाँका नहीं हो सकता ।

**There are many stars in the sky but not like a Moon.**
**There are many flowers in the garden but not like a Rose.**
**There are many birds in the world but not like a Peacock.**
**There are many religion in the world but not like Jainism.**

**आसमान में सितारे तो अनेक है, पर चंद्र समान कोई नहीं ।**
**उद्यान में पुष्प तो अनेक है, पर गुलाब के समान कोई नहीं ।**
**दुनिया में पंछी तो अनेक है, पर मोर के समान कोई नहीं ।**
**विश्व में धर्म तो अनेक है, पर जैन धर्म जैसा कोई नहीं ।**

आपको प्राप्त हुए दुर्लभ जैन धर्म का फायदा ग्रहण करने स्थिरता से धर्म का पालन करो ।

जीवन से अस्थिरता दूर करने हेतु
आज से ही तीन बातें जीवन में अपना लो

**संकल्प - सिद्ध बनने का...किजीए...**
**साधना - संयम की...करते रहो...**
**सिद्धि - शाश्वत सुख की...शीघ्र मिल जायेगी....**

# आत्मा की Health - स्वास्थ्य

सद्‌गुण पुण्य की वाव है,

भवसागर तैरने की नाँव है

## (१) सद्‌गुरु संग

## (२) स्वाध्याय रंग

## (३) संयम जंग

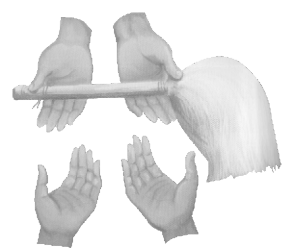

सद्‌गुण पुण्य की बावडी के समान है । बावडी में स्फटिक जैसा शुद्ध पानी होता है, विविध रंग के पुष्प से आच्छादित बावडी सुंदर मनोहर लगती है । वैसे जीवन में सद्‌गुण हो तो जीवन भी सुंदर बन जाता है ।

**एक ज अरमान छे मने...**
**मारु जीवन सुगंधी बने...**

भवसागर से पार होने हेतु सद्‌गुण नौका के समान है । हम सब की इच्छा भवसागर से पार होने की है । यह तीन सद्‌गुण जीवन में अपना लिये तो समझो बेडा पार । तो चलो, इन तीनों सद्‌गुणों को जानकर जीवन में अपनाने का प्रयत्न करते है ।

## (१) सद्‌गुरु संग

***'वृक्ष के बिना लता, चंद्र के बिना रात,***
***सद्‌गुरु के बिना जिंदगी, हो जायेगी बरबाद'***

वन में भटकने वालों को मार्गदर्शन सही दिशा बताता है । वैसे ही सद्‌गुरु संसारवन में भटकनेवाले हम जैसे आत्माओं को सिद्धि गति की सही दिशा बताते है । अब तक हमने विपरीत दिशा में ही गति की है, अतः अभी तक संसार का अंत ही नहीं हुआ । **किसी सद्‌गुरु का हाथ थामने से सही दिशा का ज्ञान मिलेगा । दिशा बदल जायेगी और दशा भी स्वयमेव बदल जायेगी ।** अतः आवश्यकता है किसी सद्‌गुरु के संग की ।

**'कुसंग जीवन को बरबाद करता है,**
**सद्‌गुरु संग जीवन को आबाद करता है ।'**

जिसका जीवन बरबाद हो चुका है, जिसका जीवन जुआ, शराब, मांस, वैश्या, परस्त्री आदि पापों से रक्त हो चुका है उसे यही प्रश्न पूछे कि "तुम्हारे जीवन में बरबादी की शुरुआत कैसे हुई ?"

तो यही जवाब मिलेगा कि "मैंने किसका संग करना और किसका संग नहीं करना यह विचार ही नहीं किया और किसी कुसंग से-गलत मित्र के योग से मेरा जीवन बरबाद हो गया ।"

**संपत्ति को बचाना है तो चोरों की गली छोडनी ही पडेगी वैसे ही**

**सद्‌गुण बचाने है तो दुर्जनों का संग छोडना ही पडेगा ।**

**सुगंध प्राप्त करने हेतु गंदगी से भरपूर स्थान छोडना ही पडेगा और उद्यान की तरफ जाना ही पडेगा ।**

**सद्‌गुण प्राप्त करने हेतु दुर्जन का संग छोडना ही पडेगा और सद्‌गुरुसंग की तरफ जाना ही पडेगा ।**

दुर्गंधित स्थान की तरफ शुरु किये गये कदम सफल बने तब भी व्यर्थ है और उद्यान की तरफ शुरु किये गये कदम निष्फल बने तब भी अर्थपूर्ण है । वैसे ही दुर्जन की तरफ बढाये गये कदम सफल होने पर भी व्यर्थ है और सद्‌गुरुसंग की तरफ बढाये गये कदम निष्फल होने पर भी उत्तम है । दुर्गंधित स्थान को भी उद्यान में परिवर्तित करने की ताकत माली में है, वैसे दुर्गुणों को सद्‌गुणों में परिवर्तित करने की ताकत सद्‌गुरु में है ।

दूध का नींबु से संग होते ही दूध फट जाता है और उसी दूध का शक्कर, केसर, इलायची से संग होने पर दूध स्वादिष्ट बन जाता है । वैसे ही व्यक्ति का किसी से कुसंग होता है तो वह सज्जन से दुर्जन बन जाता है और सद्‌गुरु का संग होता है तो,

**दुर्जन से सज्जन...**<br>
**दुराचारी से सदाचारी...**<br>
**खूनी से मुनि...**<br>
**डाकु से दयालु...**<br>
**शैतान से संत बन जाता है ।**

एक नगर में किसी घर में ब्राह्मण के बालक रो रहे है क्योंकि उन्हें खीर खानी है, कभी नहीं खाई थी । आसपास से खीर बनाने हेतु दूध, चावल, शक्कर आदि से खीर बनाते है और तभी वहाँ **दृढप्रहारी** नामक शैतान डाकु, खूंखार खूनी अपने लोगों के साथ चोरी करने हेतु आता है । चोरी करके सब भाग जाते है । दृढप्रहारी को भूख लगती है अत: वह खीर ले जाता है और वहीं ब्राह्मण के बालक उसको रोकते है तब वह उन सबको अपनी तलवार के एक ही झटके से मार देता है । गाय बीच में आती है तब उसकी तलवार गाय की भी शर्म नहीं रखती, गाय को भी वह मार देता है । गर्भवती ब्राह्मणी जब उसका मार्ग रोकती है तो दृढप्रहारी उसके पेट में भी तलवार डाल देता है, वह ब्राह्मणी नीचे गिर जाती है और उसका गर्भ भी बाहर निकलकर

अत्यंत पीडा के साथ तडपता है ।

यह दृश्य देखकर दृढप्रहारी के हाथ से तलवार गिर जाती है । लोगो के चिल्लाने से वह भाग जाता है । लोग उसको पकड सके इसके पूर्व ही वह पलायन करने में सफल हो जाता है । किन्तु उसके मन में सतत विचार चल रहे है कि ''हाय रे ! मैं कैसा अधम पापी हुँ जो चार पवित्र जीव ब्राह्मण, गायमाता, स्त्री और बालक की हत्या कर दी ।''

अन्य कोई मार्ग ना मिलने पर वह आत्महत्या करने हेतु पर्वत पर जाता है और जैसे ही नीचे कूदने जाता है तभी एक सद्‌गुरु उसका हाथ पकड लेते है ।

**सद्‌गुरु कुम्हार सरीखा घड घड काढे खोट ।**
**अंदर से रक्षा करे बाहर मारे चोट ॥**

कुम्हार घडे बनाते समय बाहर से थपाट मारता है किन्तु अंदर से हाथ भी देता है वैसे सद्‌गुरु बाहर से भले कठोर हो परंतु अंदर से हमारी रक्षा ही चाहते है ।

सद्‌गुरु पूछते है ''भाई ! कौन हो तुम ? और क्यों दुर्लभ मानव जीवन को खतम कर रहे हो ?'' दृढप्रहारी अपने जीवन की काली नोट सद्‌गुरु के चरणों में रख देता है और पूछता है कि ''अब मैं आत्महत्या ना करुँ तो और क्या करुँ ?''

सद्‌गुरु कहते है कि ''क्या आत्महत्या करने से तुने जो कर्म बाँधे है वह खतम हो जायेंगे ? बेटा ! बाँधे हुए पापों का फल इस भव में ही नहीं अगले भव में भी चुकाना पडता ही है । अतः तु आत्महत्या नहीं बल्कि पापहत्या कर । पापहत्या करने से तमाम पाप दूर हो जायेंगे और आत्मा भी निर्मल बनती है ।'' सद्‌गुरु के संग ने उसे आत्महत्या करते हुए रोका और पापहत्या करने हेतु संयमजीवन का दान दिया । पापहत्या करने हेतु नियम ग्रहण किया कि ''जब तक मुझे मेरे पाप याद आते रहेंगे या कोई याद करवायेगा तब तक अन्न और पानी मुख में नहीं रखुँगा ।''

यह अभिग्रह धारण करके गाँव में प्रथम दरवाजे पर पहुँचे । किसीने कहा यह मेरे पुत्र का खूनी है, अब मुनि बनने का नाटक कर रहा है, उसे मारो, यह बोलकर लकडी से मारता है, तो कोई कहता है यह मेरे पिता का,

पत्नी, माता, बहन, भाई का खूनी है। यह बोलकर लकडी, पथ्थर इत्यादि से मारते है। कोई धूल उडाता है तो कोई अपशब्द बोलता है। इस प्रकार तमाम लोग मुनि को मारते है, धिक्कारते है, तिरस्कार करते है किन्तु मुनि ने तो मन ही मन तय कर लिया था कि पापघात करना ही है, अतः कोई प्रतिक्रिया नहीं देते, सब कुछ सहन करते है। इस प्रकार देढ माह के पश्चात् नगरजनों का क्रोध शांत हुआ। सब उनसे माफी माँगते है। फिर गाँव के दूसरे दरवाजे पर पहुँचते है, वहाँ भी देढ माह तक तमाम उपसर्ग सहन करते है।

**जो कम्मे शूरा**
**वह धम्मे शूरा**

जो कर्म करने में शूरवीर होते है, वह धर्म करने में भी शूरवीर होते है।

इस प्रकार गाँव के चारों दरवाजे पर देढ-देढ माह तक अर्थात् कुल छः माह तक संपूर्णतय आहार-पानी का त्याग करके मात्र सहन करते-करते स्वयं के घनघाती कर्म तोडकर केवलज्ञान प्राप्त करते है। मात्र सद्‌गुरुसंग के प्रभाव से दृढप्रहारी मुनि पतन से उत्थान की ओर... विनाश से विकास की ओर... आगे बढते हुए परमपद को प्राप्त कर गये।

**'एक घडी आधी घडी आधी से भी आध,**
**तुलसी संगत संत की, कटे कोटि अपराध।'**

पारसमणि के स्पर्श मात्र से, संग मात्र से लोहा सुवर्ण बन जाता है वैसे सद्‌गुरु के संग से पतित भी पावन बन जाता है। तुलसी तो यहाँ तक कहते है कि एक घडी अर्थात् २४ मिनिट, आधी घडी अर्थात् १२ मिनिट आधी से भी आधी अर्थात् १२ से भी आधी, यानी कि ६ मिनिट भी यदि कोई सद्‌गुरु का संग करे तो करोडो अपराधों को नाबूद कर सकता है। तो जो अपना समुचा जीवन ही सद्‌गुरु के चरणों में सौंप दे, समर्पित कर दे उसका तो बेडा पार ही हुआ समझो।

**खड्डे में गिरनेवाली गाडी को danger लिखा हुआ बोर्ड बचा लेता है,**
**दुर्गति में गिरनेवाले जीव को सद्‌गुरु बचा लेते है।**

पतंग आसमान में कभी भी दूर उड रही हो किन्तु जब तक उसकी

डोर पतंग उडानेवाले के हाथ में है तब तक वह सलामत है। गुब्बारा कितना भी दूर हो किन्तु जब तक उसकी डोर बालक के हाथ में है तब तक वह सुरक्षित है। बालक कहीं भी खैलता रहता हो किन्तु जब तक माता की नजर बालक पर है तब तक वह सलामत है। वैसे ही हम संसार में कहीं भी भटक रहे तो किन्तु जब तक हमारे जीवन की बागडोर यदि सद्‌गुरु के हाथ में है, सद्‌गुरु की हम पर रहेमनजर है तो हम, हमारा जीवन सलामत, सुरक्षित है।

लोहे का खील्ला समंदर में डुब जाता है,

किन्तु यदि नाँव के साथ जुड जाता है तो तैर जाता है।

लोहे के खील्ले की भाँति हम सब संसार में डुब रहे है किन्तु यदि नाँव के समान सद्‌गुरु से जुड गये तो संसारसागर से पार हो जायेंगे।

जीवन बहता है जल के जैसे, हमें जीना है कमल के जैसे।

चाहे कितना भी किचड हो परंतु कमल उससे अलिप्त ही रहता है। वैसे यदि सद्‌गुरु हमारे जीवन में होंगे तो कीचड समान संसार में रहने के बावजुद हम कमल की तरह निर्मल बनकर रह पायेंगे। कमल कीचड में रहने के बावजुद कीचड की दुर्गंध का स्वीकार नहीं करता और स्वयं की सुवास कभी छोडता भी नहीं वैसे सद्‌गुरु की अमीदृष्टि हमारे उपर रहने से हम भी संसार की दुर्गंध में लिप्त नहीं होंगे और हमारे सद्‌गुणों का त्याग भी नहीं करेंगे। जीवन में ऐसे ही किसी सद्‌गुरु के संग की जरुरत है।

**माँ जन्म देती है,**
**गुरुमा जीवन देते है।**
**माँ दुःख से बचाती है,**
**गुरुमा दोष से बचाते है।**
**माँ स्वस्थ बनाती है,**
**गुरुमा स्वच्छ बनाते है।**
**माँ दशा बताती है,**
**गुरुमा दिशा बदलते है।**

हमारे जीवन में भी जैसे **family doctor** होते है वैसे ही एक **family** सद्‌गुरु का होना जरुरी है। कुछ भी पीडा होने से आप सीधे **family doctor** के पास पहुँच जाते हो, जो भी दवाई देता है वह ग्रहण कर

लेते हो, सावधानी बरतते हो; वैसे जीवन में अल्प दोषों के सेवन करने पर भी तुरंत सद्‌गुरु के पास जाना चाहिये और जो भी प्रायश्चितरुप दवाई दे, जीवन से जो भी गलत आदतों को दूर करने की सावधानी बताये, उन तमाम बातों का स्वीकार करके उत्तम पालन करना ही चाहिये। क्योंकि,

**डोक्टर आपके दर्द को नाबूद करता है,**
**सद्‌गुरु आपके दोष को नाबूद करता है।**
**डोक्टर आपके रोग का विनाश करता है,**
**सद्‌गुरु आपके रागद्वेष का विनाश करता है।**

## (२) स्वाध्याय रंग

***आदित्य के बिना प्रकाश नही***
***साहित्य के बिना विकास नही।***

आदित्य का अर्थ है सूर्य। सूर्य जैसे जैसे अस्त होता है वैसे वैसे अँधकार भी अपना अधिकार जमाने लगता है। सूर्य अस्त होने के बावजुद हर तरफ अँधकार का साम्राज्य फैल जाता है किन्तु वह अँधकार भी तब तक अपना हुकम चला सकेगा जब तक सूर्य का उदय नहीं होता। सूर्योदय होते ही अँधकार को दुम दबाकर भागना पडता है। फिर वह अपना अस्तित्व नहीं बचा सकता।

इसी न्याय से हमारे आत्मा पर अज्ञान के अँधकार ने अपना साम्राज्य बिछा रखा है और उसी अज्ञानता की वजह से हम गलत मार्ग पर आगे बढ रहे है। किन्तु इस अज्ञान के अँधकार का साम्राज्य कब तक टीक पायेगा ? जब तक ज्ञानरुप सूर्य का उदय नहीं होता तब तक। अतः अज्ञान अँधकार को भगाने हेतु, दुर्गति में ले जानेवाले शत्रुओं का नाश करने हेतु, आत्मा के सुख का आनंद प्राप्त करने हेतु, ज्ञानरुप दीपक प्रज्वलित करने हेतु स्वाध्याय का रंग लगाना ही पडेगा। स्वाध्याय के प्रकाश द्वारा आत्मा का विकास होता है। गलत मार्ग में भटकनेवाले हमारे पैर रुक जाते है और सही मार्ग की दिशा में आगे बढते है।

महोपाध्याय यशोविजयजी म.सा. ज्ञानसार में फरमाते है कि,

**सुखिनो विषयातृप्ता नेन्द्रोपेन्द्रादयोप्यहो।**

**भिक्षुरेकः सुखी लोके ज्ञानतृप्तो निरञ्जनः ॥**

विषयों से अतृप्त इन्द्र आदि भी सुखी नहीं है परंतु कर्मरुप अंजन से रहित ज्ञान से तृप्त साधु ही सुखी है।

**Empty Mind is devil's house**

खाली मन शैतान का घर होता है। मन को खाली रखकर शैतान का घर बनाने से अच्छा है कि स्वाध्याय द्वारा भगवान का घर बनाया जाये।

मुनि भगवंतो का प्राण स्वाध्याय है । २४ में से १५ घंटे तक स्वाध्याय करने का विधान है । यदि श्रमण-श्रमणी भगवंत स्वाध्याय हेतु प्रचंड पुरुषार्थ कर रहे है, दिन-रात मेहनत कर रहे हो, छोटे बाल मुनि से ले कर वृद्ध महात्मा तक तमाम महात्मा प्रबल ज्ञान पुरुषार्थ कर रहे है तो आप गृहस्थ क्यों पीछेहट कर रहे हो ? आपको तो विशेष सावधान होना चाहिये। १८ प्रकार के पापों से लिप्त मानव को शुद्ध होने हेतु स्वाध्याय अति आवश्यक है।

**'ज्ञानी श्वासोश्वासमां करे कर्मनो छेह**
**पूर्वकोडी वरसा लगे अज्ञानी करे तेह'**

करोडों वर्षों की साधना के द्वारा अज्ञानी जीव जिन कर्मों का नाश करता है उतने कर्मो का नाश सम्यग्ज्ञानी आत्मा मात्र एक बार की श्वसनक्रिया में ही कर लेते है। इस अमूल्य सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति हेतु आपका पुरुषार्थ क्या है ?

सच कहना, सुबह होते ही हाथ में प्रथम क्या होता है ? अखबार या स्वाध्याय की पुस्तक ?

दुनिया के तमाम कार्य करने हेतु समय प्राप्त हो ही जाता है तो स्वाध्याय करने हेतु समय प्राप्त क्यों नहीं होता ?

''समय नहीं मिलता'' यह बात लोग बोलते है, यह प्रायः बहाना ही होता है। व्यापार, टी.वी., मित्रो के साथ गप्पे लडाने हेतु, सहेलीयों के साथ घुमने जाने हेतु समय मिल जाता है तो स्वाध्याय करने हेतु समय कैसे नहीं मिल सकता ?

समय नहीं मिलता, यह कहने के बदले यह कहो कि ''हमें अभी तक स्वाध्याय की लगन ही नहीं हुई, स्वाध्याय की प्यास नहीं लग रही।''

प्यासा मानवी तो कहीं से भी पानी ग्रहण कर ही लेगा ।

**रात को १२-१२ बजे तक वोट्सअप पर व्यस्त रहनेवालों को स्वाध्याय का समय कैसे मिलेगा ?**

**सुबह ९-९ बजे तक घोडे बेचकर सोनेवाले सूर्यवंशी राजपुत्रों को स्वाध्याय का समय कैसे मिलेगा ?**

**सहेली या मित्र के साथ गली की नुक्कड पर २-३ घंटे गप्पे लडानेवाले Educated Students को समय कैसे मिलेगा ?**

**सासुमा की निंदा करने से बाझ ना आती बहुओं को, बहु की चोकीदारी से समय ना निकालनेवाली सासुमाओं को समय कैसे मिलेगा ?**

**दुकान की सीट पर अधिकार जमाकर बैठनेवाले बाप को समय कैसे मिलेगा ?**

एक बात सही-सही समझ लो,

**स्वाध्याय के लिये समय मिलेगा नहीं, निकालना पडेगा**

''समय मिलेगा तो स्वाध्याय करुँगा'' यह विचार रखनेवाला कभी भी स्वाध्याय नहीं कर पायेगा । चाहे कैसा भी **Tight Schedule** हो पर किसी के विवाह में, पार्टी में, रिसेप्शन में, दुकान के उद्घाटन में, बर्थ-डे पार्टी में जाने का समय निकालते ही है वैसे ही स्वाध्याय के लिये भी समय निकालना ही पडेगा ।

हमारे **देवेन्द्रसूरि म.सा. !** स्वाध्याय करते-करते गरदन भी झुक गई फिर भी स्वाध्याय का त्याग नहीं किया । मात्रुं-स्थंडिल जाते वक्त मार्ग में जो समय लगता उसमें भी स्वाध्याय करते थे ।

१८-१८ देश के **महाराजा कुमारपाल !** ३२ प्रकाश का स्वाध्याय करने के पश्चात् ही मंजन करते थे ।

**महामंत्री पेथडशा !** राजकाज में व्यस्त होने के बावजुद स्वाध्याय का त्याग नहीं करते थे । घर से राजमहल तक पालखी में बैठकर जाते थे और हाथ में पुस्तक रखकर स्वाध्याय करते थे । इस प्रकार प्रतिदिन पालखी में वांचन करते-करते ''उपदेशमाला'' नामक ग्रंथ कंठस्थ किया ।

सलाम है उन महापुरुषों को जो १८-१८ देश के महाराजा, १८-१८

देश की जिम्मेदारीयाँ होने के बावजुद कभी भी अपना स्वाध्याय नहीं भूले । आप कितने देश के राजा हो ? अरे ! देश की बात तो जाने दो, आप आपके घर में भी राजा हो क्या ? या फिर घर में घरवाली का ही राज चलता है ? मात्र एक परिवार की जिम्मेदारी है । यदि ऐसे महाराजा, महामंत्री, महात्मा प्रचुर जिम्मेदारीयों के बीच भी समय निकाल सकते है तो आपके लिये ऐसी कोई विशाल जिम्मेदारी ना होने के बावजुद आप ''समय नहीं मिलता है'' यह कहते हो वह कितना उचित है ? अतः आज से ही तमाम बहानों का त्याग करो । क्योंकि-

**'बहाने ढुँढनेवालो को कभी रास्ते मिलते नहीं,**
**रास्ते ढुँढनेवालो को कभी बहाने मिलते नहीं ।'**

आपको क्या ढुँढना है ? स्वाध्याय करने हेतु रास्ता ? या स्वाध्याय ना करते हेतु बहाने ? यह स्वयं अपने आप से ही पूछो । कुछ लोगों की फरीयाद होती है कि म.सा. स्वाध्याय तो करते है किन्तु याद ही नहीं रहता । २-४-६ घंटे तक याद करने के पश्चात् भी याद ही नहीं रहता, अतः थककर स्वाध्याय करना छोड देते है । यह विचार करनेवालों की संख्या भी कम नहीं है ।

सावधान ! १५ वर्ष पूर्व किसीने कोई अपशब्द कहे, अपमान किया, गालीयाँ दी... वही शब्द **as it is** आपको याद रहते है, टी.वी. में देखी हुई **Serial, Film** या **Advertise as it is** आप किसी और को सुना सकते हो । भारत-पाकिस्तान के बीच हुई मेच की तमाम ओवर का स्कोर, कौन से बेट्समेन ने कितने रन बनाये, किसने कितनी विकेट निकाली, वह तमाम बातें आपको याद रहती है तो गाथा क्यों याद नहीं रह सकती ?

कारण यही है कि यह तमाम सांसारिक प्रवृत्ति जिस रुचि से, एकाग्रतापूर्वक करते हो उतनी रुचि और एकाग्रता स्वाध्याय के वक्त नहीं होती । स्वाध्याय करते वक्त भी कौन आया और कौन गया ? बहु ने रसोईघर में फ्रीज का दरवाजा क्यों खोला ? पडोशी के घर घंटी बजी है तो कौन आया होगा ? इत्यादि तमाम **Tensions** स्वाध्याय करते वक्त होते रहते है । अब यह सब बातें ही याद आयेगी तो फिर स्वाध्याय कैसे याद रहेगा ?

हाँ, कभी यह हो सकता है कि कितना भी प्रयत्न करने के बावजुद, एकाग्रतापूर्वक, रुचिपूर्वक स्वाध्याय करने के बावजुद हमारे द्वारा पूर्वभव में

बाँधा हुआ, ज्ञान की आशातना के द्वारा बाँधा गया ज्ञानावरणीय कर्म उदय हुआ हो । किन्तु सबूर ! याद ना रहने पर भी स्वाध्याय तो चालु ही रखना है, छोडना नहीं है ।

याद करो उन मुनिवर को ! योगोद्वहन की क्रिया चालु ही है । आयंबिल शुरु किये है और वहीं पूर्वभव के ज्ञानावरणीय कर्म का उदय हुआ । पूर्वभव में स्वयं विद्वान मुनि है । प्रतिदिन अन्यों को स्वाध्याय करवा रहे है । किसी दिन स्वयं संथारा-शयन करने की तैयारी में है तभी शिष्य पुनः पुनः सवालों का समाधान प्राप्त करने आते रहते है ।

नींद में विलंब हो रहा है और वहीं उनके निकट किसी मुनिवर को ज्ञान चढता ही नहीं था वह शांति से आराम कर रहे थे । कोई उन्हें नींद में खलेल नहीं पहुँचाता । यह दृश्य देखकर मन में विचार करते है कि "मेरे से ज्यादा तो यह अज्ञानी मुनिवर सुखी है । आराम से नींद तो ले सकते है । मैंने अभ्यास करके ही भूल कर ली जिसके कारण आराम ही नहीं मिलता । स्वाध्याय ना किया होता तो भला होता ।" मात्र यही विचार किया ।

कर्मराजा के सिकंजे में शिकार फँस गया । उसी कर्म का उदय हुआ । कुछ भी याद नहीं रहता । गुरु महाराज ने कृपा करके एक वाक्य याद करने हेतु दिया "मा रुष मा तुष" । यह वाक्य भी वह मुनि याद नहीं कर सकते थे । उस वाक्य के बदले "मासतुस ""मासतुस" बोलने लगे, अतः लोगों ने भी उनका नाम **मासतुस मुनि** रख दिया । १ दिन, २ दिन, १५ दिन, १ महीना, ६ महीने, १ वर्ष, ५ वर्ष... यावत् १२-१२ वर्ष बितने के बावजुद वह १ वाक्य भी याद नहीं रहता । किन्तु उन्होंने भयभीत हुए बिना, व्याकुल हुए बिना स्वाध्याय का प्रयत्न निरंतर जारी रखा ।

स्वकर्मों को दोष दे कर पूर्व में किये अपराधों की क्षमा माँगते है और स्वाध्याय की भी धून अविरत चालु रखते है । १२ वर्ष के अंत में इस प्रचंड स्वाध्याय के पुरुषार्थ ने केवलज्ञान की भेट प्रदान की । यह ताकत है स्वाध्याय की । एक वाक्य... अरे ! स्वयं का नाम तक याद नहीं रहता था । उन मुनिवर को केवलज्ञान प्राप्त हुआ ।

हम सब से कोई भी इन्सान ऐसा नहीं होगा जिसे अपना नाम तक याद ना रहता हो ! तो क्यों निराश होते हो ? चलो, उठो, इस मोहराजा की मोहनिद्रा में खूब निद्राधीन रहे ! अब उठो और लग जाओ स्वाध्याय में ।

**'उठ जाग मुसाफिर भोर भयो, अब देर कहाँ सो सोवत है,**
**जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है ।'**

बस ! बहुत हुआ ! अब नहीं सोना है मोह की निद्रा में क्योंकि जो सोता है वह सब कुछ गँवाता है और जो जागृत बन जाता है वह सब कुछ पा लेता है । भले ही अब तक मैंने कुछ नहीं किया किन्तु **''जाग्या त्यांथी सवार - उठे तब से सबेरा''** । अभी भी मेरे पास जो समय है उसे स्वाध्याय के द्वारा सार्थक कर लुँ । स्वाध्याय के माध्यम से प्रभु के वचनों को जानना है, जीवन में पालन करना है । प्रभु के वचनों को जानने हेतु स्वाध्याय ही श्रेष्ठ उपाय है ।

## (३) संयम जंग

**''ज्ञानस्य फलं विरतिः''** ज्ञान का फल विरति है । सद्‌गुरु के संग में स्वाध्याय के रंग में रंगकर संयम जंग खैलना है ।

**'मानवजीवन का यही है सार, संयम विना नहीं उद्धार'**

यह सुवाक्य आपने कई बार सुना होगा, बोला भी होगा । मानव जीवन का सार संयम है ।

एक भाई अमरीका से लौट कर आये तब उनका मित्र मिलता है और पूछता है कि ''अमरीका से क्या ले कर आये ?'' वह भाई बोलते है ''वहाँ जा कर मैं खाखरा और चीवडा ले कर आया ।'' तो वह बोलता है कि ''वह सब तो यहाँ भी मिलता ही है, तो आपने क्या खास किया ?''

यह तो वही बात हो गई कि

**''हीरो घोघा जाइ आव्यो, डे ले हाथ दइ आव्यो''**

देवलोक के भव में खूब संपत्ति थी । मोजडी के रत्न से ही पूर्ण भारत को खरीदने की शक्ति थी । अप्सरा समान देवीओं के साथ अनेक बार संबंध बनाये है । तिर्यंच के भव में भी अनेक भ्रमण किया है । अब पुनः वह तमाम व्यापार मानवभव में भी करने है ? नहीं, यहाँ तो कुछ नया करना है । यहाँ भी यदि उन सुखों के पीछे ही पागल बन जाओगे तो आपकी हालत भी अमरीका से खाखरा और चीवडा लानेवाले इन्सान की तरह ही हो जायेगी ।

आँगन में कल्पवृक्ष है, घर में कामकुंभ है, तिजोरी में चिंतामणि रत्न है तो अब गली-गली भीख माँगने की मूर्खता क्यों करनी है ?

चरवाहे के हाथ में चिंतामणि रत्न है। कुछ दूरी पर कौए का...का... कर रहे है। चरवाहे को क्रोध आता है और हाथ में रहा चिंतामणि रत्न कौओं की तरफ फैंकता है। पीछे ही गहरी खाई थी और चिंतामणि रत्न हमेशा के लिये हाथ से निकल गया।

जैसे कौए को भगाने हेतु चिंतामणि रत्न का उपयोग नहीं करना चाहिये वैसे ही संसार के सुख भुगतने हेतु चिंतामणि रत्न समान मानवभव का उपयोग नहीं करना चाहिये। चिंतामणि रत्न की विधिपूर्वक आराधना करने पर कायमी सुख मिलता है वैसे मानवभव में संयमजीवन की विधिपूर्वक आराधना करने पर मोक्ष का शाश्वत सुख प्राप्त होता है। चिंतामणि रत्न बार-बार नहीं मिलता और कोई महान भाग्योदय होने पर ही मिलता है वैसे मानवजीवन भी बार-बार नहीं मिलता बल्कि प्रचंड पुण्योदय होने पर ही मिलता है।

धन्यवाद है... नमस्कार है... उन श्रमण-श्रमणी भगवंतों को जिन्होंने इस संयमजीवन का स्वीकार किया है और मानवजीवन को सफल बनाया है। जो कर्मों से संयमजंग खेल रहे है।

जब आजादी के वक्त जंग खेला गया था तब अनेकों के खून हुए, कितनों को फाँसी प्राप्त हुई, न जाने कितने ही परिवार बेघर हो गये किन्तु यह संयमजंग तो ऐसा है जहाँ बाहर के शत्रुओं से नहीं बल्कि भीतर के शत्रुओं से लडना है। यह पंक्ति सुनी है,

**'जलती आग बुझा न पाये वह नीर ही क्या,**
**अपने लक्ष्य को भेद न पाये वह तीर ही क्या,**
**संग्राम में लाखों को मारनेवाला भी अगर,**
**अपने आप पर विजय न पाये वह वीर ही क्या।'**

रणभूमि में हजारों को खत्म करनेवाला भी जब तक स्वयं के आंतरीक शत्रुओं को नहीं मार देता तब तक वह महावीर नहीं कहलाता।

**'बाहर के शत्रुओं को जीतनेवाला वीर कहलाता है,**
**भीतर के शत्रुओं को जीतनेवाला महावीर कहलाता है।'**

मोहराजा ने हमारे साम्राज्य को तहसनहस कर दिया है । कितने बरसों से वह राज कर रहा है । जब तक हम संयमजंग नहीं छेडेंगे तब तक हमारा साम्राज्य पुनः प्राप्त नहीं होगा । हमारा ही स्वयं का राजमहल होने के बावजुद कब तक भिक्षुक की भाँति एक शरीर से दूसरे शरीर में भटकते रहना है ?

बस ! अब बहुत हुआ... अब भटकना नहीं है । पापों से पीछे हटना है और उसके लिये संयमजंग खैलना है । किसी स्त्री को छूना नहीं है, उसके लिये मन में खराब विचार भी नहीं करने । स्त्री ही नहीं है तो पुत्रादि परिवार की झंझट भी नहीं है । पैसे को छूना नहीं है अतः आमदनी की - पापों की फेक्टरी पर भी ताले लग जायेंगे ।

नये पाप तो बंद हो गये परंतु पूर्वकृत पाप जमा है उनका क्या ? लोच करना है । एक-एक बाल को खींचते समय एक-एक कर्म भी खींचे जा रहे है । जैसे बाल मस्तिष्क से अलग हो जाते है वैसे अनादिकाल से जमा हुए कर्म भी धीरे-धीरे आत्मा से अलग हो जाते है । केश के लुंचन के साथ क्लेश, कर्म, कषाय का भी लुंचन हो जाता है । तभी तो कहा है,

**'आ केशनुं लुंचन छे, आ कर्मोनुं लुंचन छे,**
**कषायो छे काला, एनुं आ लुंचन छे ।'**

किसी भी प्रकार के वाहनों का उपयोग किये बिना विहार करना, निर्दोष गोचरी ग्रहण करना, जैसे भ्रमण पुष्प से रस ग्रहण करता है किन्तु पुष्प को जरा सी भी पीडा नहीं देता वैसे संयमी भी गृहस्थों के घर से थोडी-थोडी गोचरी ग्रहण करते है किन्तु किसी को पीडा नहीं देते । इस निर्दोष संयमजीवन का पालन करनेवाले स्वयं तो पार होते है अन्यों को भी पार लगाते है ।

किसी नटनी के प्रेम में पागल बनकर उसे प्राप्त करने हेतु नट बनकर नृत्य करते-करते **इलाचिकुमार** की दृष्टि सामनेवाले घर में जाती है । उस घर में किसी मुनि भगवंत को श्रेष्ठी की रुपवंत कन्या मोदक वोहरा रही है । मुनि भगवंत गोचरी तो ग्रहण करते है किन्तु उस कन्या के उपर दृष्टि ही नहीं रखते ।

यह दृश्य इलाचिकुमार ने देखा । विचारधारा शुरु हो गई, पश्चाताप शुरु हुआ, स्वयं को धिक्कारते है । ''धिक्कार है मुझे जो एक नटनी के मोह में

मेरे माता–पिता, परिवार का त्याग किया और स्वयं नट बनकर भरसभा में नृत्य कर रहा हुँ। मेरी नजरों को मलिन किया, मेरे विचारों को भी तुच्छ बना दिया।''

''धन्य है इन मुनि भगवंत को ! उनके सन्मुख नवयौवना सोलह श्रृंगार सजकर, रुप के भंडार समान श्रेष्ठी की कन्या बार–बार विनंती कर रही है फिर भी उसको देखते तक नहीं। सर ऊँचा भी नहीं करते। धन्य है उनके जीवन को ! धन्य है उनके विचारों को !''

इस प्रकार मुनि भगवंतो की अनुमोदना करते–करते, स्वयं को धिक्कार देते हुए, नृत्य करते–करते... केवलज्ञान प्रगट हुआ।

**'स्वयं तिरे और अन्य को तैराये वह संयमी,**
**स्वयं डुबे और अन्य को डुबोये वह संसारी।'**

प्रतिदिन परमात्मा से संयमजीवन की याचना करो, भावना करो। उसके द्वारा चारित्र में प्रतिबंधक कर्मो का नाश होगा। आपके संपर्क में आनेवाले आत्मा को दीक्षा के भाव हो तो उसे रोकना नहीं। उसे सच्ची समझ प्रदान करो कि ''भाई ! हम तो गिर गये लेकिन तु मत गिरना। हम तो मोह की जाल में फँस गये किन्तु तु मत फँसना।'' इस प्रकार संयम का राग पैदा करने में मदद करो।

**कृष्ण महाराजा !** अपनी तमाम पुत्रीओं को पूछते थे कि ''बेटा ! रानी बनना है कि दासी ?'' सब को रानी बनना ही पसंद होगा ना ? जो रानी बनने को कहती उसे श्री नेमिनाथ प्रभु के हाथों दीक्षा प्रदान करवाते थे।

एक पुत्री माता की सिख से बोली की दासी बनना है तो उसका विवाह करवाया और जमाई को भी बोल दिया कि ''घर का तमाम कार्य उसके हाथों ही करवाना।'' कुछ दिनों के पश्चात् लौट कर आ गई और बोली कि ''मुझे दासी नहीं रानी बनना है।'' तो उसे भी दीक्षा प्रदान करवाई।

इतना ही नहीं नगर में जिसे भी दीक्षा ग्रहण करनी हो तो प्रसन्नता से कर सकते थे क्योंकि उनके परिवार के पोषण की तमाम जिम्मेदारी स्वयं उठा लेते थे।

धन्य है कृष्ण महाराजा को ! स्वयं तो संयम ना ले सके किन्तु किसीको रोकते नहीं थे। किसीको संयम लेने की भावना हो तो व्यवस्था–

अनुकूलता स्वयं ही कर देते।

यह संयमराग आपके जीवन में भी जरुरी है। जब तक संयम नहीं मिलता तब तक संयम की भावना, संयमी की अनुमोदना करते रहो। जहाँ भी दीक्षा हो वहाँ अनुकूलता करके भी अवश्य जाओ। दीक्षा देखने से भी कर्मो का नाश होता है।

वर्तमानकाल में अनेक महात्मा है जिनको दीक्षा देखते-देखते दीक्षा ग्रहण करने के भाव हो गये। उन मुमुक्षुओं ने पूरा संसार छोड दिया तो आप क्या मात्र २-३ घंटे व्यापार, दुकान, घर, स्कूल, कोलेज नहीं छोड सकते ?

| | |
|---|---|
| संसार में किसी का **Decision** नहीं | **Right** |
| सब बाहर से है बिलकुल | **White** |
| परंतु अंदर से आपकी **Position** है | **Tight** |
| घर में होती है रोज माता-पिता की | **Fight** |
| **Hotel** और **Picture** में गई जीवन की आधी | **Night** |
| फिर कैसे प्रगट होगी वैराग्य की | **Light** |
| गुरुदेव ने तो स्वीकारा है संयम | **Delight** |
| प्रतिदिन बरसायेंगे ज्ञान की | **Sunlight** |
| अज्ञान, मोह, राग-द्वेष नहीं रहेंगे | **Slight** |
| जिससे जल्दी प्राप्त होगी मोक्ष की | **Flight** |

**Some has Tension...**
**Some has Depression...**
**but no-one has Satisfaction...**

संसार में समस्या है, समाधान नहीं है। आज मानवी के पास सुंदर सजाये हुए डनलोप के बेड पर भी नींद नहीं है। ३२ मिठाई, ३३ फरसाण हाजिर है किन्तु भूख नहीं है। अप टु डेट फ्लेट है, **T.V. Set** है, सोफासेट है, किन्तु स्वयं अपसेट है। स्वयं जब अशांत बन चुका है तब प्रभु महावीर के बताये मार्ग पर चलना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

आज के मानवी को शरीर में शाता नहीं उसका दुःख है। किसीको समाज में स्थान नहीं है तो किसीको बाजार में नाम नहीं है उसका दुःख है।

किसीको घर की तकलीफ है तो किसीको घरवाली की तकलीफ है । किसीको रुपये नहीं है उसका दुःख है तो किसीको रुप नहीं है उसका दुःख है। परंतु किसीको रजोहरण नहीं है उसका दुःख है क्या ?

**संसार की लात खाते-खाते कोई मोक्ष में गया नहीं**
**संसार को लात मारते-मारते अनंत मोक्ष में चले गये**

**A small candle can light a thousand.**

**संयम अर्थात्**
**विकृति से प्रकृति की ओर...**
**वकीलात से कबूलात की ओर...**
**विसर्जन से सृजन की ओर...**
**धन से धर्म की ओर...**
**वासना से उपासना की ओर...**
**भोग से योग की ओर...**
**संपत्ति से संतोष की ओर...**
**विलास से वैराग्य की ओर...**
**दुर्जनता से सज्जनता की ओर...**
**क्रोध से बोध की ओर...**
**विकार से विराग की ओर...**
**समस्या से समाधान की ओर...**
**वहेम से प्रेम की ओर...**
**पाप से पश्चाताप की ओर...**
**साधन से साधना की ओर...**
**राग से त्याग की ओर...**

## *पावन प्रयाण....*

**श्वेत ध्वज यानि युद्ध विराम...**
**श्वेत चावल यानि भोजन विराम...**
**श्वेत बाल यानि जीवन विराम...**

पूर्व के काल में सफेद बाल देखकर लोगों को वैराग्य हो जाता था,

आज लोग सफेद बाल देखकर **dying** करवाते है। अहो आश्चर्यम् !

**आधि से आराधना के...**
**व्याधि से वैराग्य के...**
**उपाधि से उपासना के...**
**संसार से संयम के...**
**श्रावक से श्रमण के...**
**श्रृंगार सजने समुत्सुक बनो ।**

**जहाँ जीवन थोडा और जरुरतों का माप नहीं वह संसार,**
**जहाँ जीवन विशाल और जरुरत का नाम नहीं वह संयम ।**

हररोज प्रभु से प्रार्थना करो कि...

**'मोहतंतु तोडीने हुं स्वजन संग क्यारे त्यजीश ?**
**संवेग ने वैराग्यना रसराज ने क्यारे भजीश ?**
**गुरुदेव ना पदकमलमां बनी भ्रमर हुं क्यारे रमीश ?**
**श्रामण्यरुपी सुंदरी क्यारे वरीश... क्यारे वरीश ?**

शाश्वत सुख की खौज में, वीतराग की राह में, दीक्षा के दरबार में, वैराग्य के वनविस्तार में, सर्वविरति के सहवास में, प्रवज्या पंथ के प्रवास में कदम उठाने परमोत्सुक बनो ।

**'संयम जंग संसार भंग कराये,**
**संसार जंग संयम भंग कराये ।'**

**'संयमराग संसार से तैराये,**
**संसारराग संसार में डुबोये ।'**

# संसारी V/s संयमी

| | | | |
|---|---|---|---|
| साधन के बिना न चले वह | संसारी | साधना के बिना ना चले वह | संयमी |
| खूबी में खामी देखे वह | संसारी | खामी में खूबी देखे वह | संयमी |
| स्वप्न सुख के और | | दिखता दुःख पर | |
| दिन दुःख के वह | संसारी | कायमी सुख वह | संयमी |
| जहाँ हर पल कडवाहट है वह | संसारी | जहाँ हर पल नरमाहट है वह | संयमी |
| मात्र जमा करने की बात वह | संसारी | जमा होने की बात वह | संयमी |
| पैर खींच कर नीचे गिराये वह | संसारी | हाथ दे कर उपर उठाये वह | संयमी |
| स्वयं जले, दूसरों को | | स्वयं स्थिर हो कर अन्य को भी | |
| जलाये वह | संसारी | स्थिर वह करे | संयमी |
| कण-कण को बचाकर रखे वह | संसारी | क्षण-क्षण को बचाकर रखे वह | संयमी |
| अच्छे दिखने का प्रयत्न करे वह | संसारी | अच्छे बनने का प्रयत्न करे वह | संयमी |
| १५ घंटे हाथ में मोबाईल रखे वह | संसारी | १५ घंटे स्वाध्याय करे वह | संयमी |
| बोले बहुत करे | | बोले कम और कर के | |
| कुछ नहीं वह | संसारी | दिखाये वह | संयमी |
| Dress अनेक पर | | Address अनेक पर | |
| Address एक वह | संसारी | Dress एक वह | संयमी |
| पेटी और तिजोरी भरने | | पेट न भरने पर भी | |
| पर भी असंतोष वह | संसारी | संतोषी वह | संयमी |
| जहाँ हर पल Competition है वह | संसारी | जहाँ हर पल Compromise है वह | संयमी |
| स्वयं डुबे, अन्य को भी डुबोये वह | संसारी | स्वयं तैरे, अन्य को भी तिराये वह | संयमी |

| | |
|---|---|
| इस छोटे से जीवन में कितना... | **Tension** |
| हरेक पेपर में आता है... | **Reaction** |
| गर्मी में भी ना मिले... | **Air-Condition** |
| कोलेज के कार्य में करनी पडती है... | **Action** |
| तभी शिक्षकों पर होती है अच्छी... | **Impression** |
| करने हेतु माता-पिता से माँगनी पडती है... | **Permission** |
| करनी हो हमें... | **Fashion** |
| किन्तु लिखने बैठना पडे... | **Lesson** |
| हमें घुमने जाना है... | **Hill Station** |
| इतने में ही करीब आ जाती है... | **Examination** |
| और हर साल आता है... | **Election** |
| जीवन में नौकरी करने के बावजुद नहीं मिलता... | **Pension** |
| चातुर्मास में आता है... | **Reaction** |
| तो अंत में लेना पडता है डोक्टर का... | **Injection** |

**इन तमाम नुकसान से बचने हेतु**

**Tension Free जीवन जीने हेतु**

**चलो सब संयम जीवन में प्राप्त करने हेतु**

***Admission***

*संयम अर्थात्...*

*नया गणित*

*भिक्षा मिले तो संयम वृद्धि*

*भिक्षा ना मिले तो तपोवृद्धि*

*नया परिवार*

*पिता - धैर्य*

*माता - क्षमा*

*भ्राता - संयम*

## संयम जीवन का नया पहनावा

*समर्पण का संथारा*

*करुणा की कामली*

*कोमलता के वस्त्र*

*रमणता का रजोहरण*

*प्रसन्नता की पोथी*

*पवित्रता के पात्र*

*दया का दंडा*

## SANSAR MEANS

| | |
|---|---|
| हमारी धारणा अनुसार कुछ ना हो... | वह है संसार |
| सोते वक्त समाधि और उठने पर उपाधि... | वह है संसार |
| एक समाधान होने पर अन्य अनेक विपदा हो... | वह है संसार |
| हाथ भी जलते है, हृदय भी जलता है... | वह है संसार |
| यह लोक भी बिगडे, परलोक भी बिगडे... | वह है संसार |
| थप्पड मारकर गाल लाल करना... | वह है संसार |
| जेब खाली, जलसा भारी... | वह है संसार |
| पाई की पैदाईश नहीं और घडी का विश्राम नहीं... | वह है संसार |
| आराधना का नाम नहीं और विराधना का पार नहीं... | वह है संसार |
| उपर से चमकीलापन, भीतर से व्याकुलता... | वह है संसार |
| भूत भागे और पलित जागे ... | वह है संसार |
| मन मारकर भी हँसते रहना... | वह है संसार |

**टूटनेवाला टूटेगा, फूटनेवाला फूटेगा, कम होनेवाला कम होगा, उसमें तु क्यों अपना वक्त बरबाद कर रहा है ?**

आज मानव के पास **Dinner Set, Diamond Set, Sofa Set, Tea Set, T.V. Set** है किन्तु उसका **Mind Upset** है, क्योंकि जिस चाबी से ताला खोलना था, उसके द्वारा ताला बंद करके बैठा है। अर्थात् जिस मन के उपयोग से भगवान बनना था, उसी मन से शैतान बन बैठा है।

**५० रुपये हाथ से गिर जाते है तो उसका दुःख होता है, किन्तु जीवन के ५० वर्ष धर्म के बिना पानी में बह गये उसका दुःख होता है क्या ?**

संयम ग्रहण ना कर पाये तब तक सच्चे श्रावक तो बन सकते हो ना ? सच्चा श्रावक वही है,

**जो चौविहार का त्याग ना करे,**
**सामायिक का त्याग ना करे,**
**बीडी, सिगरेट का उपयोग ना करे और**
**कहीं भी झूक ना जाये।**

**आपको किसकी चिंता है ? साथ रहनेवाले आत्मा की या अलग हो जानेवाले शरीर की ? कमाल है कि जिसको एक क्षण भी भूलना नहीं है उसको पूरे दिन में एक क्षण याद तक नहीं किया जाता।**

**आपके दो मित्र है। उनमें एक सामायिक करने की बात करता है और दूसरा Hotel में जाने की बात करता है तो आप किसको Company देंगे ?**

और कुछ ना हो तो कम से कम प्रभु को विनंती करो कि, हे प्रभु !

**भले आया बिना कपडे के,**
**जीवन बिता दरजी के कपडे से,**
**पर जब जाऊँ यहाँ से प्रभु,**
**तुम्हारा वेश हो मेरे तन पर,**
**इतनी सी कृपा तो अवश्य करना।**

# PRAY TO GOD & GURUDEV

संसार है भयंकर रण,
भवोभव होता जन्म-मरण ।

संसार के त्यागुं अधिकरण,
संयम के ग्रहुं उपकरण ।

सदा हो ज्ञान में विचरण,
आर्या चंदना का हो आचरण ।

स्वीकारुं प्रभु का शरण,
सदा रहुं गुरु के चरण ।

कर्म का हो शीघ्र हरण,
तो मोक्ष का हो स्मरण ।

भवजल तैरने तरव
अषा तो दे दो,

**गुरुदेव मुझे जल्दी रजोहरण**

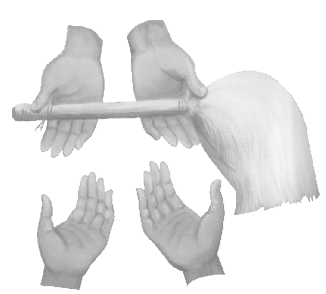

# Moral of Life

***जाये नोट फिर होती है संबंध में ओट***

***आत्म कल्याण में होती है बडी खोट***

***हे जीव ! मानव जीवन में ना बन तु भोट***

***संसार से पार होने स्वीकार ले***

***संयम की बोट***

# आत्मा के Ornaments - अलंकार
## धर्मरत्नप्राप्ति के २१ गुण

( १ ) अक्षुद्र
( २ ) रुपवान्
( ३ ) प्रकृति से सौम्य
( ४ ) लोकप्रिय
( ५ ) अक्रूर
( ६ ) भीरु
( ७ ) अशठ
( ८ ) सुदाक्षिण्यवान
( ९ ) लज्जित
( १० ) दयालु
( ११ ) मध्यस्थ सौम्यदृष्टि
( १२ ) गुणानुरागी
( १३ ) सत्कथ
( १४ ) सुपक्षयुक्त
( १५ ) सुदीर्घदर्शी
( १६ ) विशेषज्ञ
( १७ ) वृद्धानुग
( १८ ) विनीत
( १९ ) कृतज्ञ
( २० ) परहितकारी
( २१ ) लब्धलक्ष्य

## *धर्मरत्न की २१ गुणश्रेणि*

**( १ ) अक्षुद्र :-गंभीर हो**

- क्षुद्र अर्थात् गंभीरता रहित। वह बुद्धि की निपुणतारहित होने से धर्म की साधना नहीं कर सकता, अतः अक्षुद्र अर्थात् स्व पर का उपकार करने में जो समर्थ हो वह धर्मरत्न प्राप्त करने में योग्य है।
- स्त्री अर्थात् **free of charge** प्रचार और प्रसार। मात्र एक बहन को कुछ कहो और पूरे नगर में **whatsapp** से भी तेज गति से बात फैल जाती है। ९-९ माह तक बालक को गर्भ में रखने की क्षमता धारण करनेवाली स्त्री ९ सेकन्ड भी कोई बात पेट में नहीं रख सकती। गजब का आश्चर्य है ना!
- रज का गज ना करे, कषायों को **no entry**
- **A great conquror does not fight on small issues.**

  महान योद्धा छोटी-छोटी बातों को ले कर विवाद नहीं करता।
- **प्रभु का दास कभी ना हो उदास। वह उडाउ भी नहीं होता। वह उधार भी नहीं होता किन्तु उदार अवश्य होता है।**
- **दानेन पाणिर्न तु कंकणेन।**

  हाथ का आभूषण घडी या कंकण (स्वर्ण) नहीं बल्कि दान है।
- लक्ष्मी की तीन गति

  **( १ ) दान - अन्य को देना**

  **( २ ) भोग - स्वयं उपयोग करना**

  **( ३ ) नाश - न स्वयं उपयोग कर पाये, न अन्य को भी करने दे**

  जो तुच्छ ना हो वह लक्ष्मी का अधिक प्रयोग दान में ही करेगा।
- संघ पूजन करने में रूचि है या ग्रहण करने में ? खाने में ज्यादा आनंद है या खिलाने में ?
- आपको इन तीन में से क्या बनना है वह आप स्वयं तय करो,

  **( १ ) लक्ष्मीदास - चमडी छूटे किन्तु दमडी न छूटे**

  **( २ ) लक्ष्मीनंदन - कुछ सत्कार्यों में उपयोग करे**

**( ३ ) लक्ष्मीपति - लक्ष्मी उसके काबू में रहे**

- बरतन का उपयोग नहीं किया तो जंक लग जाता है,
  संपत्ति का **Use** नहीं किया तो **Loose** हो जायेगी।
- छोटी-छोटी बातों में वर्तमान काल में जो कलह, क्लेश, विवाद, युद्ध, माथापच्ची हो जाती है वह भी तुच्छता का ही परिणाम है।
- बात-बात पर **divorce** की धमकीयाँ, घर छोडकर पलायन करने की बातें, विवाह-विच्छेद आदि अनेक घटनाओं के घाव बढ रहे है वह भी क्षुद्रता का परिणाम है।
- स्वभाव में सौंदर्य, गांभीर्य, औदार्य, माधुर्य रखना सिख लिया तो स्व और पर सभी में शांति का निर्माण होगा।
- **Life if worth living.**
  जीवन जीने लायक बनेगा।
- रेल्वे की तरह जीवन में भी तीन लाईन
  (१) **Broad Line** - विकसित दिमाग
  (२) **Meter Line** - अर्धविकसित दिमाग
  (३) **Narrow Line** - संकुचित दिमाग
- अक्षुद्र का नंबर **Broad Line** में गिना जायेगा।
- मैं और मेरी पत्नी, इसमें ही पूरी दुनिया बस जाती है। बाकी दुनिया का जो होना हो, हो जाये। इस प्रकार की विचारधारा क्षुद्र व्यक्ति की होती है जबकि अक्षुद्र व्यक्ति को "**वसुधैव कुटुम्बकं**" - **The world is my family** भावना होती है।

**( २ ) रुपवान :- पाँचो इन्द्रिय परिपूर्ण होती है।**

- संपूर्ण अंगोपांग सहीत, पाँचो इन्द्रिय के द्वारा सुंदर और उत्तम संघयणवाला जो जीव है वह रुपवान कहा जाता है। वह पुरुष धर्म की प्रभावना कर सकता है और स्वयं धर्म के पालन में समर्थ होता है।
- दाँत गिर गये हो, आँखो में अँधापन आ चुका हो, कान से बहरा हो, शरीर में लकवा हो वह जीव धर्म पालन में समर्थ नहीं होता।

- गुण के बिना मात्र रुप की कोई कीमत नहीं है । आज के हीरो-हीरोईन रुप प्रदर्शन करके अनेक लोगों का जीवन बरबाद कर रहे है ।
- रुपवान बनने हेतु **Beauty Parlour** में जाने की जरुरत नहीं है किन्तु धर्मस्थानक में जाने की जरुरत है । धर्म करने से निर्जरा के साथ पुण्यबंध होता है और वह पुण्य ही आपको रुपवान बनाता है ।
- आज के समय में रुप, रुपये, रुआब की बोलबाला है । मात्र रुप का मोह भी अनर्थकारक बनता है ।
- आज के समय में लडकी देखती है लडके की **height**

  लडका देखता है लडकी कितनी है **white**

  दोनों मिलकर मन को करते है **tight**

  परिणाम जीवन में दिन-रात होती है **fight**
- रुपवान की शोभा शील, सदाचार और संस्कार से है ।
- रुपवान बनना तो पुण्य का परिणाम है, किन्तु साथ में गुणवान बनना तो आत्मा का पुरुषार्थ, माता-पिता के संस्कार, देव-गुरुकृपा का परिणाम है ।
- रुपवान व्यक्ति में तीन गुण होना आवश्यक है ।

  **( १ ) सुख में सावधान - आसक्ति ना हो**

  **( २ ) दुःख में समाधान - आर्तध्यान ना हो**

  **( ३ ) धर्म में प्रणिधान - अस्थिरता ना हो**
- **Not only beautyfullness, but also character is important in our life.**

  जीवन में मात्र सुंदरता नहीं बल्कि सुंदर चारित्र भी महत्त्वपूर्ण है ।

**( ३ ) प्रकृति सौम्य :- स्वभाव से ही शांत हो ।**

- जो स्वभाव से सौम्य प्रकृतिवान हो वह प्राय: पाप में प्रवर्तमान नहीं होता । तभी वह सुखरुप सेवा ग्रहण करने लायक बनता है और अन्यों को भी उपशम का कारण बनता है ।
- **Nature Cool** होना जरुरी है, शांत-प्रशांत-उपशांत बनता जरुरी है ।

- क्रोध से कितने नुकसान होते है यह जानने के बावजुद क्रोध का त्याग नहीं करते । एक इन्सान भी गुस्सा करता है तब उसके आसपास रहनेवाले तमाम जीवों को असर होती है ।
- **''क्षमा वीरस्य भूषणम्''**

  क्षमा वीर पुरुषों का आभूषण है ।
- आधि, व्याधि, उपाधि आने पर समाधि टीकनी जरुरी है, टूटनी नहीं चाहिये । मानव गुस्सा करके स्वयं ही स्वयं के हाथों दु:खी होता है । स्वयं ही अपने भविष्य पर प्रहार करता है ।
- **''अशान्तस्य कुतो सुखम्''**

  अशांत व्यक्ति को सुख कैसे मिलेगा ?
- क्रोध के मूल की खौज करके उसमें से बोध प्राप्त करो ।
- जब तक संत नहीं बन सकते तब तक शांत तो बनो ।

**'ज्ञानी से ज्ञानी मिले करे ज्ञान की बात,**
**गधे से गधा मिले करे लातम लात ।'**
**वह हो आग तो आप हो जाना पानी,**
**यही है मेरे प्यारे महावीर की वाणी ।**

आपका नंबर किसमें है ? श्वान भौंकता है, सर्प दंश देता है, गधा लात मारता है ।

अगर आप भी कभी भी, कहीं भी भौंकते हो, कटु वचनों से सामनेवाले को दंश देते हो, क्रोधावेश में आ कर लात मारते हो तो आप में और पशुओं मे क्या फरक रहा ?

- नाम हो शांतिभाई या शांतिबहन परंतु एक भी दिन विवाद के बिना नहीं रह सकते । विवाद किये बिना भोजन भी ठीक से हजम होता नहीं, चैन नहीं होता, बैचेनी लगती है । यह सब क्यों हो रहा है ?

**यथा नाम तथा गुण:**

**जो लगती नहीं वह लौटरी क्या काम की ?**

**आहार को जो ना हजम करे वह होजरी क्या काम की ?**

**पूरा वेतन जो ना दे वह नौकरी क्या काम की ?**

**पूरा दिन जो चिल्लाती रहे वह डोकरी क्या काम की ?**
**माता-पिता का कहना माने नहीं वह छोकरी क्या काम की ?**
**सही समय पर जो खिसक जाये वह खोपरी क्या काम की ?**

- **Never loose mind but forever use mind.**

  दिमाग को बेकाबु मत बनाओ बल्कि उसका सही उपयोग करो. ।

- **कोयला घिसे जाने के बावजुद अपना रंग छोडता नहीं,**
  **सुखड कटे जाने के बावजुद अपनी महक छोडता नहीं,**
  **इक्षु पीस जाने के बावजुद अपनी मधुरता छोडता नहीं,**
  **वैसे धर्मी आत्मा भी दुःख पाने के बावजुद अपनी समता छोडता नहीं ।**

**( ४ ) लोकप्रिय : सदाचार से समृद्ध जीवन हो ।**

- जो इस लोक और परलोक से विरुद्ध कार्य का सेवन ना करता हो और दान, विनय व शील से युक्त हो वह लोकप्रिय कहा जाता है । वह अन्य जीवों को भी धर्म के लिये बहुमान पैदा करता है ।
- लोकप्रिय बनने हेतु बडों को आदर दो, छोटे की कदर करो ।
- आपका जीवन गुलाब के फूल जैसा होना चाहिये, काँटो की तरह नहीं ।
- चार प्रकार के लोग :-

  (१) **धन्य** - जो व्यक्ति १८ आलम में बसता है वह,

  (२) **धन्यतर** - जो अपने मन में गुरु को बसाता है वह,

  (३) **धन्यतम्** - गुरु के हृदय में स्वयं बसता है वह,

  (४) **धन्यातिधन्य** - परमात्मा के हृदय में स्वयं बसता है वह

- **लोगविरुद्धच्चाओ - लोक से विरुद्ध कार्यों का त्याग करना ।**

  शासन, संघ, समाज, समुदाय का नाम खराब हो उन कार्यों का त्याग करो ।

- चाहे कितना भी श्रेष्ठ इन्सान हो, वह सब को अपने साथ ले कर चलता है तभी लोकप्रिय बन सकता है ।
- **If wealth is lost, nothing is lost.**

**If health is lost, something is lost. But,**
**If character is lost, everything is lost.**

यदि आपने संपत्ति गँवाई है, तो कुछ भी नहीं गँवाया,
यदि आपने स्वास्थ्य गँवाया है, तो थोडा कुछ गँवाया,
किन्तु यदि आपने सदाचार गँवा दिया, तो सब कुछ गँवा दिया।
केरेक्टर-सदाचार गया तो सब कुछ गया समझो।
सदाचार, संस्कार ही जीवन की मुख्य आधारशिला है।

- लोकप्रियता से संबंध भी बढते है,
  बडे श्रेष्ठियों के साथ... और
  फलतः अहिंसा प्रसार आदि अकल्पनीय कार्यों में भी सफलता प्राप्त होती है।
- **सफल व्यक्ति से ज्यादा उत्तम व्यक्ति बनने का महत्त्व है।**

**जब तुम आये इस जगत में, जग हसे तुम रोय,**
**अब करणी ऐसी कर चलो, तुम हसे जग रोय।**

- **कुछ व्यक्ति ऐसे होते है कि जहाँ जाते है वहाँ आनंद फैला देते है, कुछ व्यक्ति ऐसे होते है कि जहाँ से जाते है वहाँ आनंद फैला देते है।**
- लोकप्रिय व्यक्ति जहाँ भी जाते है वहाँ आनंद व्याप्त हो जाता है।
- **Life is great school for the development of character.**
  जीवन तो चारित्र्य के विकास हेतु विशाल पाठशाला है।

**(५) अक्रूर - कषायरहित**

- क्रूर मानवी क्लिष्ट परिणामी होता है। अतः वह सम्यक् प्रकार से धर्म की आराधना नहीं कर पाता। इसलिए वह धर्म के योग्य नहीं है। परंतु अक्रूर - शुभ परिणामी आत्मा ही धर्म के लिये योग्य है।

**''कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव।''**
**कषायों से मुक्त होना ही वास्तविक मोक्ष है।**

- कसाई जब जीवहिंसा करता है तब शुभ भावों की हिंसा करता है। कसाई पर तिरस्कार पैदा होता है पर कषाय पर तिरस्कार होता है ?
- हाथ से पतीली, काच का साधन, चाय का कप छूट जायेगा तो चलेगा किन्तु दिमाग काबू से छूट जायेगा तो नहीं चलेगा। चाय का कप छूटने से जो नुकसान नहीं होगा वह दिमाग के छूटने से होगा।
- पेड पथ्थर मारनेवाले को मीठे फल देता है । आपको पथ्थर मारनेवाले को आप क्या देते हो ? मीठे फल या तीखी गाली ?

**लघुकर्मी जीव को जो समझाओ वह समझ लेता है,**
**भारेकर्मी जीव को समझाने पर प्रतिकार करता है।**

- क्रूरता हो वहाँ धर्म नहीं होता, दयालुता हो वहाँ क्रूरता नहीं होती।
- अक्रूर व्यक्ति इन छः गुणों को जीवन में अपनाने का प्रयत्न करें।

  (१) **सुनो** – कषायों के कटु परिणामों को सुनो।

  (२) **समझो** – सुनने के बाद उसे समझने का प्रयत्न करो।

  (३) **सोचो** – कब ? कहाँ ? कैसे मेरे कषाय हो रहे है वह सोचो।

  (४) **ढुंढो** – कषायों को दूर करने के उपाय खोजो।

  (५) **सुधारो** – पूर्वकृत भूलों को सुधारो।

  (६) **सजाओ** – सर्वगुणों को प्राप्त करके जीवन को सजाओ।
- **We have plenty of Money but not peace of Mind.**
  शांति दुनिया के किसी भी बाजार में नहीं मिलेगी, मात्र अक्रूर को ही उसका अनुभव होगा।

**मन की आंटी अटपटी, झटपट लखे न कोय,**
**मन की खटपट जो मीटे, चटपट दर्शन होय।**

- **मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः**
  संसार और मोक्ष दोनों का कारण मनुष्य का मन है।
  क्लेश सहित मन अर्थात् संसार, क्लेश रहित मन अर्थात् मोक्ष।
- निर्वाणभूमि में आध्यात्मिक जीवन का निर्माण करो।

- भूतकाल के कषाय जब चूभते है तभी वर्तमान में कषाय रुकते है और धर्म में स्थिर हो सकते है अन्यथा भव में भटकना पडता है।
- अक्रूर बनने हेतु दो शर्त :-

  (१) **Let go** - जाने दो, जीवन में हो रही छोटी घटनाओं को मन में ना रखो।

  (२) **Let god** - इश्वर पर छोड दो । जीवन में हो रही बडी घटनाओं को प्रभु पर छोड दो।
- **द्वेष आक्रमक है जो तोड देता है,**

  **प्रेम निमंत्रक है जो जोड देता है।**
- **दुश्मन को नहीं दुश्मनी को खत्म करो।**

**पोथी पढ पढ जग मूआ, पंडित भया न कोय,**
**ढाई अक्षर प्रेम का, पढे सो पंडित होय।**

प्रेम से दुश्मन भी दोस्त बन सकता है, क्रूरता से मित्र भी शत्रु बन सकता है।

**( ६ ) भीरु :-पाप का भय**

- भीरु मानव इस लोक और परलोक के कष्ट का विचार करता है और अपयश के कलंक से डरता है। अत: वह पापकर्म में प्रवृत्त नहीं होता। तो, पापभीरु जीव धर्म के लिये योग्य है।
- तीन प्रकार के जीव

  (१) **अधम** - राजा के भय से पाप ना करे,

  (२) **मध्यम** - परलोक के भय से पाप ना करे,

  (३) **उत्तम** - स्वभाव से ही पाप ना करे
- **बंध समय चित्त चेतीए, उदये शो संताप**

  पाप करते वक्त माप रखो, अन्यथा सर्प के जैसे दंश देगा तब आँखो में आँसु होंगे।
- दु:ख पर आँसु बहाये वह अनार्य

  पाप पर आँसु बहाये वह आर्य

- तीन चीजों से दूर रहो

  **( १ ) पाप के विचार से दूर रहो**

  **( २ ) पाप के निमित्तो से दूर रहो**

  **( ३ ) पापी के संग से दूर रहो**
- बिन्दास्त बनकर पाप मत करो, आँखे बंद करके पाप मत करो, शायद करने ही पडे तो आँख से आँसु बहाकर करो ।
- दो घटना में लोग रुमाल से जमीन को साफ करते है ।

  (१) जीव मरे नहीं इसलिए – पाप से रुकते है ।

  (२) कलर खराब ना हो इसलिए – पाप का बंधन करते है ।
- **नाँव में होनेवाला छोटा छिद्र भी नाँव को समंदर में डुबो देता है, जीवन में होनेवाला पाप का छिद्र जीव को संसार में भ्रमण करवाता है ।**
- **One man purification can save the world.**

  एक मानव की पवित्रता जगत को बचा सकती है । अतः पापभीरु बनकर जीवन को शुद्ध बनाओ ।
- **Wasted Money, Wasted Time & Wasted Sin** से बचो
- **T.V.** में **Picture** देखते समय, **Theatre** में **Movie** देखते समय तीन घंटे के पश्चात् भी **The End** होता है । हमारे पापों का **The End** कब होगा ?
- आप किससे डरते हो ? पाप से या सर्प से ? सर्प तो एक भव में ही नुकसान करेगा जबकि पाप तो भवोभव तक नुकसान करेगा ।
- पाप का डर लगता है या पाप करने पर पकडे जाने का डर लगता है ?
- साधु बनी निष्पाप जीवन जीना चाहिये । कर्मोदय से मुमकीन ना हो तो श्रावक बनना चाहिये ।

  **श्रा** – (जिनवाणी का) श्रवण और श्रद्धा

  **व** – (धन का) वपन करे और वरण करे (सम्यक्त्व को)

  **क** – (पाप नाश) करे और करे (व्रत स्वीकार)

(७) **अशठ :- सरल**

- शठतारहित मनुष्य अन्य मानवी को दगा नहीं देता अत: वह विश्वास करनेलायक और प्रशंसा के पात्र बनता है । और वह भावसहित धर्मकार्य में उद्यम करता है अत: धर्म के योग्य है ।

  **It is simple to become rich,**

  **but it is difficult to become simple.**

  संपत्तिवान बनना आसान है किन्तु सादा और सरल बनना कठीन है ।

- शठता यानि नीचता, बदमाशी, दगेबाजी, ठगाई
- **First deserve than desire.**

  प्रथम योग्यता प्राप्त करो फिर इच्छा करो ।

- **पात्र टूटने पर जोड सकते है किन्तु पात्रता टूट गई तो... ?**
- जिसके जीवन में पात्रता है वही धर्मरत्न की प्राप्ति कर सकता है ।

  **पल का भरोसा नहीं तो कल का क्यों विश्वास करे ?**

  **माया के झूठे बंधन में जीवन को क्यो ह्रास करे ?**

- **शठं प्रति शाठ्यं,**

  **Tit fo Tat,**

  **जैसे के साथ वैसा**

  **होते है तो गाँव के बीच रह सकते है ।**

  यह कहावत है संसार की ।

  प्रभु वीर कहते है कि "कर्म के अलावा किसी की ताकत नहीं है की हमारा बाल भी बाँका कर सके, अत: तु किसी और को नहीं बल्कि अपने आप को ही ठग रहा है ।"

- **Eating** करो, **Meeting** करो, **Seating** करो, **Fitting** करो । भले करो पर कृपया किसी के साथ **Cheating** बिलकुल मत करो ।

**उपर सफेदी है दिल काला है,**

**होठो पे हँसी है दिल में ज्वाला है,**

**दिखावा इतना बढ गया है समज में नहीं आता,**

**खजाना भले खाली हो उपर तो ताला है।**

- हे बालक ! तु तमाम बातों को सत्य क्यों मान लेता है ? बालक का जवाब भी सुनने जैसा है... उसने कहा कि "क्योंकि कपट किसे कहते है वह मुझे ज्ञात नहीं।"
- अच्छे बनना पसंद है या अच्छा दिखना पसंद है ?
- हे भगवान ! सब का भला करना, शुरुआत मुझ से करना।

**मन मेला तन उजला, बगला कपटी अंग,**
**तासे तो काको भलो, तन मन एक ही रंग।**

- **Nobody can trust on cheater.**

  कपटी इन्सान पर कोई विश्वास नहीं कर सकता।
- **"परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्"**

  परोपकार से पुण्य प्राप्त होता है, परपीडा से पाप बंधन होता है।

  **१. नाम राम का और काम हराम का**

  **२. मुँह में राम, बगल में छूरी**

  **३. हाथी के दाँत दिखाने के अलग और चबाने के अलग होते है।**

**(८) सुदाक्षिण्यवान :-अपना कार्य छोडकर भी अन्य का कार्य कर दे।**

- उत्तम दाक्षिण्य गुणवाला पुरुष अपने कार्य का व्यापार छोडकर अन्य पर उपकार करता है, अतः उसका वचन हर कोई ग्रहण करता है और सर्व मनुष्य उसका ही अनुसरण करते है।
- हम पहले अपना कार्य करते है फिर मूड रहा तो अन्य का कार्य करेंगे। जबकि दाक्षिण्यवान् जीव अपना कार्य गौण बनाकर भी अन्य का कार्य पहले करेगा।
- **"सेवाधर्मो परमगहनो योगीनामप्यगम्यः"**

  सेवा करने का धर्म इतना गहन है कि योगीओं को भी वह दुर्लभ है।
- आज के जमाने में भलाई करनेवालो से ज्यादा मलाई खानेवाले है।

- स्वयं तो सत्कार्य करो, अन्य को भी मदद करो।
- कोई गलत कार्य बताये तो विनयपूर्वक अस्वीकार करो।
- आपका नंबर किसमें है ?

  (१) **संस्कृति** - अपना कार्य छोडकर भी अन्य का काम करना।

  (२) **प्रकृति** - प्रथम अपना कार्य करना फिर समय मिलने पर अन्य का कार्य करना।

  (३) **विकृति** - अन्य का कार्य करना तो दूर, उसके द्वारा किया हुआ कार्य भी बिगाड देना।

  **सुदाक्षिण्यवान् का नंबर तो संस्कृति में ही होता है।**
- **सुदाक्षिण्यवान्** व्यक्ति के जीवन में चार गुण होते है।

  (१) **आस्था** - जिनेश्वर के वचन में (श्रद्धा) आस्था

  (२) **आराधना** - जिनेश्वरकथित धर्म की आराधना

  (३) **अविचलता** - धर्मकार्य में होनेवाले विघ्नों में अविचलता (निश्चलता)

  (४) **आशा** - पौद्‌गलिक सुख छोडकर मोक्ष, आत्मा के सुख प्राप्त करने की आशा (इच्छा)
- **Care more for others than yourself.**

  स्वयं से ज्यादा अन्य की देखभाल करो।

**( ९ ) लज्जित :-गलत कार्य करने में शर्म।**

- लज्जित इन्सान अल्प अकार्य को भी दूर से ही त्याग देता है। सदाचार का आचरण करता है और अंगीकार किया हुआ व्रत किसी भी हालत में छोडता नहीं है। अतः वह धर्म का अधिकारी है।
- गलत कार्य में कभी आगे नहीं आयेगा,

  सही कार्य में कभी पीछे नहीं रहेगा।
- "पिताजी खडे है, सिगारेट कैसे निकालुँ ?" लज्जित व्यक्ति में दुराचार हो तब भी बाहर प्रगट नहीं करेगा, रुक जायेगा।
- लज्जित व्यक्ति के जीवन में चार गुण होते है।

  **( १ ) सदाचार बढाना**

**( २ ) बुराई घटाना**

**( ३ ) गुणों का गुणाकार**

**( ४ ) भूलों का विभाजन**

- इन्द्रिय चोर से भी ज्यादा खतरनाक है। चोर जिसके घर में रहता है, वहाँ तो चोरी नहीं करेगा किन्तु इन्द्रिय आत्मा के घर में ही रहकर विवेकरुपी धन की चोरी करके दुर्गति में धकेलती है।
- लज्जित व्यक्ति खुल्ले चौगान में कभी पाप नहीं कर पायेगा।
- **Avoid bad acts from your life.**

  आपके जीवन से गलत कार्यो को दूर करो।

**( १० ) दयालु :-प्राणी की रक्षा**

- धर्म का मूल दया है और दया को ध्यान में रखकर ही सर्व धर्म अनुष्ठान जिनेन्द्र के शासन में सिद्ध है। अतः दयालु आत्मा धर्म के योग्य है।
- दुःखी, दरिद्र, विकलांग को देखकर दया से मन उभर जाता है।

**दुःखी के दुःख की बात, सुखी नहीं समझ सकता,**
**सुखी यदि समझ लेता, तो दुःख विश्व में ना रहता।**

- जीव विराधना से डरे वह जैन। जयणा श्रावक की माता है।
- ध्यानपूर्वक चलो, जिससे स्वयं की रक्षा तो होती है किन्तु अन्य जीवों की रक्षा भी होती है।

  **Live & Let Live**

  **जीओ और जीने दो।**
- **नीची नजर से चलते, तीन गुण बडे होते है,**
  **कंटक टले, दया पले, पैर भी सुरक्षित रहते है।**
- **गाडी सर्वश्रेष्ठ किन्तु ब्रेक ना हो तो क्या काम की ?**
  **पेन सर्वश्रेष्ठ किन्तु रिफिल ना हो तो क्या काम की ?**
  **वाडी सर्वश्रेष्ठ किन्तु वृक्ष ना हो तो क्या काम की ?**
  **जिंदगी सर्वश्रेष्ठ किन्तु दया ना हो तो क्या काम की ?**

**सूर्य प्रगट हो कर अन्य को प्रकाश देता है,**
**फूल खीलकर अन्य को सुवास देता है,**
**दीपक जलकर अन्य को उजास देता है,**
**दुर्जन मानवी जीने के लिये अन्य को त्रास देता है।**

- **Every man can not be great man but every man can be gentleman.**

  हर कोई व्यक्ति महान नहीं बन सकता किन्तु सभी व्यक्ति सज्जन तो अवश्य बन सकते है।

- दयालु के जीवन में तीन गुण अवश्य होने चाहिये।

  (१) हृदय - **Butter Factory** - मक्खन से भी कोमल
  (२) मस्तिष्क - **Ice Factory** - बर्फ से भी ठंडा
  (३) जिह्वा - **Sugar Factory** - शक्कर से भी मीठी

**दया धर्म का मूल है, पापमूल अभिमान**
**तुलसी दया न छोडीए, जब लग घट में प्राण**

- **A kind person saves others life. While cruel person kills others life.**

  दयालु व्यक्ति अन्य का जीवन बचाते है, जबकि निर्दयी व्यक्ति अन्य का जीवन खत्म करते है।

**(११) मध्यस्थ सौम्य दृष्टि :-सर्वत्र रागद्वेष रहित**

- मध्यस्थ और सौम्य दृष्टिवाला पुरुष धर्म के विचार को यथार्थ स्वरुप से जानता है और गुण का संग्रह करता है, दोषों का दूर से ही त्याग करता है।

- चार बातों को पैदा होते ही नष्ट कर दो।

  **(१) दर्द - समभाव से नष्ट करो**
  **(२) दुश्मन - मैत्रीभाव से नष्ट करो**
  **(३) कर्ज - कृतज्ञभाव से नष्ट करो**
  **(४) दोष - सौम्यभाव से नष्ट करो**

  यदि इन चारों को नष्ट करने में देर हो गई तो भारी नुकसानी का

वहन करना पड सकता है। सावधान !

- आत्मा का **Checking** करो। **Daily diary maintain** करो।
- आज मेरे द्वारा कितने दोष दूर हुए और कितने गुण अपनाये गये ?
- संयम जीवन यानि रागद्वेष रहित जीवन। गोचरी जाते है तब गोचरी मिलती है तो संयमवृद्धि और नहीं मिलती तब तपोवृद्धि।
- **राग-द्वेष से हटते रहो,**
  **जीवन में सदा हँसते रहो।**
- ''क्लेशे वासित मन संसार, क्लेशरहित मन ते भवपार।''
  मन को स्वच्छ और स्थिर बनाओ।
- तन टेम्पल में होता है और मन चप्पल में होता है।
  तन व्याख्यान में होता है और मन दुकान के गुल्लक में होता है।
- **चार कार्य साथ करोगे : सामायिक + व्याख्यान + माला + नींद**
  **सब कुछ करोगे परंतु विपरीत करोगे तो कैसे कल्याण होगा ?**
- अच्छा है कि मन की तस्वीर नहीं बनती वरना घर में कोई रह भी नहीं पायेगा
  **रहने का सुंदर फ्लेट है, कपडा भी अप टु डेट है,**
  **सोनी का टीवी सेट है, मगर मानव अपसेट है।**
- **सामायिक करके अनेक बेटके मैले हो गये,**
  **नवकार गिनकर अनेक माला भी पुरानी हो गई,**
  **पूजा करके सुखड के टुकडे घिसे गये,**
  **परंतु इन सबके द्वारा अंतर के राग-द्वेष कितने साफ हुए ?**
  **यह कभी सोचा ?**
- उबलते पानी में प्रतिबिंब नहीं दिखता वैसे क्रोधी को अपना हित नहीं दिखता।
- सुवर्ण का पात्र भी गर्म हो तब किसीको देना नहीं चाहिये वैसे अच्छी बातें भी किसीको कर्कशता से नहीं कहनी चाहिये।
- मध्यस्थ सौम्यदृष्टिवाला जीव राग-द्वेष नहीं करता किन्तु हमेशा तीन

कार्य करता है।

**( १ ) दिल से क्षमा रखता है**

**( २ ) दिल से क्षमा माँगता है**

**( ३ ) दिल से क्षमा देता है**

- **Forget, Forgive & be a friend.**

  भूल जाओ, क्षमा दो और मित्र बनो।

**( १२ ) गुणानुरागी :- अन्य के गुण देखकर खुश होना।**

- गुणरागी मानव गुणवंतो को मान देता है। गुणरहित जनों की उपेक्षा करता है। गुणों का संग्रह करने में प्रवृत्त रहता है और प्राप्त गुणों को मलिन नहीं करता।

- अब तक दो ही कार्य किये है। **सुख की याद और दुःख की फरियाद**

  अब कुछ परिवर्तन करना है। **गुणों की याद और दोषों की फरियाद**

- गुणानुरागी का जीवन इस प्रकार होता है **:-**

  (१) आराधना की **भूख** हो और विराधना का **दुःख** हो।

  (२) आराधना की **आतुरता** हो और विराधना की **व्याकुलता** हो।

  (३) आराधना का **रटन** हो और विराधना का **रुदन** हो।

  (४) आराधना का **आनंद** हो और विराधना का **आक्रंद** हो।

- **Where there is a will, there is a way.**

**जहाँ चाह,**
**वहाँ राह**

**दिशा बदलने से दशा बदल जाती है,**

**दृष्टि बदलने से सृष्टि बदल जाती है।**

दोषानुरागी मिटकर गुणानुरागी बनने सर्वप्रथम हमारी दृष्टि को बदलना जरुरी है।

- दोषदृष्टि चील के जैसी है जो अन्य के दुर्गुणरुपी कचरे का ही संग्रह करती है।

गुणदृष्टि हंस के जैसी है जो अन्य के सद्‌गुणरुपी मोती का ही संग्रह करती है।

**'बूरा जो देखन में चला, बूरा न मिलिया कोय,**
**जो घट खोजुं आपणो, तो मुझ से बुरा न कोय'**

स्वयं के दोष देखो, पर के गुण देखो।

**भक्ति करो तो ऐसी करो, जो भक्ति प्रभु को रिझाये,**
**तु क्या प्रभु को मिलने जावे, प्रभु खुद तुझे मिलने आये।**

गुणानुरागी जीव प्रभु के गुणों में पागल बन जाता है।

- **Envy & Jealousy are roots of misery.**

  जलन और इर्ष्या दु:ख के मूल है।

**( १३ ) सत्कथा :-उत्तम बातें करना**

- अशुभ कथा के संग से कलुषित मनवाले का विवेकरत्न नष्ट होता है। धर्म तो विवेकरुपी सारप्रदायक है, अत: धर्म के अर्थी को शुभ कथा में ही प्रवृत्त रहना चाहिये।
- **खडे-खडे प्रतिक्रमण करते समय थकान लग जाती है और निंदा, बातें, विकथा, अन्य बातें करते समय तीन घंटे भी कैसे बीत जाते है उसका ख्याल भी नहीं रहता ! आश्चर्य है ना ?**
- व्यापार बहुत पर मुनाफा ही ना हो तो क्या काम का ?

  धर्मक्रिया अनेक पर निंदा ना जाये तो क्या फायदा ?
- **पानी की तरह जिनवाणी के भी तीन गुण है**

  (१) पानी प्यास बुझाता है- जिनवाणी विषयों की प्यास बुझाती है।

  (२) पानी संताप दूर करता है - जिनवाणी कषायों का ताप दूर करती है।

  (३) पानी मैल निकालता है - जिनवाणी कर्मो का मैल साफ करती है।
- कान में कोई तकलीफ पैदा हो उसके पूर्व ही सदुपयोग कर लो। जिनवाणी के रसीक बनो।

**तीन प्रकार की गुडीया**

**( १ ) पथ्थर की** – पानी का प्रवेश नहीं होता – भीतर में जिनवाणी का प्रवेश ही ना हो ।

**( २ ) वस्त्र की** – अल्प समय में ही सूख जाये – प्रवचन में भीग जाते है, बाहर निकलते ही सूख जाते है । सत्कथी जिनवाणी श्रवण करते ही आनंदविभोर हो जाता है क्योंकि जिनवाणी उसके जीवन में पानी के स्थान पर है । आहार के बिना चल सकता है किन्तु पानी के बिना नहीं ।

**( ३ ) शक्कर की** – पानी में मिल जाती है – दिन-रात जिनवाणी में ओतप्रोत हो ।

आपका नंबर किसमें है ?

गुरुदेव खास कहते है कि आप मात्र मिलने हेतु ना पधारो बल्कि हमारे साथ ओतप्रोत होने के लिये पधारो । सत्कथी शक्कर की गुडीया के जैसा होता है ।

- **Bad thoughts are worse enemies than lions & tigers.**

  सिंह या बाघ से भी ज्यादा अशुभ विचार दुश्मन है ।

**( १४ ) सुपक्षयुक्त :-अच्छा परिवार**

- जिसका परिवार अनुकूल, धार्मिक और सदाचार संपन्न हो वह सुपक्ष कहलाता है । यही पुरुष विघ्नरहित धर्मक्रिया कर सकता है ।
- धर्मकार्य में सहायक बननेवाला परिवार का होना आवश्यक है ।

  आज तो घरवाला उत्तर में जीता है तो घरवाली दक्षिण में !

**'चढते दिन पारखुं, नित आवे मेहमान**
**गिरते दिन पारखुं, घर न आवे श्वान'**

- उत्तम परिवार में यह तीन गुण होते है ।

  **( १ ) परमात्मा भक्ति** – किसी का भी वियोग सहन हो सकता है किन्तु प्रभु का वियोग सहन नहीं हो सकता ।

( २ ) **परलोकदृष्टा** – अभी उपार्जन करुँगा तो वृद्धावस्था में काम लग जायेगा वैसे इस लोक में किये गये सत्कार्यों का पुण्योपार्जन परलोक में काम लगेगा।

( ३ ) **परमपद का प्यासी** – प्रत्येक प्रवृत्ति परमपद की प्राप्ति हेतु होती है।

**तीन प्रकार के संबंध**

( १ ) **स्वार्थ संबंध** – परिवार से कुछ ना कुछ ग्रहण करने का ही लक्ष्य हो।

( २ ) **स्नेह संबंध** – परिवार से ग्रहण करने में भी रुचि हो और कुछ प्रदान करने में भी रुचि हो।

( ३ ) **समर्पण संबंध** – परिवार को कुछ प्रदान करने में ही रुचि हो। परिवार से कुछ ग्रहण करने की रुचि ना हो। जिसके पास यह समर्पण संबंध होता है उसका परिवार सुपक्षयुक्त बनकर रहता है।

– धर्म के बदले धन ही प्यारा है यह कलिकाल का परिवार

**'नोट बनाये वह पुत्र, नोट बचाये वह बाप,**
**नोट देख राजी हो वह माँ, नोट खर्चे वह बहु'**

– **United we stand & divided we fall.**

संगठन से हमारी उन्नति होती है और विभाजन से हमारी अवनति होती है।

( १५ ) **सुदीर्घदर्शी :-परिणाम सुंदर हो वह कार्य करनेवाला**

– दीर्घदृष्टिवाला पुरुष जो भी परिणाम सुंदर हो, जिसमें अत्यंत लाभ और अल्प प्रयास हो और अनेक जीवों से प्रशंसा करने के पात्र हो उन तमाम कार्य का आरंभ करता है।

– **A man is the architect of his own future.**

मानव स्वयं ही अपने भविष्य को बनानेवाला शिल्पी है।

– पुत्र के **Marriage** तय होते ही **Pre-plan** करते हो। आमंत्रण

कार्ड, **Hall, Party, Dress, Shopping, Jewellery** तमाम के लिये प्लान बनाते हो तो परलोक का क्या **प्लान** है ? कौन सी गति में जाना है ? दीर्घदर्शी यह सब सोचकर ही क्रिया करता है ।

– "यह जीवन जी लो, कल किसने देखा" इस प्रकार के विचारवाला नहीं बनता । **Eat, Drink and be Marry** – खाओ, पीओ और मौज करो... इस प्रकार मात्र वर्तमानसुख का भूखा ही नहीं बनता ।

– आत्मा के विकास हेतु जरुरी तीन गुण :

(१) **तन** – **नोर्मल** और **साधनामय** बनाओ ।

(२) **वचन** – **नेचरल** और **वात्सल्यमय** बनाओ ।

(३) **मन** – **निर्मल** और **भावनामय** बनाओ ।

– **As you think, so you become.**

जैसा आप सोचोगे, वैसे आप बनोगे ।

**तीन प्रकार के जीव**

**( १ ) संज्ञाप्रधान** – **भागोल** (गाँव की सीमा) तक नजर हो – **शरीरलक्षी** जीवन हो ।

**( २ ) प्रज्ञाप्रधान** – **भूगोल** (इस लोक) तक नजर हो – **बुद्धिलक्षी** जीवन हो ।

**( ३ ) आज्ञाप्रधान** – **खगोल** (परलोक, मोक्ष) तक नजर हो – **मोक्षलक्षी** जीवन हो ।

– **Learn from past, Live in present & plan for the future.**

भूतकाल से सिखो, वर्तमान में जीओ और भविष्य की योजना बनाओ ।

– वृद्धावस्था में तकलीफ ना हो इसलिए युवावस्था में ही आयोजन कर लेना चाहिये । यह समझनेवाला परलोक में दुर्गति प्राप्त ना हो इसलिए इस लोक में धर्म कर लेना चाहिये... यह क्यों नही समझता ?

– पूर्ण जीवन फरीयाद में ही व्यतीत हो गया : लाईट नहीं है, गेस नहीं

है, वर्षा नहीं है, नौकर नहीं है आदि... किन्तु जीवन में धर्म नहीं है यह फरीयाद कभी हुई ?

- **Simple living & high thinking.**

  जीवन सरल और विचार उच्च होने चाहिये ।

**( १६ ) विशेषज्ञ :-पक्षपातरहित बनकर पदार्थ को जाननेवाला**

- विशेषज्ञ पुरुष प्राय: पक्षपात ना रखकर वस्तु के गुणदोष को जानता है, अत: धर्म का अधिकारी बनता है ।
- विशेषज्ञ व्यक्ति जीवन में वह कार्य करता है जो जीवनपर्यंत याद रहे । वह जीवन को मात्र जीता नहीं बल्कि जीतकर भी दिखाता है ।
- विशेषज्ञ व्यक्ति किसी के साथ बैठता है, किसी के सर पर नहीं ।
- कई बार वसूली करने के बावजुद सामनेवाला व्यक्ति पाँच लाख रुपये नहीं देता तब विशेषज्ञ व्यक्ति अपने पूर्वभव के दोष को ही जिम्मेदार मानता है, सामनेवाले को दोष नहीं देता ।
- आत्मा - **Godown,** कर्म - **Stock** है ।

  **Export** करना है या **Import** करना है ?
- जब तक कर्म शांत है तब तक फायदा उठा लो, अन्यथा **Time Bomb** फटने पर कहीं दूर जा कर गिर जाओगे ।
- सुबह सामने होनेवाला व्यक्ति भी शाम को स्मशान में पहुँच जाता है ।
- **''इंट का जवाब पथ्थर से''** यह विचार हिटलर का था ।

  किसी भी हालत में प्रतिकार नहीं, स्वीकार । यह विचार महावीर का था ।
- पेट बिगड जाये वैसा खाना नहीं, मन बिगड जाये वैसा सोचना नहीं, जीवन बिगड जाये वैसा आचरण करना नहीं ।
- पुलिस शायद नहीं पकडेगी किन्तु कर्म कभी छोडेगा भी नहीं ।

  विशेषज्ञ कर्म **Theory** को भलिभाँति जानता है ।
- बाल्यकाल में माता-पिता का साथ, युवावस्था मे पत्नी का साथ, वृद्धावस्था में पुत्र का साथ, बिमारी में डोक्टर का साथ... यह तमाम

साथ बाह्य दृष्टि से भले ही महत्त्वपूर्ण हो किन्तु आंतरीक दृष्टि से सच्चा साथ मात्र परमात्मा का ही है। विशेषज्ञ की आंतरीक दृष्टि जागृत होती है और वह मात्र परमात्मा के साथ की कामना करता है।

**तीन प्रकार के जीव**

**( १ ) अधम - दु:ख का इन्कार करे - दुर्गति प्राप्त होती है।**

**( २ ) मध्यम - दु:ख का स्वीकार करे - सद्गति प्राप्त होती है।**

**( ३ ) उत्तम - दु:ख का सत्कार करे - परमगति प्राप्त होती है।**

- **One wrong step may give you a great fall.**

  मात्र एक गलत कदम भी महान पतन कर सकता है।

**( १७ ) वृद्धानुग :-वुद्ध पुरुषों का अनुसरण करना**

- वृद्ध मानव परिपक्व बुद्धिवान होते है। अत: वह पाप के आचरण में प्रवर्तमान नहीं होते। वैसे ही वृद्ध का अनुसरण करनेवाले भी उस प्रकार बन जाते है क्योंकि गुण संगति से प्राप्त होते है।
- ''**अनुभव महाज्ञान है**'' वृद्धात्मा ने अनेक दिवाली, सूकी-हरी देखी है। तो तमाम स्थिति में कैसे मार्ग निकालना है यह जानकारी उन्हें होती है। अत: उनकी **Care** करनी चाहिये और उनकी बातों को **follow** करना चाहिये।

**चार प्रकार के पुरुष**

(१) दर्पण जैसे - वृद्ध पुरुषो के वचनों का **As it is** उनके जीवन में **reflection** करते है।

(२) ध्वज जैसे - चल-विचल हो कि वृद्ध का वचन मानुँ या ना मानुँ ?

(३) स्तंभ जैसे - अक्कड-कदाग्रही हो

**सत्य है वह मेरा नहीं, मेरा है वह सत्य है**

(४) कंटक जैसे - वृद्ध सलाह देते है तो उन्हें ही कंटक की तरह दंश देते है, पीडा देते है।

- जिसे जीवन में विकास करना है उसको धर्म से अविरुद्ध वृद्धों की

बातों का अनुसरण करना चाहिये।

**'तपः श्रुतं धृतिः ध्यानं विवेको यम संयमी,**
**ये वृद्धास्तेषु वृद्धा न खलु पलिताकुरः'**

जो तप, श्रुत, धैर्य, ध्यान, विवेक, यम, संयम आदि गुणों में निपुण है वही वृद्ध के स्वरुप में मान्य है, किन्तु मात्र सफेद बाल धारण करनेवाले वृद्ध नहीं है।

- वृद्ध पुरुष अर्थात् अनमोल खजाना। उसका त्याग नहीं करना चाहिये बल्कि मन भरकर लूँटना चाहिये।
- वृद्ध पुरुष हमारे भले के लिये ही कुछ कहते है, तो हमें उनकी बातें कडवी क्यों लगती है ? यही समझ नहीं आ रहा।
- वृद्ध पुरुषों के पास भले ही अभ्यास ना हो किन्तु अनुभव तो अवश्य होता ही है। हमारे पास भले ही अभ्यास उत्तम हो किन्तु अनुभव कितना ?
- वृद्ध पुरुष पथप्रदर्शक के समान है। मार्ग में भटकनेवालों को पथप्रदर्शक मार्ग बताता है। संकट में फँसनेवाले युवाओं को वृद्ध पुरुष उत्तम सलाह दे कर मार्ग बताते है।
- **Obedience is the road to success.**

  बुझुर्गो की आज्ञा ही विजय प्राप्ति का मार्ग है।

**( १८ ) विनीत :-विनयवान हो**

- विनय सम्यग्ज्ञान, दर्शन आदि सर्वगुणों का मूल है और यही गुण मोक्ष का मूल है। अतः विनयवंत जीव भी धर्म के अधिकार में प्रशस्त है।
- विनीत का विकास होता है, अविनीत का विनाश होता है।
- **No argument but agreement.**
- देख क्या रहे हो ? जुड जाओ क्योंकि देखनेवाले देखते रह जाते है और करनेवाले जीत जाते है।
- जीवन को उत्तम बनाने हेतु तीन बातें **:-**

(१) **कम खाना** - मर्यादा में भोजन करना - तन तंदुरस्त रहना - अल्प

आहार करना

(२) **गम खाना** – अन्य का क्रोध सहन करना – वचन प्रशस्त रहना – शांत रहना

(३) **नम जाना** – बडे बुझुर्गो का विनय करना – मन मस्त रहना – झुक जाना

**'झूकता वही है जिसमें जान है,**
**अकडना तो मूर्दे की पहचान है '**

– **अभिमानी व्यक्ति फूल सकता है किन्तु इस दुनिया में फैल नहीं सकता**

**तीन प्रकार के पुरुष**

(१) **अधम** – सज्जन पुरुषों को भी नहीं झुकता

(२) **मध्यम** – स्वयं झुकता है और सामनेवाले को भी झुकाता है

(३) **उत्तम** – सामनेवाले को नहीं झुकाता बल्कि स्वयं सामने चलकर प्रत्यक्ष नमन करता है।

– **'बोली बोलो तो ऐसी बोलो, जो बोली हो रसीली,**
**मगर हम तो ऐसे बोलते है, जैसे रायफल में से नीकले गोली'**

विनीत व्यक्ति की बोली सदा रसीली, मधुर होती है जो सब का मन जीत लेती है।

– **Be kind, honest & humble.**

दयालु, ईमानदार और नम्र बनो।

– **Grace of Guru & Faith of disciple leads to Salvation.**

गुरु की कृपा और शिष्य की श्रद्धा मोक्ष तक ले जाती है।

**( १९ ) कृतज्ञ :-किसी के उपकार को जाननेवाला**

– कृतज्ञ मानव धर्मगुरु को ''यह मेरे उपकारी है।'' इस प्रकार तत्त्वबुद्धि से सम्मान देता है, फलतः उसके गुणों की वृद्धि होती है। इस कारण से कृतज्ञ आत्मा भी धर्म के योग्य है।

**न मे पर्वतभाराः न मे भाराः सुसागराः ।**

**कृतघ्नाः महाभाराः भाराः विश्वासघातकाः ॥**

धरती कहती है कि "मुझे पर्वतों और समंदरो का इतना भार नहीं लगता जितना भार कृतघ्नी और विश्वासघातीयों का लगता है।"

- **मातृभूमि, मातृभाषा और मातृसंस्कार कभी नहीं भूलने चाहिये ।**

**'भूलो भले बीजुं बधुं माँ-बाप ने भूलशो नहीं,**
**अगणित छे उपकार जेनां ए कदि विसरशो नहीं...'**

- बुझुर्गो की आज्ञा में **Argument** नहीं **Agreement** करो।
- माता बालक को खाना-पीना-बोलना सब शिक्षा देगी किन्तु यदि जीवन जीना नहीं सिखाया तो वह कृतज्ञ बनने के बदले कृतघ्न बन जायेगा।
- हमारे उपर सर्वाधिक तीन उपकार

(१) माता-पिता

(२) स्वामी-मालिक

(३) धर्मगुरु

- उमास्वाति महाराज ने प्रशमरति सूत्र में कहा है कि,

**दुष्प्रतिकारौ मातापितरौ स्वामी गुरुश्च लोकेस्मिन् ।**
**तत्र गुरुरिहामुत्र च, सुदुष्करतरप्रतीकारः ॥**

इस भव में तो माता-पिता, स्वामि और गुरु के उपकारों का बदला चुकाना असंभव है। विशेषरुप से इस भव और परभव में भी गुरु के उपकारों का बदला चुकाना तो महाकष्ट सहन करने के बावजुद असंभव है।

- शास्त्र में तो यहाँ तक कहा है कि, हमारे शरीर की चमडी निकालकर उसके जूते बनाकर पहनाने पर भी उनका ऋण नहीं चूका सकते। मात्र उन्हें धर्ममार्ग पर स्थापित करने से ही उनका ऋण पूर्ण हो सकता है।
- आप जो हालत आपके माता-पिता की कर रहे हो वही हालत

आपके पुत्र आपकी करेंगे, तैयार रहना।

- **घर में माता-पिता को चूप करते हो और मंदिर में जा कर धूप करते हो !**

  **घर में माता-पिता को छोड देते हो और बाहर जा कर अन्य को हाथ जोडते हो !**

  **आश्चर्य है ना ?**

- **Fridge, Furniture जगह नहीं छोडते और माता-पिता जगह रोकते है।**

  **माता-पिता की दवाई का बिल देखकर आँखे फट जाती है, जबकि आपके dress, जूते, Hotel का बिल देखकर ?**

  **फर्निचर के अनुसार बंगलो सेट नहीं किया जाता,**

  **बल्कि बंगले के अनुसार फर्निचर सेट करना पडता है।**

  **चाबी के अनुसार ताला सेट नहीं किया जाता,**

  **बल्कि ताले के अनुसार चाबी सेट करनी पडती है।**

  **चश्मे के अनुसार आँख सेट नहीं की जाती,**

  **बल्कि आँखों के अनुसार चश्मा सेट करना पडता है।**

  **वैसे आपके अनुसार माता-पिता सेट नहीं किये जाते,**

  **माता-पिता के अनुसार आपको सेट होना पडेगा।**

- **चार प्रकार के पुरुष**

(१) **अधमाधम** - स्वयं आमदनी प्राप्त करने लगता है तब तक बुझुर्गो को रखता है।

(२) **अधम** - पत्नी के आने तक रखता है।

(३) **मध्यम** - घर का कार्य कर सके तब तक रखता है।

(४) **उत्तम** - जीवनभर अपने पास रखता है और तीर्थ की भाँति सेवा करता है।

- अपकारी पर भी उपकार करे वह उत्तम,

  उपकारी पर भी अपकार करे वह अधम।

**( २० ) परहितकारी :-अन्य का हित करनेवाला**

- परहित में तत्पर रहनेवाला मनुष्य धन्य है क्योंकि वह सम्यग् प्रकार से धर्म का तत्त्व जानता है। उसका चित्त निःस्पृही रहने से और वह महासत्त्ववान होने से अन्य को भी धर्ममार्ग में स्थापित करता है।

**'शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरताः भवन्तु भूतगणाः ।**
**दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥**

सर्व जगत का कल्याण हो,
सर्व जीव परहित करने में तत्पर बनो,
सर्व दोषो नष्ट हो,
सर्व जीव सर्व स्थान में सुखी रहो।

- जो रखा वह राख, जो दिया वह अपना।

**सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।**
**सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाक् भवेत् ॥**

जगत के सर्व जीव सुखी रहो,
जगत के सर्व जीव रोगरहित रहो,
जगत के सर्व जीवों का कल्याण हो,
जगत का कोई भी जीव दुःखी ना रहो।

- कुछ जीव तिजोरी खोलकर, दर्शन करके खुश हो जाते है।
  लक्ष्मी को तिजोरी में भरने से नहीं, तिजोरी से बाहर निकालकर अन्य का भला करने से जीवन की सार्थकता होगी।
- जिनशासन में संपत्ति के दान से संतति का दान श्रेष्ठ है।
- चार प्रकार के मानव :-

  (१) **उत्तम** - अन्य को सुखी बनाकर आनंदित होनेवाले।

  (२) **मध्यम** - अन्य को सुखी देखकर आनंदित होनेवाले।

  (३) **अधम** - अन्य को दुःखी देखकर आनंदित होनेवाले।

  (४) **अधमाधम** - अन्य को दुःख बनाकर आनंदित होनेवाले।

  परहितकारी का नंबर उत्तम में ही होता है।

- "**समयं गोयम ! मा पमायए**" प्रभु वीर गौतम स्वामी के नाम ले कर हमें भी कह रहे है कि "एक समय का भी प्रमाद ना करो।"
- **दूध का सार मलाई है,**
  **जीवन का सार भलाई है।**
- **तरवर सरवर संतजन चोथा वरसे मेह,**
  **परमारथ ने कारणे चारो धरिया देह**
- हवा के बिना जिसे एक मिनिट भी नहीं चलता,
  पानी के बिना जिसे एक घंटे भी नहीं चलता,
  आहार के बिना जिसे एक दिन भी नहीं चलता,
  उसे परोपकार के बिना पूर्ण जीवन चलता है।
  है ना आश्चर्य ?

**'सर्वथा सौ सुखी थाओ, पाप ना कोई आचरो।**
**राग-द्वेषथी मुक्त थइने, मोक्ष सुख सहु जग वरो ॥**

- **Don't loose opportunity of doing a good action.**
  उत्तम कार्य करने के अवसर को गँवाओ मत।

**( २१ ) लब्ध लक्ष्य :-धर्मकार्य को सुखपूर्वक जान सके**

- लब्ध लक्ष्य पुरुष समग्र धर्मकार्य को सुखपूर्वक जान सकता है । अत: वह धर्मकार्य को शीघ्र करनेवाला, आसानी से समझाने लायक बनता है और शीघ्रता से शिक्षा का पारगामी बनता है।
- जीवन में **अनासक्ति का पक्ष** होना चाहिये और **अणाहारीपद का लक्ष** होना चाहिये । तैरने की कला सिखनी है तो पानी में कूदना पडेगा, गद्दी पर नहीं सिखा जाता।

**'वा फरे वादळ फरे, फरे नदीना पूर।**
**शूरा बोल्या ना फरे, भले पश्चिम ऊगे सूर ॥**

शायद सूर्य पश्चिम से उदय हो सकता है किन्तु जो शूरवीर है वंह अपने वचनों से पीछे नहीं हटता। लक्ष्य प्राप्त करके ही रहता है।

- चाहे कितनी भी बार, कहीं भी जाओ किन्तु अंत में लौटकर तो घर

ही आना पडता है। हमारा खुद का घर अर्थात् मोक्ष। घर जाना है या बाहर भटकना है ?

- यह तीन गुण जीवन में अपनाने से लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है।

  **( १ ) आराधना में लग जाओ।**

  **( २ ) पाप से भाग जाओ।**

  **( ३ ) जीवन में जागृत हो जाओ।**

- "**करेंगे या मरेंगे**" का लक्ष्य रखनेवाला जीत भी सकता है और हार भी सकता है।

  "**करके ही रहेंगे**" का लक्ष्य रखनेवाला अवश्य जीतकर ही रहता है।

  **अस्थिर मन के मानवी को रास्ता कभी मिलता नहीं,**
  **अविचल मन के मानवी को हिमालय भी रोकता नहीं।**

- **The ultimate goal is to achieve the salvation.**

  आत्मा का अंतिम ध्येय मोक्ष प्राप्ति का है।

- संपत्ति को तिजोरी में सुरक्षित रख सकते है परंतु समय को नहीं। अतः प्राप्त हुए समय का सदुपयोग करके लक्ष्य प्राप्त करो।

- **Time and tide wait for none.**

  समय और भरतीप्रवाह कभी किसी की प्रतिक्षा नहीं करते।

श्री कलापूर्णसूरि सद्गुरुभ्यो नमः

# सूरिमंत्र समाराधक पू. आचार्य श्रीमद् विजय पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

## द्वारा लिखित तथा संपादित पुस्तको

| | |
|---|---|
| १. सुविचार माधुरी | - गुजराती |
| २. दिव्य रोशनी | - हिन्दी |
| ३. चले उजाले की ओर | - हिन्दी |
| ४. मधुर वाणी | - गुजराती |
| ५. स्वाध्याय प्रकाश | - प्रकरण ग्रन्थ |
| ६. जैन काव्य प्रवेश | - गुजराती |
| ७. सिद्ध हैमानुशासनात्रिकम् | - संस्कृत व्याकरण सूत्रो आदि |
| ८. जनता जागे | - हिन्दी |
| ९. करुणानिधान भगवान महावीर | - गुजराती (सचित्र) |
| १०. करुणानिधान भगवान महावीर | - हिन्दी (सचित्र) |
| ११. Compassiponate Bhagavan Mahavir | - English (सचित्र) |
| १२. मेघकुमार की आत्मकथा | - हिन्दी (सचित्र) |
| १३. भगवान नेमिनाथ | - हिन्दी (सचित्र) |
| १४. फूल खीले तो खुश्बु मिले | - हिन्दी |
| १५. समर्पण सुधा | - हिन्दी (स्तुति, स्तवन, सज्झाय आदि) |
| १६. अध्यात्म रोशनी | - गुजराती (संकलित) |
| १७. संस्कृतिनो संदेश | - गुजराती |
| १८. सुवाक्य शायरी सरिता | - हिन्दी |
| १९. आत्म तत्वनो अमृत आस्वाद | |
| २०. प्रकृतिनी प्रेरणा | |
| २१. चालो भक्ति करीअे | - गुजराती |
| २२. संस्कार रोशनी | - गुजराती |
| २३. कथा हरे व्यथा | - गुजराती |
| २४. जीवन बने महान | - गुजराती |
| २५. दिलना दरियामांथी | - गुजराती |
| २६. व्याख्यान साहित्य संग्रह | - संस्कृत, गुजराती |
| २७. संस्कार रोशनी | - हिन्दी |
| २८. विचार सृष्टिनुं सौंदर्य | - गुजराती |
| २९. उठ जाग मुसाफिर | - गुजराती |
| ३०. प्रकृतिनी प्रेरणा | - गुजराती |
| ३१. कलापूर्णसूरि प्रवचनधारा | - हिन्दी |
| ३२. अध्यात्मयोगीनी अमृतवाणी | - गुजराती |
| ३३. कलापूर्णसूरि अनुभववाणी | - गुजराती |
| ३४. जैन मार्गदर्शिका | - गुजराती |
| ३५. नियम सौरभ | - गुजराती |
| ३६. कलापूर्ण कृपांजलि (स्मृतिग्रंथ) | - हिन्दी |
| ३७. जीत हीर कनकम् | - गुजराती |
| ३८. वात्सल्य मूर्ति कनकसूरि दादा | - गुजराती |
| ३९. कच्छवागड समुदाय जीवन ज्योत | - गुजराती |
| ४०. कच्छवागड समुदाय दर्शन | |
| ४१. कच्छवागड समुदाय दर्शिका | |
| ४२. समाधि सोपान | |
| ४३. अध्यात्मकल्पद्रुम, प्रशमरति सार्थ विगेरे | - संस्कृत, गुजराती |
| ४४. योगशतक, योगसार तथा धर्मरत्न प्रकरण सार्थ | - संस्कृत, गुजराती |
| ४५. स्तवन विगेरेनी पुस्तिकाओ | |
| ४६-४७. प्रवचन अंजन | - गुजराती, हिन्दी |

# समेतशिखरजी महातीर्थे

(वि.सं.2072, इ.स.2016)

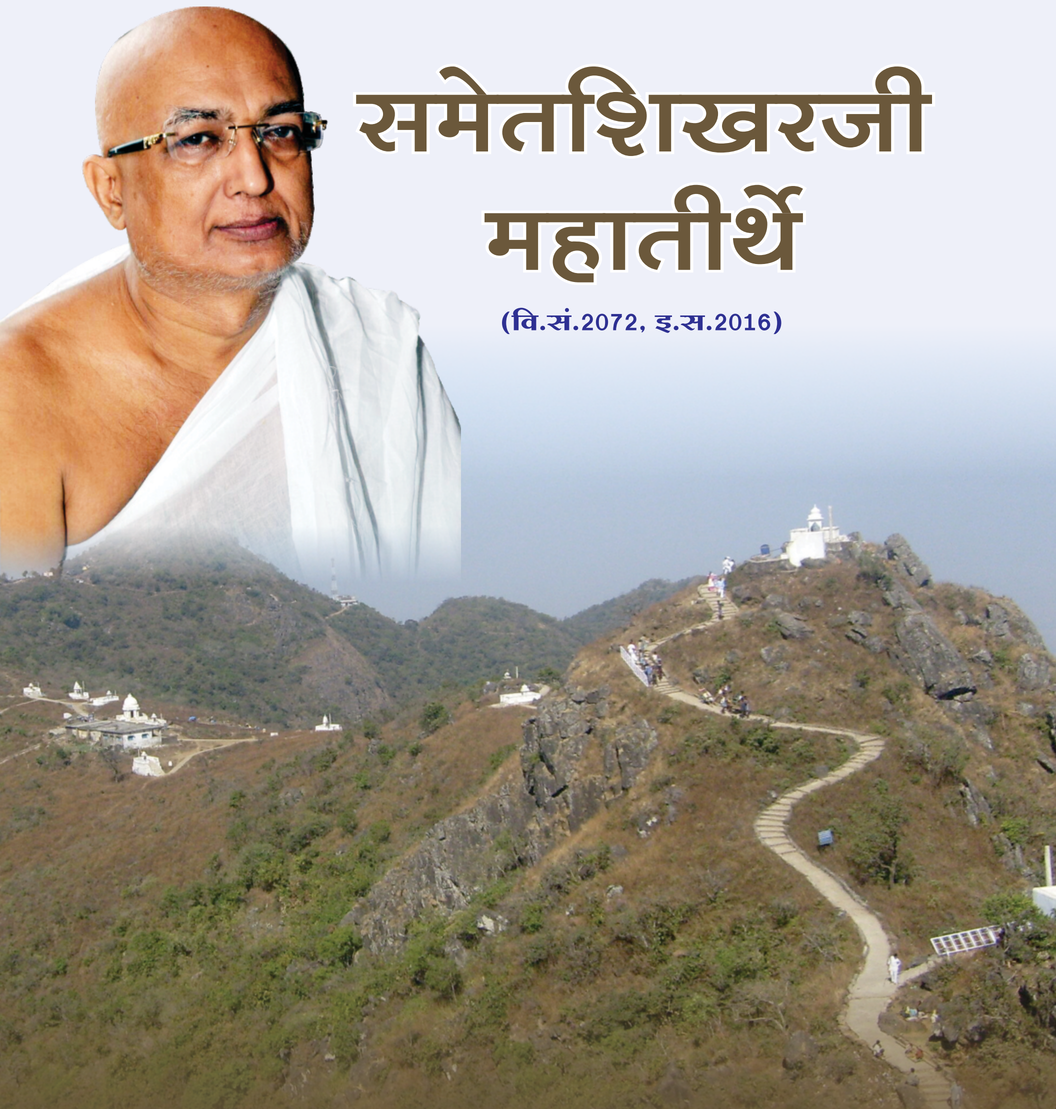

700 आराधकों के सामूहिक चातुर्मास दौरान
प्रवचन प्रभावक
प.पू.आ.श्री पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा
दीये गये अद्भुत प्रवचनो का संग्रह यानी

## प्रवचन अंजन

vitraag graphics 8980007872 Ahmedabad